

NOT FOR SALE

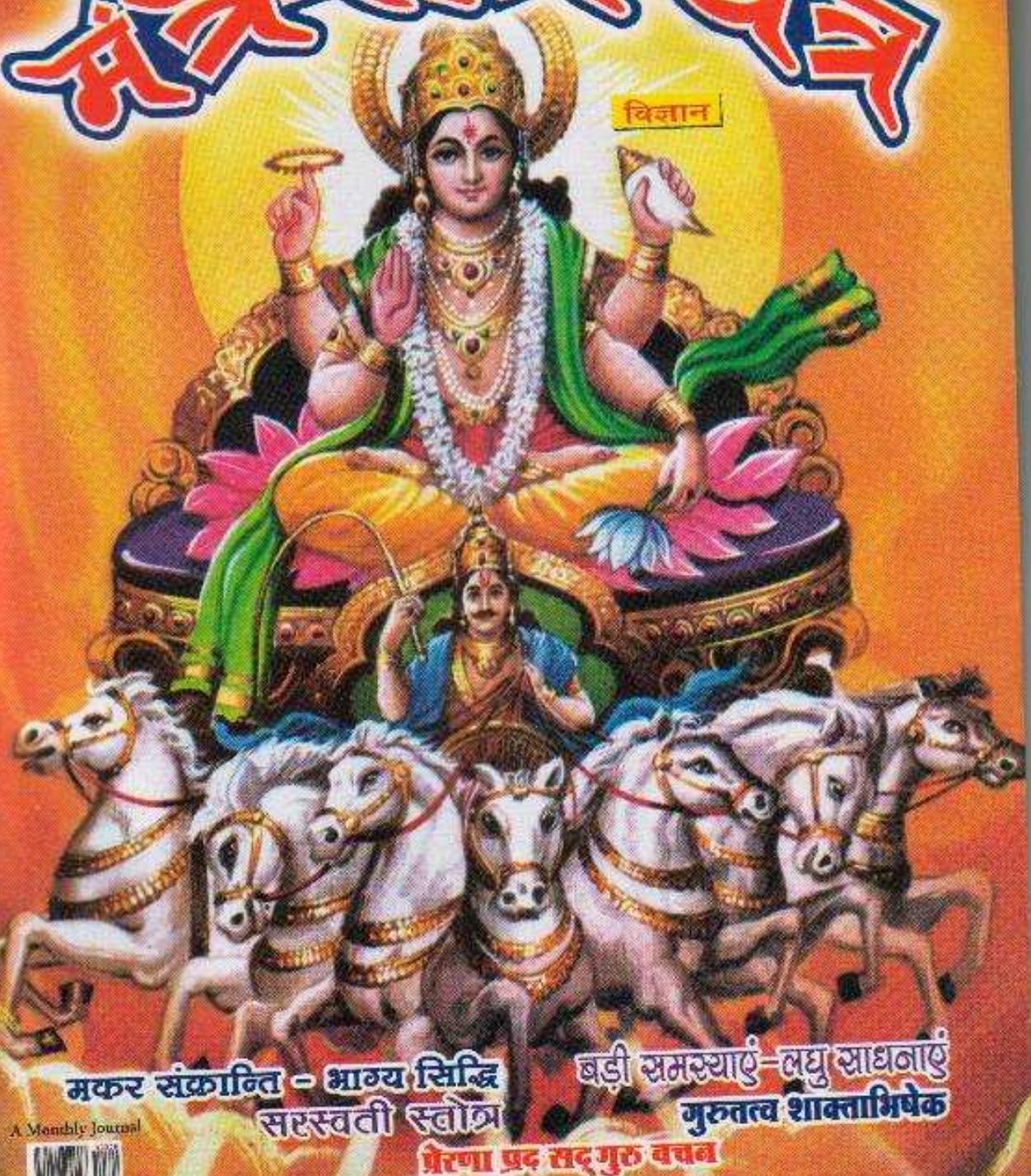
सद्गुरु प्रेतणा सिद्धि विशेषांक

दिसम्बर - 2002

मूल्य : 18/-

संत-तंत्र-यंत्र

विज्ञान



मकर संकान्ति - आन्य सिद्धि
सरस्वती स्तोत्र

बड़ी समस्याएँ-लघु साधनाएँ
गुरुतत्व शाक्ताभिषेक

प्रेतणा प्रद सद्गुरु वचन

A Monthly Journal





COLLECTION OF VARIOUS

- > HINDUISM SCRIPTURES
- > HINDU COMICS
- > AYURVEDA
- > MAGZINES

FIND ALL AT [HTTPS://DSC.GG/DHARMA](https://dsc.gg/dharma)

Made with
By

Avinash/Shashi

Icreator of
hinduism
server!

आगे भावः ऋत्यो यन्तु देशवतः
गानव जीवन की सर्वोन्मुखी उचिति प्राप्ति और भारतीय मूल विद्वाओं ते समन्वित नहिं बतौरा

श्रीव्यव्याख्याश्रम

॥ ॐ परम तत्त्वाय ब्राह्मणाय गुरुभ्या दमः ॥



सद गुरुदेव

सदगुरु प्रवचन 5

गुरु वाणी 44

स्तम्भ

शिष्य धर्म 43

नक्षत्रों की वाणी 60

मैं समय हूँ 62

बराहामहार 63

जीवन सरिता 66

इस मास किलो में 80

एक दृष्टि में 86

साधना

मकर सकान्ति साधना 25

हनुमान साधना 30

सिंह महानक्षत्री साधना 40

त्वरिता साधना 42

अष्टभूजा काली साधना 57

प्रसन्न लक्ष्मी साधना 58

महागोरी साधना 59

वाताली साधना 72

Jain Tantra 82

Vancha Kalp lata 84

Hanuman Sadhana 85

प्रेरक प्रसंग

दुर्घां का नोड़ 39

भय ही मृत्यु है 41

भगवान कहां 46

साधना क्या है? 51

परमात्मा स्वरूप 52

स्वयं की सीधा 55



स्वास्थ्य

स्वास्थ्य स्वर्णिम सूत्र 64

वह सिंह परम यिदि 68

विशेष

शक्त तत्त्वाभिवेक दीक्षा 47



स्तोत्र

सरसवती स्तोत्र 76

:: सम्पर्क ::



प्रबोधक एवं स्वामित्व
श्री केलाश चन्द्र श्रीमाली

दिव्य

निष्ठा आदि विनाशक

C-178, नारायण इंडिस्ट्रीजल

परिया केस्ट 8, नह विल्सन

रो मुहित नदा

मंत्र-तंत्र-यंत्र विज्ञान

लाईकोट कालोनी, जोधपुर ने

प्रकाशित।

मूल्य (भारत में)

एक प्रति : 18/-

वार्षिक : 195/-

शिद्धाश्रम, 308 योहाट एक्सप्रेस, जीलनपुरा, डिल्ली-110034, फोन: 011-7182248, टेली फोन: 011-7198700
गंत-तंत्र-यंत्र विज्ञान, ३० श्रीमाली नगर, सौंदर्य नगरी, जोधपुर 342001 (राज.) फोन: 0291-432226, फॉक्स: 0291-432010

WWW address - <http://www.siddhashram.org> E-mail add. - mtyv@siddhashram.org

नियम

पविकर में प्रकाशित सभी रचनाओं का उत्पादकर पविकर कहते हैं। इस 'मंड-तंत्र यज्ञ विज्ञान' पविकर में प्रकाशित लेखों से सम्बन्धित का सदस्यत होना अनिवार्य नहीं है। तत्काल करने वाले प्रटक विकर में प्रकाशित पूरी सम्पादनों को गलव समझें। किसी नाम, स्थान या पटना का किसी से कोई सम्बन्ध नहीं है, यदि कोई घटना, नाय का तथा यिन जाति, तो उसे समझ समझें। पविकर के लेखक प्रपुलकड़ राधा सति दिते हैं, अतः उनके पते वे यारे में कुछ भी अन्य जनकारी देना सम्भव नहीं होगा। पविकर में प्रकाशित किसी भी लेख का सामग्री के बारे में यद्य-विद्याद या तर्क मान्य नहीं होगा और न की इसके लिए लेखक, प्रकाशक, सुनक या सम्बद्धक जिम्मेदार होगे। किसी भी सम्पादक को किसी भी प्रकाश का पारीश्चिक नहीं दिया जाना। किसी भी प्रकाश के बाद-विद्याद में जोधपुर न्यायालय ही मान्य होगा। पविकर में प्रकाशित किसी भी सामग्री को सामग्री या याटक कही तो भी ग्राह कर सकते हैं। पविकर काव्यालय से प्राप्ताने पर सम अपनी तरफ से प्राप्तानक और तात्पुरी अध्यात्म नंबर भेजते हैं, पर किर भी उसके बाद में, असली या नकली के बारे में अन्य व्याख्या ज्ञाने या न ज्ञाने के बारे में उम्मीद जिम्मेदारी नहीं होती। पाठक अपने विषयात पर छोटी ऐसी सामग्री पविकर काव्यालय से बण्डावें, सामग्री के मूल्य पर तर्क या यद्य-विद्याद मान्य नहीं होगा। पविकर का वार्षिक मुक्त वर्णन में ₹८८५/- है, पर यदि किसी जिम्मेदार एवं अपरिचित कारणों से पविकर को बेमसिक या बंद करना पड़े, तो जितने भी अब आपको प्राप्त हो चुके हैं, उसी में वार्षिक सवारकारा अध्यक्ष द्वारा वर्ष तीन वर्ष या पविकरीय सदस्यता को पूर्ण सामाजि. इसमें किसी भी प्रकाश की आपानी या आलोचना किसी भी रूप में रखी जाना नहीं होगा। पविकर ने प्रकाशित किसी भी सामग्री में सफलता असफलता, हासि-लाख की जिम्मेदारी सामग्री की स्वयं की लेखी तथा सामग्री कोई भी ऐसी उपासना, जप या संबंधितों न करें, जो भौतिक, सामाजिक एवं कानूनी नियमों के विपरीत हों। पविकर में प्रकाशित लेखों के लेखक योरी या सम्बादी लेखकों के विचार यात्रा होते हैं, उन पर भाषा का आवारण पविकर के कामध्यायों की तरफ से होता है। पाठक योरी भाषा पर इस अंक में पविकर को पिछले लेखों का भी ज्यों का ज्यों समावेश किया जाता है, जिससे कि नवीन पाठक लाभ उठा सके। साथक या लेखक अपने प्रामाणिक अनुभवों के अध्ययन पर जो संक्षेप तथा या क्रम ('भले ही वे शास्त्राद्य व्याख्या के इनर हो) ज्ञानते हैं वे दो दोहरे हैं, अतः इस सम्बन्ध में आलोचना करना व्यवहृत है। आवारण पूर्व पर या अन्दर जो भी फोटो प्रकाशित होते हैं, इस सम्बन्ध में सारों जिम्मेदारी फोटो के नाम प्रोटोकॉल अध्ययन आवेदन की होती। दीशा प्राप्त करने का तात्पर्य यह नहीं है, कि साथक उससे सम्बन्धित लाभ तुरन्ना प्राप्त कर सके, यह तो बीमों और सतत प्रक्रिया है, असा पूर्ण अनुदान और विद्यालय के साथ ही दीशा प्राप्त करे। इस सम्बन्ध में किसी प्रकाश की कोई भी आवश्यकीय आलोचना स्वीकार्य नहीं होती। गुरुनेत्र या पविकर प्रोटोकॉल इस सम्बन्ध में किसी भी प्रकाश की जिम्मेदारी वहन नहीं करते।

प्रार्थना

वाणी गुणानुकथने श्रवणी कथायां
हस्ती च कर्मसु मनस्तव पादयोर्नः।
स्मृत्या शिरस्तव विवासनगतप्रणामे-
दृष्टिः सतां दशनेऽस्तु भ्रवत्तनूनाम्॥

प्रगति। मेरी बाणी आपके गुण की तरफ में लगी रहे। मेरे कन आपकी लीलाकथा सूनमे में भंगम रहे। मेरे हाथ आपकी जिम्मेदारी के कार्य में और मन आपके चरणों के भिन्नत ने तन्पर रहे। मेरा मरनक आपके निवासमृत जगत् को नमस्कार करने के लिए बुजा रहे और मेरी आंखें आपके स्वरूपमूल भंगजनों के दर्शन में निरत रहे।

★ मौन का महत्व ★

जब महाभारत का अतिम इतीक महाविं वेदव्याप्त के गुरुसार्वत्र भे नि-सूत होकर गणेश जी के सुपाठ्य अक्षरों में भोजपत्र पर अंकित हो चुका, तब गणेश जी से महाविं ने कहा 'विद्योऽवर, धन्व है आपकी लेखनी! महाभारत का सूजनतो वस्तुत, आपने किया है। परंतु एक वस्तु आपकी लेखनी से भी अधिक विसर्यकारी है और वह है आपका मौन। सुदीर्घ काल तक आपका हमारा साथ रहा। इन अवधियों में मैंने तो पढ़ह योस लाख शब्द लिखा डाले, परंतु आपके मुख से मैंने एक भी शब्द नहीं सुना।'

इस पर गणेश जी ने मीन की व्याख्या करते हुए कहा 'बादरायण जी! किसी हीपक में अधिक तेल होता है, किसी में कम, परंतु तेल का अक्षय भंडार किसी दीपक में नहीं होता। उसी प्रकार देव, मानव, दानव आदि जितने भी तनुधारी हैं, सबकी प्राण-शक्ति सामित है। किसी की कम है, किसी की कुछ अधिक, परंतु असीम किसी की नहीं। इस प्राण-शक्ति का पूर्णतम लाभ वही पा सकता है, जो संयम से उसका उपयोग करता है। संयम ही सम्पत्ति सिद्धियों का आधार है, और संयम का प्रथाम सोपान है- वाचोगुहि अर्थात् वाक्संयम। जो बाणी का संयम नहीं रखता, उसकी जिहा बोलती रहती है। बहुत बोलने वाली जिहा अनावश्यक बोलती रहती है, और अनावश्यक गङ्गा विश्व एवं वैमनस्य उत्पन्न करते हैं, जो डमारी प्राण-शक्ति को सोख लेते हैं।' यह है मीन का महत्व।



स्वेच्छा द्वारा संभव नहीं
तो किसी भी फैसले

जीवन में कर्म क्या है और वास्तविक जीवन किसे कहते हैं, मन्दास का वास्तविक तात्पर्य क्या है, जीवन में निरन्तर भव को समाप्त कर उन्मुक्त किया प्रबल रहा जा सकता है जिससे जीवन में विजय प्राप्त हो तथा निरन्तर नवर्ष करने की शक्ति आ सके। इस संवर्ग में सद्गुरुदेव की ओजस्वि बाणी में उन्होंकी विशिष्ट शैली में यह महत्वपूर्ण प्रवचन-

श्री कृष्णोपनिषद से मैं आमी बात प्राप्त कर रहा हूँ। वेद व्यास ने उन उपनिषदों का संग्रह किया, संकलन किया। उन्होंमें से एक श्री कृष्णोपनिषद का यह श्लोक है-

पूर्ण सदैव विजयं च वेवं
देव्यो सदा जान मृतं वदेव
मृतवत्स पुत्रं भवता च तुल्यं
विजयं सर्वेवं श्रवतां श्री देवः।

वेद व्यास ने इस श्लोक में यह बात कही है कि मनुष्य का अर्थ है मृत या मरा हुआ जिवा के बल इन्हें डे कि वह सांस ने रहा है। और यह सांस समझ ले जाता है तो शरीर के सारे अंग प्रत्यंग तो उसके होते हैं, मगर किरणों वह मृत कहलाता है। हाथ, पांव, आँख, नाक, फौन, उनमें कठीं कोई दृढ़ नहीं आती मगर किरण भी वह मृत कहलाता है। और जीवन इन्हें कहलाता है कि सांस लेने की क्रिया उसमें है। और सांस लेना भी है और तीन कार्य करता है, सांस लेना है, धारण करना है और छोड़ता है।

और वेद व्यास ने मनुष्य को मृत बतो कहा? क्या सांस लेने

या नहीं लेने में ही व्याप्ति नीलित या मृत हो जाता है?

वास्तव में मृत व्यक्ति वही है जिसमें हैमला नहीं है, साहस नहीं है, समता नहीं है, और संकटों से मुक्तबला करने की क्षमता नहीं है। ऐसे लोग मृत हैं, मनुष्य तो हैं, गिरा भी हैं, घुसने फिरते भी हैं, मगर उसके बाद भी नहीं हुए ये हैं, इन्हाल यि उनमें प्रत्यक्ष नीरसता है उनमें ज्ञेय नवानता नहीं है जोड़ नयापन नहीं है, कोई जीना नहीं है, कोई प्रबुद्धता नहीं है।

और यहि जीवन में संकटनयोह, वाधाएँ नहीं हैं, भवधन नहीं है, कठिनाइयों नहीं हैं तो मनुष्य जीवन ही ही नहीं भवता। मनुष्य जीवन उसको कहते हैं कि हर पर एवं सम्पर्क जोड़, कठिनाइयों जाएँ और उन पर विजय प्राप्त करें। यह जीवन मनुष्य रह सकता है जो उसकर पाता है।

और विज्ञान इस बात को स्वीकार करता है कि मिलने नंदिप किया जो नेपर्वेशील व्यक्ति है या जामवर है या जीव है व

हो जीवित रहे। जिसमें संघर्ष करने की समस्याओं से जूझने की क्षमता समाप्त हो गई वे मर जाए। अभी कछु समय पहले बीच में आपने बहुत ही हल्का सुना होगा कि दायनासार होता था जो संसार का चबैरे लबा चौड़ा प्राणी था, मात्रमच्छु, दायी या वेन मछली तो उसके सामने एकदम तुच्छ प्राणी थे और उसी एक जिलम भी बनी थी दायनासर पर। आज से हजारों साल पहले आखरी दायनासर की मृत्यु ही गई और एक का भी अन्तिम नहीं रहा, एक भी दायनासर जीवित नहीं रहा।

क्यों नहीं रहा?

उतना बड़ा लंबा-चौड़ा प्राणी तुम्हारे जैसे कम से कम पांच सौ जावनी उसके मुँह में आ राके वह जीवित नहीं रहा और आप जीवित हैं, इसका क्या कारण था? वह क्यों नहीं जीवित रहा?

और आपको मालूम होना चाहिए कि आज से तीन हजार साल पहले भी मेढ़क था, और आज भी जीवित है। सबसे पुराने जो जीव है बैबल द्वारा हो जीवित है। सबसे पुराने सालों से हमारे बीच है - एक तो काकरोंव और एक नेटुक। वाकी सब जातियां थीं - धार-नष्ट होती गई, अदलती गई या परिवर्तित होती गई। पर, उन दोनों में कछु परिवर्तन नहीं आया और दोनों आज भी वही हैं जो आज से तीस हजार साल पहले थे। तीव्र हजार साल बहुत बहुत उम्र है, और तीव्र हजार वर्षों से वे जीवित हैं। ऐसा क्यों है?

ऐसा दध्यलिद है कि वे प्रत्येक परिवर्तियां में जीवित रहने की क्षमता रखते हैं। आपने लेखा होगा कि बरसात में मेढ़क पानी में तैरते हैं, जावान कलते हैं और जब नमाज हो जाती है बरसात तो किसी खोखले परख में यह मेढ़क खस्त जाता है और उसके ऊपर एक घरत आ जाती है, जागु की घरत हो या ऐन की घरत हो।

यदि आप भी वार्षिक बाहर बेठ जाएं तो आपके ऊपर ऐत की परत वह जाएगी

और यदि आप नफेद कुत्ता पहन कर चांदनी चौक में निकल जाएं तो आपके ऊपर एक धूरी की, रेत की परत आ जाएगी और कुत्ता काला हो जाएगा। और चार बिन तक चलेंगे तो आपके ऊपर मैल की परत चढ़ जाएगी। और यह बिन आप रनात नहीं करें तो आपके शरीर पर मैल हटना चढ़ जाएगा कि जाप को चार बार साथुन लगाना पड़ेगा।

आपने खुद चढ़ाया नहीं उस मैल को, मगर मैल चढ़ा, कपड़ों पर भी चढ़ा। मैठक छः महीन उस पत्थर में रहते हैं और बाहर से उनको आकस्मीतन पिलानी ही नहीं। उसके बाद भी वे जीवित रहते हैं। तो जो जीव छः महीन बिना आकस्मीतन के रह सकता है वह मर नहीं सकता, क्योंकि उसमें संघर्ष करने की क्षमता है, एक पावर है, एक ताकत है। वह इन्हसाम करता है कि जीवन में एक संघर्ष है कठिनाई है, और कठिनाई होने वाले भी वह जीवित रहने की एक शक्ति और ताकत रखता है। इसलिए मैठक जीवित है इसलिए काकरोच जीवित है। इसलिए ऊट जीवित है कि वह तो स्त्रियों तक बिन पहनी के जीवित रह सकता है, इस और तुम नहीं रह सकते। बिन पहनी के वह तीस दिन चल सकता है, मरुस्थल में, रेगिस्तान में। यह नेबल एक छोटा सा उदाहरण है, मगर यह छोटा उदाहरण इसलिए वे रहा है कि आप भवित्व सके कि बिन वहीं ब्यक्ति रहता है जिसमें संघर्ष करने की पूर्ण क्षमता हो, और संघर्ष वह कर सकता है जिसके सामने समर्पण आए।

समस्याएं आएँगी ही नहीं तो संघर्ष करेगा भी क्या? किससे संघर्ष अभ्यास किया जाए? वरवाचों से? परवरों से? वह संघर्ष होना ही नहीं। और यांसे पहनी के बीच संघर्ष नहीं होता। भत्तेव दोनों हैं। आप भत्तेव को लड़ाइ जाना होता है, मैं कहता हूँ भत्तेव है।

वह कड़नी कि मैं पहाड़ा पर फिल्म देखने जाऊँगी आप कहते हैं नहीं रियोलो पर एवंतर देखने जाएंगे। लड़ाइ जाना कोई नहीं है, यह एक एक अलग बान नहीं है आप एक अलग बात कहते हैं। और यह

एक नवरात्र है आपके जीवन की इच्छियां पर में एक टकराव की एक ननाब की लिखत है। वह आपका संघर्ष नहीं है। आपका संघर्ष पुत्र से भी नहीं है। आपका संघर्ष पत्नी से भी नहीं है और आपका संघर्ष बुद्ध से भी नहीं है। हमलिंग ब्राम समस्त हो जाते हैं थोर-थोरे क्षयोंकि कोई अंधर्व नहीं है।

जौर द्वारे अधि दो रो साल, तीन यी भाल जीवित रहे वह हमने मूना और यदि आप उस साधनात्मक लेवल पर हैं तो आप देख सकते हैं कि पाच यी साल, हमल सान के वृद्धि दोगो आज भी जीवित हैं और हमनो आयु लिए द्यु द्यु हैं। और हम केवल साठ साल या सत्तर साल जीवित रह पाने हैं।

ऐसा क्यों हो रहा है कि हम साठ साल की आयु में ही मर जाते हैं। सत्तर साल के बोकर मर जाते हैं, बहुत गुड़िकल से शिन कर के अस्ती साल के बो चार व्यक्ति आप मुझे दिल्ली में दिखा पाएंगे। सो साल किसी के जीते हैं तो भारत सरकार उग्रका अभिनवन करता है तिनक करता है गुलजारी जात नदा का कि तुमने भीवा साल शुल्क कर दिया।

त्या भौवा साल प्राप्त करना बहुत बड़ी प्रठना है? मैंछक ने मो साठ हमार साल आयु ग्राम कर ली।

आन व्यक्ति सो साल भी उम प्राप्त नहीं कर पाता, व्यक्ति उसलिए दूर जाता है क्योंकि उसके सामने संघर्ष है हो नहीं और संघर्ष नहीं है तो व्यक्ति का जीवन एक रस हो जाता है, और जहाँ एक रस हो वहाँ मृत्यु है। आज सुबह उठे, ज्ञान किया, ऐट पहनी, कुनी पहना, नाशा किया, ठिन्नन हथ में लिया और अग्निस चने गए, विर आक्षिस से वापल आए, पत्नी को भी सुनी, शो बाते पत्नी को सुनाई छाना रखाया और सो गए। तीव्र दिन महोने के गेस हो होता है। एक संदे के अलावा ऐसा ही होता है। यस संदे को कहते हैं आज संडे है आठ बजे अखबार पढ़ते हैं और पड़े रहने हैं, बैद टो भी जाने हैं। अगला चेहरे भी बैसा ही होता है।

जीवन में कोई ग्राज्जन आई कोई समर्प्या आई, कोई तनाव आया, कुछ ऐसी उन्निवेता आई कि कल क्या होना या एक धीर बद न क्या होगा किसी ने तलवार लेकर आपके सिर पर रखी? कोई बद्रक की गोली लेकर आपके सामने खड़ा हुआ?

हुआ ही नहीं, आप बस बचते रहे। बचना आप का जीने है। फूकना सन्ताव यह नहीं, कि आप ए.के. द्वितीय सामने खड़े हो जाएं कि गुणजी ने कहा है संघर्ष बरना। कार यहि कोई रामने खड़ा हो जए तो आपने यह बासा हाँनी चाहिये कि आप इसे धक्का देकर उसके थीने पर खड़े हो सको। इसी ताकत आपमें होनी चाहिए, और वह



ताकत तब ना सकती है जब आप मेरे आमदाल हो। यदि आपने बल नहीं है तो आप जीवन मेरे सफलता प्राप्त नहीं कर सकते। और ज्योहि कोई गोली चली आप मर जाएगो। और यदि आमदाल है तो आप खुए होकर उसे एक लात मारेंगे उसकी प. के. ४७९ राइफल एक तरफ विसर्गी और वह एक तरफ गिरेगा। आप उसकी छाती पर बैठकर सफलता प्राप्त कर लें।

दोनों स्थितियाँ आपके सामने हैं। प्रथेक व्यक्ति भयभीत है, जब सम्मार मेरे पास होता है, उस दृष्टि से लगाकर मृत्यु तक उसके जीवन में और कुछ नहीं होना बस भय होता है, और वह 'मय पीछा करते हैं' आप और कोई दूर से नहीं करता। मग आप भय पेश करते हैं उसके मन मेरे कि बाहर मत जाना सड़क पर एक्सीटेंट हो जाएगा। और स्कूल से सीधे दो बंगे घर आ जाना नहीं तो कुछ ही जाएगा, और यह तुमते खाना इससे तकलीफ ही जाएगी और उसको हर दृष्टि हम कोसने रहते हैं कि तुम्हें यह नहीं करना है, तुम्हें यह नहीं करना है, ऐसा करने से तकलीफ ही जाएगी, ऐसा करने से यह ही जाएगा, ऐसा करने से यह ही जाएगा। और हमने उसे भाव के अलावा कुछ भी नहीं क्योंकि हम खुद भी भय से पेश हुए हैं और हमने उनको भय दिया और मय दिया इसलिए व्यक्ति कानवर बन, बुजिल बना। हम अपने लड़कों को ताकतवान नहीं बना सके, साहसवान नहीं बन सके।

कोई अस्सी किसी का आवश्यक ही ताकतवान नहीं बनता, गोयी जी से व्यालिय किसी के ही थे भैरव और आप और हम से बहुत ज्यादा ताकतवान थे, अंगे जो से लोहा लिया, एक गंधर्व जिया लाखों लोगों से और उनकी वाणी में इनमी ताकत थी कि हजारों लोग मूली पर चढ़ गए, फांसी पर चढ़ गए, गोनियो खा गए। आपके अड्डे से एक व्यक्ति भी गोली नहीं खाएगा। आपके कहने से एक व्यक्ति भी संघर्ष नहीं करेगा। आपके बहन से एक व्यक्ति भी कानेन छोड़ जरूर मृदक कर नहीं उतरेगा। आपके कहने से एक व्यक्ति भी शास्त्री पत्नी को छोड़ कर जेल मे नहीं जाएगा।

आपने और उस आदमी मेरे ऐसा

डिफरेंस क्या था? यह तो अभी की पटना है पचास साल, साठ साल पहले की।

डिफरेंस यह है कि आपमें आत्मबल नहीं है। उस व्यक्ति में आत्मबल या कि मैं ऐसा कर के छाड़ूंगा। और आपमें आत्मबल नहीं है तो आप साथते हैं कि होगा या नहीं होगा। आप बस कहते हैं वलों को शिश कर लेते हैं, देख लेते हैं, उम्मीद तो नहीं है फिर भी कोशिश कर लेते हैं वहीं से आपका भय स्टार्ट हो जाता है। और जब भय आरंभ हो जाता है तो उस भय के साथ मृत्यु जुड़ा होती है। क्योंकि मृत्यु और भय एक ही शब्द है।

आपने शैनिकों को देखा होगा। आर्मी वाले क्या करते हैं कि आपमें आफियर एक दिन ने उनकी एक हजार बार एक लाइल बुलवाते हैं, “जो डरा सो मरा” यस, उनकी यही प्रार्थना होती है, उनकी स्तुति भी यही होती है, कोई अंग जगहींश हरे नहीं करते थे। सुबह उठते ही सबसे पहले यही बोलते हैं कि जो डरा सो मरा। फिर छोड़ते हैं तो भी यही जहलते हैं - जो डरा सो मरा। पूरे दिन भर में एक शैनिक को एक हजार बार बुलवाते हैं तो। एक दूसरे ये मिलते हैं, बात कहते हैं तो नमलते नहीं बल्कि ये कहते हैं - जो डरा सो मरा। दूसरा भी कहता है - जो डरा सो मरा। बड़ि आप आपी जीलड में जाएं तो वह दो दोषों पर कुछ और लिखा नहीं होता, श्री कृष्ण शरण सम लिखा नहीं होता, प्रभवान् श्री कृष्ण या राम नी की जय लिखा लिखा नहीं होता। वहाँ केवल यही लाइन लिखती होती है।

यह क्या धीज है? ऐसा क्यों करते हैं? भय निकालने की कोशिश कर रहे हैं। ऐसी कोशिश करते हैं इसलिए यह उन हथशोलों और बमों के बाच निर्भीकता से चला जाता है। भर सकता है जिदा भी रह सकता है। मगर जिदा रहने के बान्ध ज्यादा होते हैं क्योंकि उनमें एक हिम्मत, एक साहस, एक सम्मता वेदा होती है कि देखा जाएगा। जीवन के एक छोर पर जन्म है, एक छोर पर मृत्यु है, उन दोनों के बीच में है - नर जागरे तो मर जाएंगे। और जिदा रह जाएंगे तो जिदा रह जाएंगे।

कृष्ण ने भी अनुन को यही कहा था। गाना में कि अनुन तुम बहुत काथर, तुम बहुत बुजादेल हो क्योंकि तुम्हें पेसा दो। ऐसा नहा। तुम भयगात हो, तुम्हें ताकत और निर्भीकता नहीं है, तुम्हें क्षमता नहीं है, तुम्हें दैसला नहीं है। और में कहता हूँ कि तुम्हें गरण को प्राप्त कर, तू मेर जा पहन। यदि तू मेरी जाप्ता तो स्वन मिलेगा अगर जड़ों अप्सराओं नृत्य करती हैं। जो कृष्ण ने कहा मैं वह बात बोहरा रहा हूँ सच्चर्ग है,

नकहे, अस्त्राणा है या नहा है मैं इस विषय को नहीं उठा सकता हूँ। जो कृष्ण ने कहा वे उस बात को कर रखा हूँ। उस अनुभव को समझाने के लिए श्री कृष्ण ने कहा - कि यदि तू लिखा रह गया तो विजय प्राप्त करेगा, लोग जय जयकार करने और आगे बाली पांच हजार पीढ़ियों तुम्हें याद करेंगे। दोनों स्थितियों में तुम्हें लाभ ही लाभ है, दानि है ही नहीं। जीन जाओगे तो भी लाभ है मर जाओगे तो भी लाभ है।

और अनुभव के लिए तीयाएँ हुआ, 'मनुष बाण हाथ में लिया गावींव छाय में लिया और उन पर शर संधान वर के तीर संधान कर के आपने सामने जितने भी खुद के उन्हें समाप्त कर के विजय प्राप्त की। यहाँ तक कि उसके पश्च की मृत्यु ही नहीं अभिमन्तु की युद्ध में मृत्यु ही गई। यहाँ तक की द्वोणचार्य की भी मृत्यु ही गई उनके गुरु नहीं, यहाँ तक की भी जन्म ही नहीं, मगर किसी भी सारे पांडव अर्जुन, भीम, नकुल, सहदेव, युधिष्ठिर और श्री कृष्ण जीवित रहे, मर नहीं सके। क्या विशेषता थी कि वे मर नहीं रहे और बुरोधन, दुश्मन जो थे वे मर नहीं। ऐसा हुआ क्या था? युद्ध तो दोनों में बराबर हो रहा था, बराबरी यी दोनों में, दोनों के गुरु एक ही थे, द्वोणचार्य उनके भी गुरु थे और द्वोणचार्य उनके भी गुरु थे। कीरदों को भी द्वोणचार्य ने पढ़ाया और पांडवों को भी द्वोणचार्य ने पढ़ाया। लेकिन कौरवों में भय था कि इन हारेंगे इसमें दो राय नहीं हैं। इन हार जाएँगे क्योंकि उधर कृष्ण बैठे हैं। और पांडवों को पूर्ण विश्वास था कि इन हार ही नहीं सकते, क्योंकि हारे साथ कृष्ण खड़े हैं। इन कहाँ से हारेंगे हारने का सबाल ही नहीं है।

यह भय और आमय के बीच की स्थिति थी। और वह व्यक्ति जिदा रह सकता है जो संघर्ष कर सकता है। जो संघर्ष करने के सम्मान रखता है, जो संघर्ष को उपने जीवन में निमंत्रण देता है, जो संघर्ष को बुलाता है, जो उपने यामने गंधर्ष को उत्पन्न करता है। और फिर संघर्ष से जूलता है वही जूलता प्राप्त कर सकता है। और जूझ कर रफ़तना प्राप्त करता है जो आनंद असीम आनंद का अनुभूति होती है।

कोटि में आप केस लड़ते हैं तो दूर बार आप भयमीत रहते हैं कि हारेंगे या जीतेंगे कही हम-रा वकाल
दूधरे के साथ तो नहीं मिल गया क्या है पल नहीं और आपके मन में तनाव और तनाव के अलावा
कुछ नहीं होता। मगर जब आप जीत जाते हैं तो आपके चेहरे की प्रसन्नता और मुस्कुराहट उतनी
तेज जाती है कि शौशा भी खफवा नहीं जाना है।

उस दिन क्या हो गया था और आज क्या हो गया है? पहले आप भयग्रस्त थे जीते तो भय
में बुक्त हुए इसलिए यहि नीचन में नफलता प्राप्त करनी है तो जूझना ही पड़ेगा - तनाव के
साथ नहीं विभवास के साथ, दृश्या के साथ।

और जब सन्यासी दीक्षा लेता है एक सन्यासी, गुहराय नहीं तो शिर्गीकरण से
दीक्षा लेता है। हममें से प्रत्येक सन्यासी है। आप में से कोई गुहराय है ही नहीं
क्योंकि पत्नी आपकी है नहीं, पुत्र आपका है नहीं, पति आपका है नहीं,
बंधु बांधव आपके हैं नहीं, मकान जावाद आपके हैं नहीं। मगर ये
आपके होते तो आपके साथ चिता वर चले जाते दे सब। कोई जाता
नहीं है मैंने तो बेला है नहीं, अपने सत्तर नाल के इनिडास में मैंने तो
देखा नहीं कि पति गया तो पत्नी भी साथ में भरी, मकान को भी
जला दिया, नोट के टुकड़े भी अंदर आग में हाल दिए, बकरों भी
अंदर हाल दिए, हीरे मोती भी अंदर हाल दी। ऐसा मैंने तो देखा
नहीं याहू आपने भी नहीं देखा। गुना बरा राम नाम सल्ला है
आगे गया गत है।

आगे गया गत है, अब आगे लो कियने देखा। और हम
स्नान करके बापस वर आगे हैं फिर तराजू में दस छटाक
कम तोलते हैं और हम दुकानदारी वेसी ही बलाते हैं। फिर
आपने बच्चे को कहने हैं देख भड़क पर मत जाना एकसीडेंट
हो नाहिया, देख उसका एकसीडेंट हो गया नहललाल का
देख किहललाल का एकसीडेंट हो गया, देख हरिराम का
एकसीडेंट हो गया। तू बाहर मत जाना।

ओइ हम उनको कादर, हम उनको ब्रजविल बनाने हैं।
मैं कह रहा हूँ कि नहल्या की दूसरी दी नहीं चौज और सन्यास
भी नहीं होती चौज। इसलिए सन्यास चौज नहीं होती कि
गिसको आख्य में धिकार है, गिसकी आख्य में गढ़गी है, जो
लड़की को देखने के बाद कामतुर हो जाता है, माप उसे कैमे
से पासी, करेग। वह कैमे सन्यासी हुआ। केश रखदे रही सन्यासी
हो गया?

सन्यासी गुहराय बहुत से मौज समाजी हैं और सन्यासी व्याक्षन भी गुहराय

है। और गुहाय व्यक्तिस भी गुहाय नहीं है और सन्यासी व्यक्तिस भी सन्यासी नहीं है। दोनों एक ही जगह जलते हैं, एक ही प्रकार की लकड़ियों में जलते हैं और एक ही जगह जलते होते हैं। या तो कब्र में उन्हें गाढ़ देते हैं, या नवी में प्रवाहित बगड़ेते हैं या लकड़ियों में जल देते हैं। दोनों में से कोई एक स्थिति बनती है क्योंकि कोई मरने के बाद उसको रखना ही नहीं

पत्नी बहती है कि तुरत ले जाऊँ और जला दो। मुष्टिकल से चार घटे भी आँगन में रख देते हैं वहुन बड़ी बात है हो; अंतम बशन करने के लिए बाफ़ का सिल्लाया धरते तरफ रख कर के रख देते हैं क्योंकि नेता भी हैं उनको चौबीस घटे रखना ही पड़ेगा। तो वे यह देते हैं और २४ घटे के बावजूद जला देते हैं। अब इन्होंने ही डिवरेस होता है। शरीर २४ घटे नहीं रख सकता। चार घटे बाद उसमें बहव आने लग जाती है। आठ घटे बाद दरमाने कोई वहने लग जाते हैं, चौबीस घटे बाद उसको उठाने का किसी को हिलान नहीं होता। अब आप का इश्वर कितामा नाकतवान कितामा ज्ञानतावान कितामा खण्डवान है इसका आप निष्ठ ब्रह्म बहुत है।

इस शाश्रयमें नाकत नहीं है, और भय के कलाज इस जीवन में कुछ है ही नहीं, प्रारम्भ से ही आपके मन में भय है, और जहाँ भय है वहा॒ सुन्दर ही क्षणिक भय और मृत्यु भय ही जीव है।

आप क्या भी क्यों यह आ रहे हैं, मुझे क्यों याद आ रहे हैं? और गवनतान जैसे क्यों नहीं याद आ रहे जो कृष्ण के साथ पढ़े हाएँ थे, उनमें कोई गवा हुआ था, आप में यो क्लीर हुए पालय होंगे क्योंकि आपका भी जन्म तो बराबर होता ही रहा है या ना क्लीरों की समानेहानि या पालीवों की भना में होगा। शरीर आपका नाम मुझे याद नहीं कि शरीर में आपका नाम क्या था, शरीर कृष्ण का नाम याद है। उसलिए कि उन्होंने जिताना के प्रारम्भ से लगाकर कर उन तक संबंध के अलावा, कुछ विद्या ही नहीं। कुछ नहीं जिता उन्हें जीकरी है। कुछ जैली चीज़ उन्हाने देखी ही नहीं। पैदा होते ही कंस ने मरने की कोशिश की, वो मरने आ या तो मरने ने आकर मारने की कोशिश की थी। फिर कैसे ने एक और साधारण को मैना, फिर और किसी प्रकार से मरने का उपक्रम किया, कलिया भाज आया और उनको छेने की कोशिश की। आप को मैना, फिर और किसी प्रकार से मरने का उपक्रम किया, कलिया भाज आया और उनको छेने की कोशिश की। आप मुझे बताएँ, कि जिताना के प्रारम्भ से लेकर अंत तक कृष्ण को कौन रा॒ सुख मिला। एक दिन भी एक मिनट भी सुख नहीं मिला।

भगव बहाने के बावजूद जीवन में कड़ा अविनिन दूर, एक बार भी बारे नहीं, बिजयी दूर और उन सारे संघर्षों का सम्बन्ध करने हुए। इसलिए कृष्ण याद आ रहे हैं, इसलिए भूल-लाल याद नहीं आ रहा है। इसलिए ज्ञान याद नहीं आ रहा है।

बीर रान ने कहा॒ भुजुः देखा॒ मुझे बना॒ दीर्घिद। एक दिन भी सुख देखा हो तो मुझे बना दीर्घिद, एक दिन भी। पत्नी के साथ जैगल - जैगल गले के बेटे होकर भटके, मिरा का दह संस्कार नहीं कर सके, कैकेयी के बहुयव का सामन बरना पड़ा, कैकेयी ने घड़व लिया कि भरत किसी तरह राज गद्दी पर बैठ जाए, और वे घड़व उस समय भी बनते थे आज भी चलते हैं और संघर्ष के अनाधा राम ने कुछ देखा ही नहीं इसलिए आज राम याद आ रहे हैं।

गोरा कहने का ग्राथ यह है कि बगर दमान जीवन में रोपथ नहीं है तो हम गूल्यु युक्त हैं, हममें और एक मरे हुए व्यक्तिमें डिवरेस कोई नहीं है, इसलिए हम मरे हुए व्यक्ति हैं और आशय यह है, कि मरे हुए व्यक्ति हैं और सास ले रहे हैं। और ऐसे लोगों का देखने कर बड़ा आशय होता है कि वे कैसे मृत व्यक्ति हैं, जो सास भी ले रहे हैं और चल भी रहे हैं।

एक छोटा भीट शिकारी या निसको कोई खास बृकृत चलाना आता नहीं था। बेटे ने एक दिन कहा कि आप बहन भी हिकारी हैं.... उसने कहा - अरे शिकारी! मैंने एक गोली भारी और एक गोली से बीस बाघ समाप्त। दोर का शिकार करना आप दीन्हे तो मुझसे सार्थक है।

तो बेटे ने समझा कि बहुत बड़े बहादुर का पुत्र है। उसने कहा यिता जी अनिन्। तानाब के किसारे पहुंचे घस्ते घासते। वही ऊपर एक चौल उड़ रही थी, एक कीआ॒ उड़रहा॒ था।

बेटे ने कहा - आपने बाघ को भार लिया तो उम कोए को मीर सकते हैं बदकू की गोली से। बाघ ने कहा - यह दो मिनट का काम है। उसने बदकू से गोली घनाई की ओउड़ गया। बेटे ने कहा - तो आपना नहीं?

बाघ ने कहा - यही जो विशेषता है कि गोली जनने के बाद भी भास जाती। आप उड़िए लगे भरनी, फिर भी उड़ना रहा। वह मैर लग रहे तुम वहा॒ ज्ञान यामोगे। यह साधना है।

यह अपने बेटे को भुवराये में डालने के लिए अट्ठी प्रक्रिया थी। उसको भवधीत करने की प्रक्रिया थी। उसका और गुमराह करने की प्रक्रिया थी। वह खुद नौ गुमराह था ही बेटे को भी गुमराह कर दिया और हम जानन में यही कहते हैं - खुद गुमराह करते हैं और दूसरों को भी गुमराह करते हैं। इसके अलावा आप कुछ करने नहीं, कर नहीं सकते।

आप में स अधिकांश जब भेर पाय जाते हैं तो एक ही बात कहते हैं कि बहुत तनाव है, बहुत दख्ख है, परेशानी है, बेटी कहना नामना नहीं, ऐसे बेटे कहना नामने नहीं, मैं बेपार हूँ गुमराह वह नकलीफ है। और इसके अलावा आप कुछ बात करने पर्याप्त हैं भरा हुआ है और सांस भी ले सकते हैं और जात भी कर सकते हैं।

नियमिता जो है वह जानन की श्रेष्ठता है, अवधारणा है, प्रामाणिकता है। और वे व्यक्तिने निदा रहे, वे पशु जिदा रहे, वे वर्षी जिदा रहे व कोई परक निदा रहे, वह नामचर और जल चर जिदा रहे, जिन्होंने संघर्ष करने की क्षमता रखी। जो संघर्ष करते रहे, सद्गुरु करने वह वही बच पाएंगे।

और आप दूसरों रखते हैं कि आपस में यहाँ भी प्रावधान नहीं आप वहाँ भी प्रावधान नहीं आए अमृतसर जाना नहीं है गुरुदारे में माथा टेकना नहीं है बरपेकि कभी कहा भी ए के छुड़ बल लज्जापी।

अब मैं आपको विश्वास दिलाता हूँ कि प.क. ४७ के कोई जीती जर्मी नक आपके निए बनी ही नहीं है। जब ऐसे कारखाने बने ही नहीं तो आपको जगेंगी जब जे और आप पहले से ही उत रहे हैं। जोनी बनेंगी ए के ४७ में जाएंगी किर आपके नगरी तब लख लेंगे। असा आप वहाँ प्रवासन हो गए हैं, जहाँ आप कभी तानवधन हो रहे हैं।

मगर नहीं आप कहते हैं। अमृतसर में गुरुदारा ही नहीं हमें बहाने को दिलाता ही नहीं हमें हमें तो भीष्म जम्मू तवीं जाना है तो वही जाएंगे, बीच में रहना ही नहीं और अमृतसर तात ही आप जिनकुन तुष्क कर बेट चालें। दूर से ही मथा लेकर हों।

मैं ऐसा नहीं कह रहा कि हमें जाना ही चाहिए, मैं ऐसा भी नहीं कह रहा कि आपको नहीं जाना चाहिए। मैं ऐसा कह रहा हूँ कि आपको परन ने तो भव है ग्रह दिना चाहिए। और आपसे स अधिकाश व्यक्ति उस भव को लेकर नेर पान आ रहे हैं, जो धरना घटी ही तरीं आपके लोगों में उत्थाने भव रख रहे हैं।

जब लड़का बिंगड़ेगा तब बिंगड़ेगा, जब आज ये ही क्यों तनाव में है कि लड़का बिंगड़ेगा, लड़का बिंगड़ेगा। छँ बने आना चाहिए सारे छँ बड़े आना चाहिए। और पैट पहननी चाहिए, जीन्स पहनना है। कहना, नहीं नामता गुरुजी आप हैं, बड़ी गड़बड़ जखर हैं, जब गुरुजी आप खुद खो जानिए।

जब गुरुजी कहा सोंवेंगे? बेटी तुम्हारी। पांच नहीं सात बजे आ रही है, जब गुरुजी बेटे बेटे क्या करेंगे। नहीं गुरुजी आप ही कर दीजिए।

यह अपनी स्थिति आपके लिए नुस्खे बताना न्यायालिक है। आपका विश्वास है कि गे गुरुजी है और मेरी गुमराह कर दूँ करेंगे। और लमस्याओं को दूर देविक साधन और सहायता के माध्यम ने किया जा सकता है। जहाँ देविक बल हो उससे दूर किया जा सकता है। जहाँ देविक बल हो उससे ऐसा किया जा सकता है, मनुष्य के बल में नहीं।

जब देवताओं का बल हमारे साथ हो तो हम रक्षकता प्राप्त कर सकते हैं, तब हम निर्भीक बन सकते हैं, कुछ न विजय प्राप्त कर सकते हैं, पूरीता प्राप्त कर सकते हैं, धनवान बन सकते हैं और जीवन में यह सब कुछ प्राप्त कर सकते हैं जो हम चाहते हैं।

आप जीवन में धन चाहते हैं और मैं कहता हूँ कि आपका धनवान होना चाहिए। मैं कहता हूँ कि हमना अधिक होना चाहिए कि आप निजने गिनते थक जाएं।

मैं बुद्ध नहीं हूँ कि आपका बदू कि धन त्याग हो, बुद्ध शरणं गच्छति सद्गुरुषि रुद्ध वृश्णं गच्छति, वृश्णं वृश्णं गच्छति, मैं मैं बदवीर भवामि हूँ कि सब कपड़े खाल देना चाहिए, मैं ऐसी सलाह आपनों नहीं दे रहा हूँ।

मैं कह रहा हूँ आपके पास बहुत नैयर हैं चाहिए बहुत चकान होने चाहिए। उन योगी होने चाहिए, आपको धनवान होना चाहिए, क्योंकि आप मेरे शिष्य हैं, धन होना चाहिए, यथ होना चाहिए, सान मन गोपीज्ञा गोपीज्ञा होना चाहिए और वह

मबू तुल वेविक बल मे प्राप्त हो सकता है आपके प्रयत्नों से प्राप्त नहीं हो सकता। आपके प्रयत्नों से प्राप्त होता तो अब तक आप कर्त्तव्योंने होते। क्योंकि प्रयत्न करने में आप क्षमता रखते ही नहीं। दिन भर परिश्रम करते रहते हैं। प्रत्येक प्रकार से प्रयत्न करते हैं उल, बल, नामत, युज्न, चतुराइ, यान्त्रिकी, मस्कारी, धूता, समझदारी कोई चीज़ छोड़ते नहीं आप।

मगर उसके बायजूद भी आप उन्होंने ही नकलीफ में बधे रहते हैं आप बहे तकलीफ फाइनेंशियल हो, चाहे पुत्र की हो, चाहे पुत्री की, चाहे पानी की। जिसे आप शादी कर के लाए वहीं आपके कट्टेल में नहीं है। डेटिंग वेटिंग करके नाए ढोगे, बगीचे में गढ़ ढोगे, दो चार घंटों डेल्डो भी होगी उसने आपको परखा होगा, आपने उसे परखा होगा लेकिन किर मी धर लाने ही जागड़ा शुरू और जिवण मर फिल लडाई जागड़ा चल रहा है आपका।

यह हुआ क्या? क्ये हो गया?

इसलिए हुआ कि वह भयभीत है कि उग्र यह मर गया तो मैं कैसे रहूँगा कछ बाले ने मकान भी नहीं बनाया अभी तक किराये के मकान से रह रहा है, और नहर जल्द यह तो पिर में कहो जाऊँगी यह गङ्गाबङ्ग हो जाएगी, मैं कहाँगी क्या?

वह भयभीत इसलिए है। बह कहती है - अच्छा चलो एक मकान जो बनाओ, और रहने के लिए कोई स्थान भी नहीं है, तुम कैसे बायां हो, जागा ने खुद अपने मकान बना लिया तुम ने बनाया ही नहीं। वह भयभीत जापस नहीं है, वह भयभीत जाल बाली स्थान से है।

पति भी भयभीत है एक बार आपका पढ़ जाए तो अस्पताल में भर्ती बरवाना पड़ेगा, दूष्टर की फीस १२०० रुपये है, कीस है, पिर दवा, ब्यां करें।

वह पत्नी को बहकता रहता है कि तुम्हे कोई तकलीफ नहीं है, छोटा मोटा बुजार है आता ही रहता है और मर भी जाऊँगी तो कोई पक्के नहीं होगा मैं तुम्हे विश्वास दिलाता हूँ कि दूसरी शादी नहीं जासूजा। वस्य भरोसा रख मेरे ऊपर।

एक फूली नारे लगी तो परिए आ हाथ पकड़ कर काह - रेखना, मैं मर जाऊँगा धंटा, डेंग घटे से ज्यादा जिंदा नहीं रह पाऊँगी। पति ने कहा - मूँह लग रहा है तो मैं अंतिम सारे चल रही है, तू मर जाऊँगा ऐसा लग रहा है और अभी तो उस ही तरी ४० - ४२ रात की है।

पत्नी ने कहा - आप मरा कहना मानगे?

पति ने कहा - तैरी उन्निम इच्छा है बर्लन परी करना।

पत्नी ने कहा - आप इसी शादी कर लेना, बच्चे छोटे छोटे हैं।

पति ने कहा - चलो तुम्हारी बात मान लंगा पर छ, महीने पहले विश्राम करेंगा, पहले जाराम करेंगा बहुत दुखी हो गया हूँ मैं तुम्हारे नाथ रहने रहते। जब छ - महीने विश्राम कर लंगा तो मिर शादी कर लंगा। अभी छ - महीने तक ना गुज़े भार करना, उपक बाब देखा लूँगा।

आप खुद सोचियर कि पति कितना, बुखी और तबलीफ में है और आपने, कितना उसे कोच कोच कर दुर्जी कर दिया है। और उसने भी जापको उतना ही भयभीत कर दिया है। और आप दोनों ने मिलकर बेटे को कर दिया है। मैं शादी को भयपूर घटना नहीं कह रहा हूँ। मैं कह रहा हूँ।

“निर्भयो जायते पुत्र निर्भयो जायते सदः”

जो निर्भय होता है वह जीवित हो सकता है। और निर्भय तब आद हो सकते हैं जब आपके सामने नंदये आयें। श्रीर सचर तब आएंगे जब आप बुलाएंगे संघर्ष को, टेन्शन आए, बाथाएं आए, प्रेशनियों आए, कठिनाईयों आए, और बहुं दो परपत गुरु रु के पास जाएं और पूछे कौन सी साधन है, कौन सी तरकीब है, कौन सा भव है, देविक बल द्वारा कहा से आप वरे जिसके प्राप्तव्य से हम सब कुछ पास कर सकते हैं।

आप किसी के यहाँ नीकर है और तीन चार आठ छलार रूपये तनख्याएँ ले रहे हैं, आप ने रहे हैं तोतारम जी से तोतारम जी क्या महान हो गए?

आपके लिए इसलिए प्रबन्ध नहीं किए उसके पास का साथ रूपये हैं और आपके पास नहीं हैं। इरना ही तो डिफरेंस है आप इसलिए तोतारम जी से ले रहे हैं। आप इसरम से जो ही नहीं रहे हैं। जिसके पास रहने को ही नहीं है। वह आपको कहती

से देगा। उस देवता से इस प्राप्त कर पाएँगे जिसके पास वह शक्ति है,

अगर नहीं है तो इस धनवान बनाने में वह अमरावन हो सकती है वर्योंकि उस रीत में वह खिलहस्त है। अब उस देवी का बल प्राप्त कैसे करें?

वह आपको जान नहीं है, और वह आपको जान नहीं है इसलिए आप भवगीत है और जिन दिन आपको देविक बल प्राप्त हो जाएगा तब आप आर्थिक दृष्टि से भवगत हो जाएंगे। पर बिना देविक बल के अपने नहीं हो पाएंगे।

यह दनुषान जान शुण द्यावा-

मध्य करोगा.....

इस प्रकार दनुषान जी आपके शरीर में आ ही नहीं सकते और दनुषान जी कुछ कर द्या नहीं सकते व्योंकि आपके लिए कोई स्वा मत्र, कोन सी विधि, कापड़ा उपयुक्त है जिसके पास आप से आप लफलता प्राप्त कर सकते हैं, यह आपको जात नहीं है।

और दस लाख में से एक मुख्य बाहा है यह मैं आपका जाता हूँ। दस बाय व्यक्तियों की जगता करें तो एक गुरु निकलता है बाकी तो पढ़े निकलते हैं, बाकी पुनर्जीवन निकलते हैं, बाकी पूजा करने वाले निकलते हैं बाकी घटा पड़ियाल चरनम से से छू लेंगे आपको।

क्या वो गृह है?

वहाँ तो मठ वाल पोच लम्फये में कहा देने हैं, और मैं तो भाष की पूछ का एक बाज भी नहीं खरीद सकता पांच लम्फये थे। अब यों वर्णये में गुज़राम कहा रह रहा। मगर वे कहा देने हैं तो लम्फये में भी करा देते हैं, मैंने भी करा दी है।

उब मेरी मां को सत्य हूँ तो मैं गया तो मुझे पता चा लहों गुज़राम कहना ही अठेगा, यहाँ वैतरणी पार मा को कराना ही पड़ेगा व्यंग्यिक तो बहुत है कि वैतरणी पार नहीं कराया तो गो यड़ी ठिक जाएगी। मुझे पता चा यह सब कोँच है, उल है, इठ है, उम्बको कुछ जान है दी नहीं।

हरिदार में जाने हैं तो पहली बात यहीं पूछते हैं कोइ गर भया है क्या। मैंने कहा मेरी मां मर गई।

उसने कहा - हा ठीक है, तुम्हरा पड़ा मैं हूँ।

अब कोई प्रमाण है तुम्हारे पास मैं केवा मानू तुम पढ़ दो, यहाँ तो डानों भीड़ है पहुँचो की कोइ थोनी खींच रहा है कोई कुता खींच रहा है। तुम हो तो कोइ प्रमाण तो हो।

उसने कहा - चलो।

तुम इसके बहते हो और यह बहो निकलता है और पढ़ता है कि गुम्हारे दादा जी आए थे और दादाजी का नाम वह था। आप संतप्त होते हैं कि दादा जी का नाम नहीं है।

और वह कहता है - तुम्हारे दादाजी ने सोने की शाली दी।

अब तुम सोनो हो दादाजी के पास पीतल के बतन तो ये नहीं दी तो तकलीफ पा रहे थे तो सोने की यालियां कड़ों ने दी थीं।

मगर पड़े की इसलिए कहना पड़ रहा है, कि यह भी कुछ दे तो सहो। दादाजी ने तो सोने की शाली नी नहीं पर यह तो पांच सोने स्वयं दे।

वह इसलिए कहता है दादाजी आए थे सोने की यालियां दी।

हमारे हिस्से में तो याई नहीं मेरे भाइ के हिस्से ने भी नहीं आए, दादाजी भव कुछ वहीं देकर सामाल हो गए। अश्वय है योर आश्वय है।

यदा कहना है - तुम नास्तिक न जानो, तुम नास्तिक हो जाओ।

मैं नास्तिक हूँ, नास्तिक नहीं हूँ, और युद्ध मध्ये दादाजी के बारे में जानेन है, भान की यात्रा क्या पीतल के बतन थी नहीं। उनके पास, यह युद्ध जल्दी तरह में जान डे।

पंडा कहता है अच्छा चलो छोटी तुम, मरा कौन है?

मरी तो मरी माँ है।

चालो नीचे नदी पर फिर।

बहु गए तो कहता है - तुम्हें नज़्द दान करना पड़ेगा, हृन्दारे पास पैसे
कितने हैं।

पैसे तो मेरे पास थे। मैं असत्य भी नहीं बोल सकता था तो सत्य
भी नहीं बोल सकता था। पड़े थे पांच सीढ़ीर ने था अकेला,
मृड़ों पकड़ते, आधारे और सीधा माताजी के पास खेज रहे,
गंगाजी में पैल कर के।

मैंने कहा - मेरे पास पैतालीस स्पर्ये हैं।

पंडा बोला - कल्प, पैतालीस स्पर्ये लेकर माँ का श्राव
कराने आया है। पैतालीस स्पर्ये में होणा क्या?

मैंने कहा - मैं तो नीकरी से बमाना हूँ जस इनने ही है और
इसमें बापस जाने का किराया भी बाकी है। टिकट लिया नहीं
मैंने, कोई रिजर्वेशन नहीं है मेरा।

किराया किराया लगता है?

मैंने कहा पद्धह रूपये।

उसने कहा - अच्छा पैतालीप मैं से पद्धह गए, बचे तीस।
तीस सप्ये ला मैं नज़्द दान करा देता हूँ।

मैंने कहा - तीस कैसे है दूँ? सराय के स्पर्ये देने बाकी है, पांच
सप्ये सराय बाले को देने हैं, फिर भाग की रोटी खानी है, सबह
भी रोटी खानी है, शिशा करके स्टेशन जाना है।

उसने कहा - यह कैसा कंजुस है। दिन भर मैं पहला तो यजमान
मिला, पहला ही कंजुस। अब इसके पास बरा पांच सप्ये अच्छे
हैं। अच्छा ला, पांच सप्ये ला।

मैंने कहा पांच स्पर्ये देने में मुझे भी कोई आपत्ति है नहीं, मगर
सुबह मेरा एक कुत्ता भूम गया, अब कुत्ता नहीं है आप पोचिए क्या
पहन कर जाऊँगा। बाजार में तीन सप्ये में कुत्ता भाला है

उसने कहा उच्छा ला, दो सप्ये

ला तुम्हारी मां को वितरणी पार करा दूँगा।

अब वे स्पष्ट ने गेंडक भी नहीं आता, और वह वे स्पष्ट में भाव
खोल कर वितरणी पार करा देगा। वे आपके गुरु हैं। वे निलक
जगाए हुए बस बैठे हैं और वे गुरु नहीं हैं तो आपको ज्ञान
कहा से के पाएंगे। इनालिए मैंने कहा कि दस लाख में से
कोई एक गुरु होता है। यदि आपको जीवन में ऐसे गुरु
मिल जाए तो यह आपका मीमांश ही होगा।

और सम्मार में गुरु शब्द वहीं है नहीं, दीचर शब्द
है, मास्टर शब्द है, जो पैरों लेकर काम करते हैं, वे
हैं। मगर गुरु शब्द नहीं है। यह गुरु मास्टर केवल
भारत में ही है। और आज ये नहीं हैं विछले पदास
हनार वर्षों से हैं। यह शब्द नहीं नर पाया, आकी सब
शब्द मरे मगर गुरु शब्द नहीं मर पाया। बिंगुड़ के
समय भी यही शब्द था। आज के समय में भी यही शब्द
है क्योंकि गुरु कोई व्याकेन नहीं है गुरु एक जान है,
गुरु एक चेतना है, गुरु एक प्रबुद्धता है। जिसमें ज्ञान
की प्रबुद्धता है वह गुरु है। मैं तुम्हारा गुरु हूँ मैं यह नहीं
कह रहा हूँ पर जो मेरा ज्ञान है वह आपका गुरु है।

वह आपको नहीं दूँगा से ज्ञान दे पाएगा चेतना वे पाएंगा
कि यह मन है जो तुम्हारे लिए नहीं है, यह साधना सही
है। गुरु ही तुम्हें ज्ञाना और कहेगा तुम्हें विद्यांचड़ा,
न चड़ा, प्रश्न स्पर्श वर या नहीं अर मुझे इसकी जस्तीन
नहीं है, पर पर जोर से सिर पटकेगा तो नहिं आगे
सरकेंगी अपनी खोपड़ी मेरे पैरों में रखना जरूरी है मगर
मैं जो साधना दूँगा वह दैविक बल के निये जारी
होगा।

बोधाण आपको ज्ञान नहीं के स्वतों सारे ज्ञानाण,
अप परह को लोडकर कहते हैं किश्छण। अहुत
खराक है ब्रह्म आत मैं बाहर नहीं जाना
चकिंग, ग्रहण काल में ख्रम्म नहीं खाना चाहिए,
मठकों का जल फैक कर मटके उल्टे खबरे चाहिए,

शुहण स्थाप्त होते ही मनान करना चाहिए, उपर्युक्त बाद सब काम करना चाहिए।

वास्तव में शुहण कोई खराब लक्ष्य नहीं ही नहीं मगर वाकी भूमि पर युद्ध उल्टा कहते हैं और आपके परिवार बाले भी शुहण का दुःख मानते हैं वयोंकि उन्होंने अपने बड़े से यहीं सीखा, और आप भी वहीं कहते हैं अपने बेटे को कि शुहण काल में कुछ नहीं करना चाहिए, शुहण कल खराब है। वयोंकि यह आता है और सूर्य को मूह में डाल देता है तो शुहण हो जाता है।

इतना बड़ा सूर्य उसको राहु वेले मूह में डालता भूमि पर सभक्षण में नहीं आता। आपकी समझ में शारद आ रहा होगा।

पर मेरी भूमिता में नहीं आता। भाइना इस बाल को स्वीकार नहीं करता।

भगव भीता में कुछांग कह गए हैं कि शुहण से लेष्टनम और्द समय है वी नहीं, अक्रितीव समय है, एक समय है कि उम समय जो कुछ भी किया जाए उसमें सफलता निलंती ही है। और इसीनिए महाभारत युद्ध तृक उम समय शुह दुआ जब शुहण काल था और पांडव विजयी हुए। पाठ्यों में कृष्ण ने कठ शुल्क बजा दें, मुद्र आरंभ कर दें। कृष्ण ने कठ - आओ नहीं, आओ ठहर जाओ।

पाठ्यों ने कठ - ठहर जाओ? कीरथ भाग्ने खुद है, तलधर लिए खुद हैं, अनेक शुल्क बज रहे हैं भीष्म तैयार खुद हैं और आप कहते हैं ठहर जाओ?

कृष्ण ने कठ - उमी ठहर जाओ। अभी नहीं वयोंकि

“कालोयं विवेदं विपुलं च लक्ष्मीं”

कालं क्षणं अपने आप में बहुत महायदान है। मैंने भी बोली देर पहले कहा कि मैं इस मिनट बाद प्रयोग कर ऊंचा।

आपने से या गुरुनी को लोई काम लेगा और व्योंकि आप तो तर्कवान हैं न, कुछ न कुछ सोच ही होगा।

उब नेरे साथ तो कमरे में कोई था ही नहीं, बरस बैठा था और दस मिनट बाद इसलिए आया कि प्रयोग के लिए वह समय प्रयुक्त हो जहाँ आपको लाभ मिल सके।

जब राम रावण युद्ध हुआ तब भी राम ने ज्योहि हो तोर संधान किया तो छन्मान ने कहा महाराज ठहर जाइए युद्ध का अपी सही समय नहीं आया है।

युद्ध में यहि विजय प्राप करनी है तो आपको स्वका पलेगा और हम लो येवक हूँ मैं आज्ञा तो नहीं है सकता मैं ते विनष्ट विवेदन कर सकता हूँ मगर आप विवेदपित्र से पूछें कि यह समय उपग्रहित है, भाष प्यास में आने गुरु की लज्जा, और उनको आज्ञा चक्र में स्थापित करिए।

यह सब ब्राह्म द्वालिए भूमिका रहा है कि जब शम लट भक्तों हो तो आप भी आज्ञा चक्र में गरु का रथापित्र कर सकते हैं आप भी इव्य न गुरु को स्थापित कर सकते हैं तब शम लट

उपने गुरु की आज्ञा चक्र में स्थापित कर परमायिन ले सकते हैं तो आप भी ले सकते हैं। राम में कौर आप में कोई अंतर है ही नहीं जहाँ तक मैंने सुना है उनके दो हाथ ही थे, दो पांव थे, दो जांबूं थीं, दो कान थे। बीम या पश्चास हाथ उनके तो नहीं आपके थीं नहीं हैं।

नम्न से कोई महापुरुष होना की नहीं हो आज तक नहीं हुआ। वे सब आपके जीसे ही थे, अपने कार्यों में सधर्ष रोग, कृष्ण, बुद्ध और वैतन्य बने। यहि आपने सधर्ष है तो आप राम बन सकते हैं और जीवित रह सकते हैं वे हजार पाँच हजार साल तक भी यहि आप में सधर्ष करने की क्षमता है, यहि आप निर्मोक हैं और चुनीतियों को सामने बुलाने हैं, हर समय चुनीतियों का सामना करते हैं, प्राचनम आती है तो उसे केस करते हैं। यहि आपमें यह भावना यह द्वामता है तो आप जीवित रह सकते हैं, सधर्षशील हो सकते हैं, और सफलता प्राप्त कर सकते हैं। और उसके लिए धैर्यक बन जालरी है।

राम को भी विश्वामित्र की जरूरत थी। और नव राम ने उनसे पूछा तो योहो देर बीत जाए उसके बाद तुम तीर सधान करना।

अब कटी विश्वामित्र नेतृ ऋग्योध्या के पास एक साक्षम में और कटी राम, छठे वड्डाप, में शमश्वरम के पास गे और उसके भी आप। भवाल वहाँ ये भी उनके अनपस में संघर होता रहा। आप भी कहीं भी हो, वहि यह छोड़ दो क्योंकि भूमिति दूर हो आएंगे। आज्ञा चक्र में मी गुरु स्थापित हो सकते हैं और गुरु बना सकते हैं और आप गुरु भी आज्ञा प्राप्त कर सकते हैं, गुरु आपको भाइह बन सकते हैं और आप गुरु में

गाइड हो सकते हैं यदि अपका गुरु से अटेचमेंट है, यदि आपको दिल्ली है। और यदि आपको गुरु में विश्वास है, तो फिर देवता भी आपको जीवन में सफलता दे सकते हैं, और आप विनय प्राप्त कर सकते हैं।

और चित्रक का मतलब है कि जो आपके जीवन में समस्याएँ हैं उन पर सफलता प्राप्त होनी चाहिए। अभी वह धमना प्राप्त हुई नहीं है आपको अपनोंके उप वैदिक बल को प्राप्त नहीं कर पाए, आप वैदिक बल को छोड़ गुरु को भी प्राप्त नहीं कर पाए आप। जब गुरु को भी प्राप्त नहीं कर पाए तो देवता कहाँ से आपके जीवन में आ पाएगी।

इसलिए आपको विनय की जरूरत है, आपको संघर्ष करने की जरूरत है, आपको निर्भय होने की जरूरत है आपको निर छोने की जरूरत है और आपकी जो भी इच्छा है उसको पूरा करने की जरूरत है; और प्रत्येक ल्यूक्स के मन में इच्छा रहनी चाहिए क्योंकि

“इच्छा विद्धीन पशु”

जिसकी इच्छा है ही नहीं वह तो मरा हुआ है। आपमें इच्छा ही नहीं है, संघर्ष करने की भावना ही नहीं है, और जब इच्छा नहीं होती तो आदमी मर जाता है, जिस्त होते हुए भी मर जाता है।

सन्यासी को जब दीक्षा दी जाती है तो कहा जाता है - जा नर जा यह नहीं कहा जाता तु गुरुखी रह संभन्न रह सफल हो। ऐसा आशीर्वद नहीं देते हैं। जब दीक्षा देते हैं तो कहते हैं - यू मर जा। आज तक जितना मुह़रि और डर आ, भय वा समस्याएँ थीं, आधाएँ थीं, उन्हें मर देता हूँ मैं तुम्हें नया जन्म देता हूँ। आज तुम्हें नवीन जीवन दे रहा हूँ, आज से तुम्हें नवीन तरीके से काम करना है।

सन्यासी को जब भी गुरु दीक्षा देता है तो उन्हें यही कहता है जा गृह्यु को प्राप्त हो जा।

और आप सुनेंगे तो कहेंगे - यह अच्छा है गुरु जो आपको तो अच्छा आशीर्वद देना चाहिए कि लखपति हो बरोडपति हो।

पर जनन का मतलब है कि आज तक का त्रृप्त्याश जीवन अनेना हृषीक या ग्रया लीना या, घटिया या वह समाप्त हो जाना। आप नए मन्त्र के रूप में जन्म ले सके, आज से आप नए जन्म सके, नवोनना का प्राप्त हो सके, नवीनता का संधार हो सके। जैसे सर्व पर जहर नाशन हो जैसे आपके ऊपर भी जाधा लग गया है, घग का, डर का, चिह्नों का, बायां का, अवनना का, अठिनाइयों का। यह सब हूँ हूँ सक और आप को भी जानें आप उसके सके, रोडमो और सके, और मसार में आपको नाम दो सक।

उपर नव दो अन्कों का अवलोकन करके देखते हुए इन द्वितीय अन्कों का पालन करना आप जल्दी समझें। द्वितीयक मोर्चा गुरु जीवन का नवीन जीवन है, जो आपको अपने कानूनों से बचाता है। आप नए दो अन्कों का अवलोकन करने के लिए इन द्वितीय अन्कों का पालन करना आपको अपने जीवन से बचाता है।

कर पाएंगे।

इन्हें जीवन में आप संघर्षशील बने, विजयी बने और मैं कह रहा हूँ आपके पास दच्छाए होनी चाहिए, रोज़ नयी इच्छाएं होनी चाहिए और प्रत्येक इच्छा पर विजय प्राप्त करें आप एक भाल में होंगे, ये मैं होगी या दस में होगी मगर दच्छाओं पर विजय प्राप्त होनी की चाहिए। जहा भी कृष्ण है वहां विजय है। ऐसा भीता मैं कहा गया है।

जब गुरु है वहा विजय होगी ही होगी। क्योंकि जब गुरु होगा तो एक भय का सचाल भिटेगा। और गुरु प्राप्त होगा तो दैविक बल प्राप्त होगा क्योंकि गुरु समझा पाएगा कि आपका जीवन क्यों बना है, वड बना पाएगा। आपके लिए औन मौ साधना जरूरी है। और उसके लिए गुरु शिष्य के बीच एक पर्यामेट होना चाहिए विश्वास का क्योंकि यह चाज तर्क को नहीं है, यह अद्या की है। तर्क मैं तो न मैं आपसे जीत सकता न आप मुझसे जीत सकते। यह चीज तर्क की नहीं है अद्या की है।

जब आप ने मान लिया कि वह व्यक्ति सत्य बोल रहा है और मेरा हितधिक है तो आपको विश्वास कर लेना पड़ेगा। आप शाब्दी कर के आते हैं, उस अनन्यान लड़की से लिए आपने ऐसा नहीं, और सबह साल भी नड़की पहली बार आपके पर आती है, उससे कोई परिवर्तन भी नहीं है, अभी कोई उसे जानता भी नहीं, और एकदम से सदृक की चाबी उसे दे देते हैं यह क्या है? आप पढ़ोसी को इनने साल में जानते हैं उसे देते नहीं मगर उसे क्यों दे देते हैं?

क्योंकि आपको विश्वास है कि वह ऐसे अश्वाद नहीं करेगी। विश्वास एक क्षण में पैदा हो गया। और नहां अविश्वास नहीं होना बहा रात बो गी चाबी नकिए के नीचे रखेंगे आप।

विश्वास गुरु के प्रति होना चाहिए
अपने प्रति होना चाहिए, संघर्षशील
होना चाहिए और आप जीवन में
सफलता प्राप्त कर पाए। और
निःचय ही आप जीवन में विजय
हो पाए, दैविक बल प्राप्त कर पाए,
पुर्ण रूप से सफल हो पाए ऐसा ही
मैं आपको आशीर्वाद दे रहा हूँ।

•सद्गुरुदेव निष्ठलेश्वरानन्द
जी महाराज

五

P

ज्ञान
संकलन
वाला

मंत्र-तंत्र-यंत्र विज्ञान परिका आपके परिवार का अभिन्न भंग है। इसके साधनात्मक सत्य को समाज के सभी स्तरों में समान रूप से स्वीकार किया गया है, क्योंकि इससे प्रत्येक वर्ग की समस्याओं का हल खरल और सहज रूप में समाधिन है।

वाणिक विद्यापत्र

इस पत्रिका की वार्षिक क सदस्यता को प्राप्त कर आप पायेंगे अद्वितीय और विशिष्ट उपहार

गृह क्लेश निवृत्ति यंत्र

जिस तरह शिक्षा बढ़ती जा रही है, नागरिकता बढ़ती जा रही है, उसी दर से मानवीय मूल्यों में वृद्धि नहीं हो रही है। यही कारण है, कि आज पति और पत्नी दानों पढ़े-लिखे और शिक्षित होने के बाबजूद भी एक दूसरे से प्रेम पूर्ण सम्बन्ध दीर्घकाल तक बनाये नहीं सकते हैं। शहरी जीवन में घरेलू तनाव एक आम बात हो चुकी है, पति कुछ और सोचता है, तो पत्नी कुछ और ही उमीदें बांधे रहती है, उसकी कुछ भी दुनिया होती है। पति-पत्नी एक गाड़ी के दो पहिये होते हैं, दोनों में असन्तुलन हुआ तो असर पूरी गाड़ी पर पड़ता है और आपसी क्लेश का विपरित प्रभाव बच्चों के कोमल मन पर पड़ता है, जिससे उनका विकास क्रम अवश्य हो जाता है। यदि पति-पत्नी में आपसी समझ न हो, तो भाई-बन्धु या रिटेनर, अन्य सम्बन्धियों के कारण समुक्त परिवार में आये दिन नित्य क्लेश की स्थिति बनी रहती है। इस प्रकार के घरेलू कलह का दोष किसी एक व्यक्ति को नहीं दिया जा सकता, कई बार भूमि दोष, स्थान दोष, ग्रह दोष, भाग्य दोष तथा अशुभ चाहने वाले शत्रुओं के गुप्त प्रयास भी सम्प्रिलित रहते हैं। कारण कुछ भी हो, इस यंत्र का निर्माण ही इस प्रकार हुआ है, कि मात्र इसके स्थापन से बातावरण में शान्ति की महक बिखर सके, सम्बन्धों में प्रेम का स्थापना हो सके, और लड़ाई-झगड़ों से मुक्ति मिले तथा परिवार के प्रत्येक सदस्यों की उत्तमि हो।

साधना विधि- एक सौ मंगलवार के दिन इस ब्रह्मोमान कराने के पश्चात् प्रातः काल अपने पूजा लघान में स्थापित कर दें नित्यान्तः- ग्रेह पर कुम्भ व अद्यत चढ़ाए तथा 'ॐ' कली बलेशनाशय कली ऐ फट' मंत्र का ५ बार उच्चारण करें तो आप उठ जेसे कोई दुष्क्रिय वाह्य को गले में बिल लेना कर दें।

यह दुर्लभ उपहार तो आप पत्रिका का वार्षिक सदस्य अपने निजी गिरा, रिश्तेदार या स्वजन को बनाएकर ही प्राप्त कर सकते हैं। यदि आप पत्रिका सदस्य नहीं हैं, तो आप स्वयं भी सदस्य बनाकर यह उपहार प्राप्त कर सकते हैं। आप पत्रिका में प्रकाशित पोस्टकार्ड बं. ५ स्पष्ट अक्षरों में भरकर हमारे पाज भेज दें, शेष कार्य हम स्वयं करेंगे।

Call us and send post card no. 4 to us at:

प्रार्थिक सदस्यता शुल्क-195/- जारी कर्त्ता अधिकारी 45/- Annual Subscription 195/-+45/-postage

प्राप्ति अधिकारी कार्यालय, हाईकोर्ट कांगड़ा, जोधपुर 342001, (राजस्थान)

मंत्र-संच-यंत्र विलान, डा. श्रीमद्भा मार्ग, हॉटेल कालापानी, नायपुर ८४३००१, India

Mantra-Tantra-Yantra Vigyan, Dr. Shrimati Marg, High Court Colony, Jodhpur-342001, (Raj.), India

फोन (Phone) : 0291-2432209, 2433623 टेलीफॉक्स (Telefax) - 0291-2432010

फोन (Phone) - ०२९१ २४३२२८८ | पृष्ठ २५ | १३ अप्रैल २०२२ मध्य-२३-२३ विहार २५ |

सूर्यी कृत सुखाना दीवास्त्री बनाना है दी अद्वय संदेशनिंदा अनुष्ठानी पर्ह सूर्य-लक्ष्मी-दिष्णु साधना एक चार अवधि खाजामाड़

साधना के लिए तीन पर्व विशेष रूप से महत्वपूर्ण हैं, नवरात्रि, दीपावली और संकान्ति पर्व, दीपावली तथा नवरात्रि के बारे में तो हर कोई जानता है, लेकिन संकान्ति में ऐसा क्या है, क्यों इसका महत्व है? इस पर्व संकान्ति पर्व के तीन दिन १३-१४-१५ जनवरी को विशेष मुहूर्त बना है, ये तीन दिन लक्ष्मी, सूर्य और विष्णु की साधना के दिन हैं।

नवग्रहों में सूर्य ही प्रधान ग्रह है, सूर्य बिना जीवन की कल्पना ही नहीं की जा सकती है, सूर्य ही जीवन तत्व को अनुभव करने वाल, उसे चैतन्य बनाने वाला, प्रब्रह्म देने वाला, मूल तत्व है।

मकर संकान्ति का महत्व इस कारण सबसे अधिक लड़ जाता है, कि उस समय सूर्य उस कोण पर आ जाता है, जब वह अपनी सम्पूर्ण रश्मियां मानव पर उतारता है, इनके ग्रहण किम प्रकार किया जाय, इसके लिए चैतन्य होना।

ज्ञावश्यक द्वे, तभी ते रश्मियां भीतर की रश्मियों के गाथ मिल कर शरीर के कण कण को जाग्रत कर देती है, सूर्य तो ब्रह्मा, विष्णु और महेश तीर्थों की शक्तियों का स्वरूप है, इस कारण मकर संकान्ति पर सूर्य साधना करने से हम तीनों की साधना का लाभ प्राप्त होता है।

शरीर और सूर्य

मनुष्य का शरीर अपने आपमें सृष्टि के सारे क्रम को समेट द्त है, और जब यह ब्रह्म विग्रह जाता है, तो शरीर में



दोष उत्पन्न होता है, जिसके कारण व्याधि, बीड़ा, बीमारी का आगमन होता है, इसके अतिरिक्त शरीर की आनन्दिक व्यवस्था के दोष के कारण मन के स्मृतर दोष उत्पन्न होते हैं, जो कि मानसिक शक्ति, इच्छा की हानि पहुंचाते हैं, व्यक्ति को सोचने-समझने की शक्ति, बुद्धि धीण होती है, इन सब दोषों का नाश सूर्य तत्व को जाग्रत कर किया जा सकता है, क्या कारण है कि एक मनुष्य उत्तरि के शिखर पर पहुंच जाता है, और एक व्यक्ति पूरे जीवन सामान्य ही बना रहता है, वैनों में भेद शरीर के अन्दर नाशत सूर्य तत्व का है, नाभि चक्र, सूर्य चक्र का उद्गम स्थल है, और यह अचेतन मन के संस्कार तथा चेतना का प्रधान केन्द्र है, शक्ति का खोत बिन्दु है, साधारण मनुष्यों में यह तत्व गुप्त होता है, न तो इनकी शक्ति का सामान्य व्यक्ति को जान होता है और न

ही वह इसका लाभ उठा पाता है, इस तत्व को उद्धोत भीतर के मणिपुर सूर्य चक्र को जाग्रत करने के लिए बाहर के यूं तत्व की साधना आवश्यक है, बाहर का सूर्य अनन्त शक्ति का स्रोत है, और इसका जब भीतर के सूर्य चक्र से जोड़ दिया जाता है, तो साधारण मनुष्य भी अनन्त मानसिक शक्ति का अधिकारी बन जाता है, और जब यह तत्व जाग्रत हो जाता है, तो बीमारी, बीड़ा, बीमारी, उस मनुष्य के पास जा ही नहीं सकती है।

बाहर यह सूर्य तो साल के ३६५ दिन जाग्रत है, लेकिन इसके द्वारा भीतर के समस्त तत्व को कुछ विशेष गुहातों में तत्काल जाग्रत किया जा सकता है, और इसके लिए मकर संक्रान्ति ऐ बढ़ कर कोई सिद्ध गुहाते नहीं हैं।

मकर संक्रान्ति और महालक्ष्मी

मकर संक्रान्ति के दिन ही भगवती लक्ष्मी का प्रातुभार्यव हुआ, जब लक्ष्मी की उत्पत्ति देवसुर संघाम के उवसर पर समुद्र मथन के छारा हुई, तब वह कन्या थी और इसलिए जिस स्थान पर

समुद्र मथन हुआ, जिस स्थान पर समुद्र के गर्भ से लक्ष्मी की उत्पत्ति हुई, उस स्थान को आज 'कन्याकुमारी' कहते हैं, जो भारत वर्ष के दक्षिणी छोर पर है, यह एक ऐसा स्थान है, जहाँ तीन समुद्र एक साथ मिलते हैं, और यहीं पर कन्या कुमारी का पवित्र और श्रेष्ठ मन्दिर है, हजारों लाखों लोग प्रति वर्ष भारत वर्ष के दक्षिण में कन्या कुमारी स्थान पर जाते हैं और उसकी प्राकृतिक छटा देरखते हैं, समुद्र का परम्परिक मिलन और तीन समुद्रों का संगम देरखते हैं, जहाँ का सूर्योदय विश्व प्रसिद्ध है, जो भी कन्याकुमारी जाता है, वह प्रातःकाल उठ कर छत पर खड़े हो कर सूर्योदय को देखने की अभिलाषा मन में अवश्य रखता है, क्योंकि कन्याकुमारी का सूर्योदय अपने आपमें अन्यतम है, ऐसा लगता है कि जैसे समुद्र में से धीरे-धीरे स्वर्ण कलश बाहर

निकल रहा है, चारों तरफ अगाध समुद्र है, जहाँ तक दृष्टि नहीं है समुद्र की लहरें विश्वाइ देती है और उन लहरों के बीच जब सूर्य बाहर निकलता है तो अपने आपमें एक अद्भुत और अनिवार्य दृश्य होता है।

समुद्र मध्यन के उपरान्त जो चौदह रूप निकले, उन चौदह रूपों में लक्ष्मी भी एक रूप थी, मगर वह कन्या थी, अविवाहित थी, कंवारी थी और इस के प्रतीक स्वरूप उस स्मान पर कन्याकुमारी का मन्दिर ला निर्माण किया गया, एक पवित्र भूमि का आविर्भाव हुआ और आज भी अद्भुत लोग उम्मीदवारी लक्ष्मी के विश्वाइ को देखने के लिए हजारों दूराएं की संख्या में जाते हैं।

इसके कुछ दी समय बाद भगवान विष्णु अवतारित हुए और उम्मीद के किनारे लक्ष्मी को पत्नी स्वरूप में स्वीकार किया, और यही समय मकर संक्रान्ति पर्व कहलाता है, जब कंवारी कन्या का पाणिग्रहण भगवान विष्णु के साथ होता है, इसीलिए इस दिन का विशेष महत्व है।

जो साधक मकर संक्रान्ति के विधान को पूरी तरह से सम्पन्न करता है, इस विशेष मुहूर्त पर लक्ष्मी की आराधना करता है, सूर्य की आराधना करता है, तो जहाँ एक ओर उसके जीवन के दोष दूर होते हैं, पीड़ा, व्याधि बीमारी का निवारण होता है, वहीं लक्ष्मी साधना से जीवन की दरिद्रता, दुर्भाग्य, कर्ज का नाश होता है, और लक्ष्मी का स्थायी निवास बन जाता है।

साधना के तीन विवर

मकर संक्रान्ति महापर्व को तीन भागों में बांटा जा सकता है, इसके तीन विवर हैं, इसमें प्रथम विवर साधना उम्मन की जाती है, दूसरे विवर को विष्णु साधना और तीसरे विवर को सम्पूर्ण बनने की सूर्य साधन सम्पन्न की जाती है, इन तीनों साधनाओं को एक साथ सम्पन्न करने का पर वर्ष में मकर संक्रान्ति के अलावा और कोई मुहूर्त नहीं है।

मकर संक्रान्ति की महालक्ष्मी साधना

इस महापर्व के प्रथम दिन सोमवार तिथि दर्शायी, १३ जनवरी २००३ को महालक्ष्मी सिद्धि दिवस है और इस दिन महा लक्ष्मी के विशेष स्वरूप की विशेष प्रकार से साधना सम्पन्न की जाती है।

इस विन लक्ष्मी के सिंह बाहिनी रूप और कमल-धारणी स्वरूप की साधना की जाती है, और लक्ष्मी उपनिषद में

लिखा है, कि जो साधक मकर संक्रान्ति पर लक्ष्मी के इस स्वरूप का चिन्तन करता है, उसके घर में लक्ष्मी स्थायी निवास करती है, क्योंकि सिंह समस्त दुर्भिक्ष, अभाव और दुर्घट्य को समाप्त करने वाला है, रोग और पापों का मक्षण करने वाला है, भालस्य और जीवन की न्यूनताओं को दूर करने वाला है, वहीं कमल जीवन को आलौकित करने वाला सदैव वैतन्य तत्व है अतः इस विशेष विन लक्ष्मी के इस विशेष रूप की साधना सम्पन्न करने का तात्पर्य जीवन में पूर्णता प्राप्त करना है।

सिंहवाहिनी महालक्ष्मी यन्त्र

इस यन्त्र का निर्माण कुछ विशेष मुहूर्तों में ही किया जाता है, और सबसे बड़ी बात यह है, कि इसकी स्थापना केवल मकर संक्रान्ति कल्प में ही की जानी है, ऐसा महायन्त्र घर में स्थापित होन पर कर्ज समाप्त हो जाते हैं, घर के लड़ाई भगड़े दूर होने हैं, व्यापार वृद्धि होने लगती है, अधिक उन्नति और राजकीय दृष्टि से भग्मान प्राप्त होता है।

इस महायन्त्र के सम्बन्ध में लक्ष्मी से सम्बन्धित प्रत्येक प्रथा में विशेष बर्णन आया है, प्रत्येक व्रतिने इसके महन्त्र को स्वीकारा है, यहाँ तक कि तन्त्र सर्वोपरि गुरु गोरखनाथ जी ने भी इस यन्त्र के तीव्रिक महत्व और मांविक महत्व को विशिष्ट बताया है।

साधना प्रदीप

इस साधना का विधान अत्यन्त सरल है, और साधक लवध इसे सम्पन्न करें, इस डेतु आवश्यक सामग्री की व्यवस्था पहले से कर लें, मकर संक्रान्ति कल्प के प्रथम दिन प्रातःकाल उठकर स्नान कर अपने पूजा स्थान में बैठ जाय और समाने एक लकड़ी के बाजोट पर पीला रेशमी वस्त्र बिछा कर उस पर इस महायन्त्र को स्थापित कर दें, इससे पहले अलग पात्र में हृष महायन्त्र को जल से तथा दूध, दहीध धी, शहद और शक्कर से स्नान कर पुनः शुद्ध जल से धो-पीछ कर इसे रेशमी वस्त्र पर स्थापित कर दें, और बेसर से इस महायन्त्र पर नौ विनिधि लगायें, जो नव निधि की प्रतीक है।

इसके बाद हाथ में जल ले कर विनियोग करें।

विनिधियोग

अस्य श्री महालक्ष्मी हृदयमालामन्त्रस्य मार्गव क्रषिः
आशादि श्री महालक्ष्मी देवता,
अनुष्टुपाविनानाद्यन्वासि, श्री बीजम् ही शक्तिः, ए

कीलकम् श्री महालक्ष्मी प्रसीद चित्तद्वयर्थं जपे विनियोगः।
इसके बाद साधक हाथ में जल ते कर संकल्प करें, कि
मे अमुक जीव, अमुक पिता का पुत्र, अमुक नाम का
साधक मकर संकालित पर्व पर शावती लक्ष्मी की नपनिषिद्धी
के साथ अपने घर में स्थापित करने के लिए साधना सम्पन्न
कर रहा हूँ।”

ऐसा कह कर हाथ में निवा हुआ जल जमीन पर छोड़ दें,
और फिर यन्त्र के समाने शुद्ध धूत के पास दीपक लगायें,
सूगन्धित अगरबत्ती प्रज्वलित करें, और दृध के बने हुए
प्रसाद का नेवेद समर्पित करें, इसके बाद हाथ छोड़ कर
ध्यान करें।

ध्यान

हस्तद्वयेन कमले धरयन्ती स्वतीलया ।
हारन् पुरसंयुक्तां लक्ष्मीं देवीं विचिन्तये ॥

इसके बाद साधक लक्ष्मी माला से निम्न मन्त्र की २९
माला मन्त्र जप करें, इसमें “लक्ष्मी माला” का ही प्रयोग
होता है।

महाभन्त्र

॥ॐ श्री हीं माहलक्ष्मये कमलधारिण्ये
सिंहवाहिन्ये स्वाहा ॥

*Om Shreem Hreem Aim Mahalaxmayye Kamal
Dhariniyye Sinh Vahinyye Swaha.*

इसके बाद साधक लक्ष्मी की आरती करें और यन्त्र को
अपनी तिजोरी में रख दें या पूजा स्थान में रहने वे तथा प्रसाद
को घर के सभी सदस्यों में वितरित कर दें इस प्रकार मकर
संकालित कल्पवत्स के प्रथम दिन यह महत्वपूर्ण साधना
सम्पन्न की जाती है।

साधना तामाज़ों - न्यौदाकर - ३५०/-

मकर संकालित-विष्णु नृसिंह साधना

चर्तमान दून में विष्णु के नृसिंह स्वरूप की साधना ही
सर्वश्रेष्ठ है, क्योंकि इस रूप में जहां एक और सीम्यता है,
वही तूसरी ओर शत्रुनाश का प्राकृति भी है, इस स्वरूप की
साधना करने से नीन प्रकार की आधाएं मुख्य रूप से तूर
होती हैं, प्रथम तो साधक को भय मुजिन ग्रास होती है।
दूसरी से शान्ति मिलती है, कर्ण रोग, नेव रोग, शिंच
रोग इवं कठं रोग दूर हो जाते हैं, शत्रु तथा विवाद में विजय
प्राप्त होती है। मकर संकालित कल्प के दूसरे दिन यह साधना
सम्पन्न की जाती है, इन हेतु साधक “विष्णु नृसिंह महायन्त्र”

ब्रह्म दीपक, बेसर, चावल, नेवेद, पुष्टि की व्यवस्था पढ़ने
से बत ले।

प्रातः स्नान कर शुद्ध वस्त्र धारण कर अपने जामने एक
बड़े लकड़ी के पीढ़े पर लाल वस्त्र विलाएं, मध्य में एक पात्र
में, विष्णु नृसिंह की स्थापना करें, पीढ़े के चार कोनों में चार
पत्ते रख कर उस पर चावल की ढेरी पर सुपारी रख दें और नार सुपारी
रखें, तथा हन चारों कोनों में श्री, ही, धूति, सुष्टु का ध्यान
करते हुए पूजा करें।

इसके पश्चात् विष्णु नृसिंह यन्त्र के सामने बनीस उपोत
के दीपक जला दें, और प्रत्येक के आगे नृसिंह स्वरूप का
एक-एक पत्ते पर चावल की ढेरी पर सुपारी रख दें और श्री
विष्णु के बत्तीस स्वरूपों की पूजा निम्न मन्त्रों का उच्चारण
करते हुए सम्पन्न करें।

ॐ कृष्णाय नमः	ॐ स्वद्वाय नमः
ॐ माहात्म्याय नमः	ॐ भूमाय नमः
ॐ भीषणाय नमः	ॐ उज्ज्वलाय नमः
ॐ करलाय नमः	ॐ विकलालाय नमः
ॐ वेत्यान्ताय नमः	ॐ मधुरवनाय नमः
ॐ रत्नाकाशाय नमः	ॐ पिंगलाकाशाय नमः
ॐ आंजनाय नमः	ॐ वीरातेजसे नमः
ॐ सूधोरणाय नमः	ॐ हनवे नमः
ॐ विश्वाकाशाय नमः	ॐ राक्षसान्ताय नमः
ॐ विशालाय नमः	ॐ धूम्रकेशवाय नमः
ॐ हय्यज्ञीवाय नमः	ॐ धनस्वरूपाय नमः
ॐ वेघनादाय नमः	ॐ कृतान्तकाय नमः
ॐ तीव्रतेजसे नमः	ॐ अग्निवर्णाय नमः
ॐ महोद्याय नमः	ॐ विश्वभूषणाय नमः
ॐ विघ्नशमाय नमः	ॐ महासेनाय नमः

इस प्रकार श्री विष्णु के ३२ स्वरूपों की पूजा कर
साधक विष्णु नृसिंह यन्त्र का पूजन सम्पन्न करें, उस पर
केसर से लिलक लगायें, और यों का दीपक जलायें, अब
अपने दिशों कार्य सिद्धि का संकल्प करते हुए विष्णु मन्त्र
का जप प्रारम्भ करें, साधक के लिए यह आवश्यक है, कि
उसी स्थान पर बेट कर कम से कम चांच माला का अवश्य
जप करें।

यहां साधकों हेतु विशेष रूप से लक्ष्मी नृसिंह यन्त्र दिया
जा रहा है, और इस साधना में सिद्धि प्राप्त होने पर साधक

को अपनी मनोकामना पूजा में किसी प्रकार की बाधा का सम्मान नहीं करना चाहता है।

लक्ष्मी नृसिंह मन्त्र

ॐ श्री हीं जयलक्ष्मी प्रियाय नित्यमुदितचेतभे
लक्ष्मी श्रितार्द्धदेहाय श्री हीं नमः।

*Om Shreem Hreem Jailaxmi Priyay
Nityamuditchetse Laxmi Shritardhdehay*

Shreem Hreem Namah:

तत्पश्चात् गुरु आरती और विष्णु आरती सम्पन्न कर पूजा में रखा जुआ प्रसाद ग्रहण करें।

मकर संक्रान्ति पर की नई यह विष्णु नृसिंह साधना के भीतर के भय तत्व को पूर्ण रूप से रामाप कर देती है, साधक को सुप्रशंकियां जागृत होती हैं, इस साधना के बिना मकर संक्रान्ति साधना अधुरी ही है।

साधना सामग्री- न्यौद्धावर- २४०/-

मकर संक्रान्ति : सूर्य साधना

मकर संक्रान्ति पर्व का सबसे अधिक महत्वपूर्ण स्वरूप सूर्यो साधना है सूर्य के बिना किसी भी वस्तु के दृश्य-आद्य की कल्पना ही नहीं की जा सकती, सूर्य के १२ स्वरूप हैं, ये बारह स्वरूप तथा इनकी बारह शक्तियां निम्न हैं-

सूर्य के स्वरूप	सूर्य की शक्तियां
वस्त्रण	इडा
सूर्य	सुषुम्ना
सहस्रांशु	विश्वार्थि
चाता	इन्दु
तपन	प्रमदिनी
सविता	प्रहरिणी
गर्भस्त्रिका	महाकाली
रवि	कपिला
पर्जन्य	प्रबोधिनी
त्वष्टा	नीलाम्बर
भित्र	बनान्तस्या
विष्णु	अमृतारुद्या

इस दिन प्रातः साधक सूर्योदय से पहले उठ कर स्नान कर उत्तेजन वस्त्र धारण करें, सूर्य की ओर मुँह कर सूर्य नमरकार करें, एक ताप पात्र में पुष्पों के साथ तीन अर्ध्य अर्चित करें, इस दिन नमक तथा तेल रहित भोजन ग्रहण करना है।

इस साधना के समय उपर लिखे हुए नियमों का पालन करते हुए साधक अपने सामने “सूर्य यन्त्र” की स्थापित कर उस पर चन्दन, केसर, सुपारी तथा लाल पुष्प अर्पित कर इसके साथ ही गुलाल तथा कुंकुम के साथ साथ सिन्दूर भी अर्पित करें और अपने सामने सिन्दूर को शुद्ध जल में धोल कर दोनों ओर नूर्य चित्र बनाएं तथा पुष्पां जलि अर्पित करते हुए प्रायंना करें।

“हे आदित्य! आप सिन्दूर वर्णीय, नेत्रवी मुख मण्डल, कमल नेत्र स्वरूप वाले ब्रह्मा, विष्णु तथा खद्ग सहित सृष्टि के मूल कारक हैं, आपको इसा साधक का नमरकार! आप मेरे द्वारा अर्पित कुंकुम, पुष्प, सिन्दूर एवं चन्दनयुक्त जल का अर्घ्य ग्रहण करें।”

इसके साथ ही मात्र पात्र दोनों हाथों लेकर, जल की धारा से सूर्य को तीन बार अर्घ्य दें, अब उपने पूजा स्थान में सूर्य यन्त्र के चारों ओर एक चक्र में १२ सविता चक्र स्थापित करें, ये सविता चक्र सूर्य के १२ स्वरूप हैं, प्रत्येक सविता चक्र पर इसकी शक्ति स्वरूप एक-एक पुष्प रखें, और ऊपर दिये गये बारह स्वरूपों का उर्दी चक्र में ध्यान करते हुए इन सविता चक्रों की पूजा करें, तत्पश्चात् पूर्व दिशा की ओर मुँह कर सूर्य यन्त्र पर केसर, कुंकुम चढाएं, तथा उर्दी केसर, कुंकुम से उपने तिलक कर सूर्य मन्त्र की ग्यारह माला का जप करें।

मन्त्र

॥ ओ हां हीं हीं सः सूर्याय नमः॥

Om Hram Hreem Hrom Sah Suryay Namah:

मन्त्र जप की पूर्णता पर पूजा में रखे गये दीपक से आरती सम्पन्न करें और इस ज्योति पर हाथ फेर कर अपने दोनों हाथों को नेत्रों से स्पर्श करें।

मकर संक्रान्ति के दिन साधक पूजा क्रम पूर्ण कर किसी तालाब, सरिता में स्नान करें तथा इस दिन अपनी श्रद्धा के अनुसार तिस, क्षुड़, तिल में बनी हुई वस्तुएं इत्यादि का दान करना चाहिए। सामर्त्य शक्तियों के जनक सूर्य ही है और यह सूर्य पूजा सम्पन्न कर मकर संक्रान्ति महा कल्प की पूर्ण आड्डति सम्पन्न की जाती है, सोंपकाल १३ कुवारी कन्द्याओं को भोजन कराएं और साधना का यह विशेष अनुष्ठान पूर्ण करें।

साधना सामग्री- न्यौद्धावर- २७०/-

श्री हनुमान

चमोकी को नमकीन

तो फिर काजिए

बंजरंग बली हनुमत साधना
बंजरंग बली हनुमत साधना

कहात है कि 'धर का जोगी जोगियों और अब गांव का सिंदे' वह
वात परब युज लादावतार थी हनुमान के समवंश में तानू होती है, थी
हनुमान साधना कर कर्त्तों का विवाह विस सरल और सहज काम
से हो सकता है उठली सरल कोई अन्य साधना नहीं है, किर वित्त
साधनाएँ कर्त्तों की जाए, हनुमान साधना तो समस्या साधनाएँ हैं।

शास्त्र अनेक हैं, और प्रत्येक शास्त्र अपनी उपासना
पद्धति में एक दूसरे से अलग, इस विभिन्नता ने आगे चल
कर हिन्दू समाज को सम्पदाय में विभक्त कर दिया- वैष्णव, विकास हुआ, वही कुछ आपसों संबंध से धार्मिक गुरु बन
दीव, गाथ, स्त्रामी नारायण, रामलीला, वल्लभ, श्री यामर्थ,
गये, जो शिव की साधना करने लगा उसने अन्य वैदी-

वैश्वानस्य, मध्य इन्द्र्यादि सम्प्रदाय तो कुछ उदाहरण हैं, पूजा
साधना अनुष्ठान की इस विभिन्नता से ही हिन्दू सम्नृद्धि का

विकास हुआ, वही कुछ आपसों संबंध से धार्मिक गुरु बन

विनायों को छोड़ दिया, तो नाथ सम्प्रदाय में कुछ और ही प्रकार की उपायना होने लगी।

इन सब विधियों के बाबूगृह केवल तक देव है, जिसके सम्बन्ध में न तो ओई संवर्धन है, न ही वैचारिक भेट और जिसके प्रत्येक सम्प्रगत द्वारा सर्वाधिक देव माना जाया है, वे देव हैं श्री हनुमान। नाम मिश्र द्वारा सकते हैं, लेकिन श्री हनुमान की समृद्धि यहाँ संवर्धन करते हैं, और इनका महत्व कितना विशाल है कि असभी जगताता के काशण श्री हनुमान जन-जन के देव बन गये, ऐसे कोई गाव नहीं होगा, जहाँ श्री हनुमान का मंदिर न हो, उनको पूजा नहीं की जानी हो, कहीं 'सीरदेव' के स्थान है, तो कहीं 'जगते देवता' के स्थान में, तो कहीं महाबाह के रूप में देवालय है, यहाँ तक कि झाड़ फूक, भूत-पिशाच-ग्रेन, जनपाइक, अपदवता, के नाश होते ही श्री हनुमान को सर्वाधिक याद किया जाता है, जन-जन में वह सब स्थायी रूप से विद्यमान है, कि 'जय हनुमान', 'जय महावीर', 'जय बालाजी' का स्मरण ही यह सून कर देता है।

हनुमानजनी सूनवायुपत्रो महाबबलः ।

रामेष्टः फाल्गुनसंखः पिंगल्लोऽमितविकमः ॥

उदधिकमणश्चेव सीताशोक विनासनः ।

लक्ष्मणप्राणदाता च दशभीवस्य दर्पणः ॥

एवं द्वादश नामानि कपीनदस्य महात्मनः ।

स्वापकाले प्रबोधे च यात्राकाले च यः पठेत् ॥

तस्य सर्वधर्थं नास्ति रणे च विजयी भ्रवेत् ।

राजद्वारे गहरे च भवं नास्ति कदाचन ॥

१- हनुमान २- अंजनी पुनर्व ३-वायु पुत्र ४-महाबल ५-रामेष्ट (राम ग्रिय) ६-फाल्गुनसंख (अर्जुन के भिज) ७-पिंगला (भूरी आँखों वाले) ८-अमित विक्रम ९-उदधिकमण (मधुपत्र को जननतने वाले) १०- सीता शोक विनाशक ११-लक्ष्मण प्राणदाता १२-दशभीवस्य दर्पण, इन बारह नामों का जो पठन कर देता है उस न तो स्वान में, न यात्रा में, न युद्ध में, कोई भय रहता है न राजकीय बाधा आती है और न शत्रु भय रहता है, श्री हनुमान का केवल नाम स्मरण करने वाला

साधक विनाशी हो जाता है।

केवल इसी बात से यह स्पष्ट होता है कि श्री हनुमान की साधना का कितना महत्व है और कितनी सरल है इनकी साधना।

आठ योगिक सिद्धियाँ और श्री हनुमान

आठ योगिक सिद्धियाँ-अर्गिमा, सहिमा गरिमा, नयिमा, प्राकाम्य, ईशित्व, विशित्व वे आठों सिद्धियाँ परम पूज्य श्री हनुमान जी में सम्पूर्ण स्वरूप से प्रतिष्ठित थीं, और जैसा कि शास्त्रोक्त कथन है कि ऐसे देव की पूजा साधना करते हैं, वैसी ही पितॄ प्राप्त होती है, तो इन आठ योगिक सिद्धियों को प्राप्ति भी श्री हनुमान साधना से ही सम्भव है, इसमें कोई अदृढ़ नहीं।

श्री हनुमान जो ऋषावतार है, तारसारोपविवद में लिखा है-

ॐ यो ह वै श्री परमात्मा नारायणः स भगवान्
मकारवाच्यः गिवस्वरूपो हनुमान् भूभुवः स्वः तस्मै वे

नमो नमः।

अर्थात् परब्रह्म नारायण शिव स्वरूप हनुमान ही हैं, श्री शिव के म्यारह सद्गुरुओं में म्यारहवें सद्गुरु हनुमान हैं, जो कि शत्रु संहारकर्ता, अति चमत्कारी, और इच्छानुसार कार्य करने वाले हैं। श्री हनुमान की साधन साधना भी सम्बन्ध है, मूर्ति साधना भी की जा सकती है, मांत्रिक साधना और तांत्रिक साधना भी है, हमीं कारण रामायण में लिखा है कि परब्रह्म सद्गुरु हनुमान की महिमा उन्होंकी कृपा से समझ में आ सकती है, वे सर्व मंगल निधि, सचिदानन्द धन परमद्वय सद्गुरु हनुमान तो औंकार स्वरूप पूर्ण ब्रह्म हैं।

वर्तमान द्युग्म और श्री हनुमान

श्री हनुमान जन-जन के देव अपनी सरलता और भक्तों पर सहज कृपा कर देने के कारण ही बने हैं साधक यह किसी भी मन का हो, कोई भी उपासना अपनाता हो, वह श्री हनुमान की साधना सम्पद कर सकता है, जीवन में सबसे बड़ा दुष्प्रभय है, और जो साधक श्री हनुमान का नाम ही स्मरण कर लेता है, वह भय पर विजय प्राप्त कर लेता है।

विशेष बात यह है कि श्री हनुमान अपने भक्त को, अपने साधक को बुधि, बल, वीर्य प्रवान करते हैं अर्थात् मानविक दुर्बलता ही या शारीरिक दुर्बलता, रोग ही अवकाशीक श्री हनुमान साधना से इस पर विजय प्राप्त होती है, श्री हनुमान चरित्र में एक पूर्ण आदर्श व्यक्तित्व उभरता है, जिसमें न तो कोई कमी है, न ही शारीरिक दुर्बलता, प्रकृति, अद्व, ब्रह्मवर्य, चरित्र रक्षा, बल-बुद्धि का विकास, निष्ठाम् मात्र से कर्त्य करने को प्रेरणा श्री हनुमान चरित्र से ही प्राप्त होती है, वर्तमान द्युग्म में तो श्री हनुमान साधना पूर्ण साधना मानी जा सकती है।

कई वर्ष पूरानी बात है, मेरे एक भित्र का नीकरी के लिए इन्टरव्यू था, मित्र बड़े परेशान और वास्तव में परम्परीत थे, नीकरी की बहुत सख्त आवश्यकता थी, इन्टरव्यू के लिए बुलावा वो भी से अधिक लोगों का था और घटन केवल पांच का होना था, चिन्ता से, अनिश्चय से भित्र बड़े व्याकुल थे, मैंने कहा कि इन्टरव्यू में भीतर जाने से पहले शान्त मन से एक बार हनुमान-तंत्र चमत्कारानुषान का पाठ अवश्य कर लेना, अब परीक्षार्थी तो पुरुषक टटोल रहे हैं और नित एक कुर्बां पर बैठ कर हनुमान तंत्र चमत्कारानुषान का पाठ कर रहे थे, पाठ करने के बाद उनका नमस्कर आदा और डे सहज मात्र से पूरे आत्म विश्वास के साथ भास्तर गये, बिना किसी गिफ्टरिश के उनका सलेक्शन हो गया, यह श्री हनुमान चमत्कार ही है।

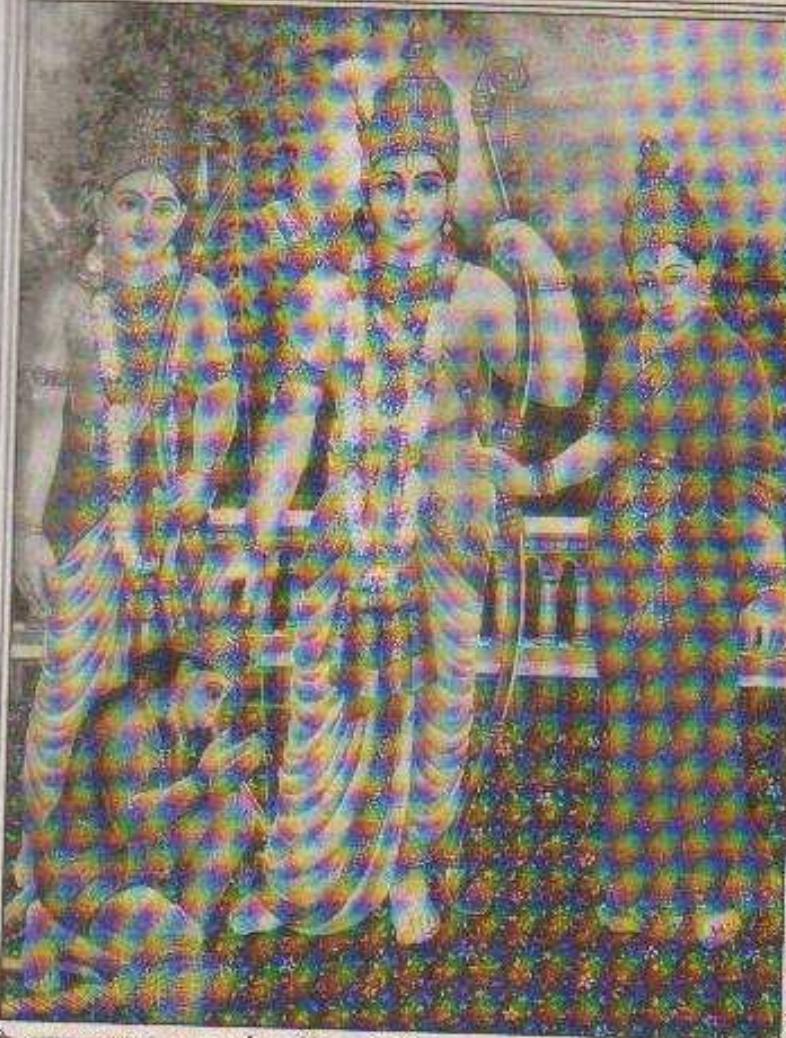
यह फिल्म बात है कि कृष्ण पक्ष में अचूरावि के पञ्चात शहर क्या घने जंगल अथवा इमशान में भी हनुमान मत्र, हनुमान चालीसा इत्यादि का पाठ करते हुए निकल जाए तो भर्त, विष्णु, जंगली जानवर क्या भूत प्रेत पिशाच भी आपके पास नहीं फटक भक्ते।

मरणान्तक पौड़ी से व्याप कर भोगने हुए रोशयों का हनुमान साधना से अभिमन्वित कर जल फिलाया है और हनुमान जी की कृपा से वे पूर्ण स्वरूप हुए हैं, क्योंकि ऐसा चमत्कार केवल हनुमान ही कर सकते हैं, वे अपने भक्त को कष्ट में नहीं देख लकने और उनके लिए कुछ भी करना सहज संभव है, जो एक संजीवनी बूटी के लिए पूरा पहाड़ उठा कर ले जा सकते हैं जो रावण जैसे महा प्रतापी का अहंकार चूर चूर कर सकते हैं ऐसे एकादश रुद्र की महिमा उनकी भक्ति करके ही जानी जा सकती है।

श्री हनुमान प्रतीक है- ब्रह्मचर्य, बल, पराक्रम, वीरता, भक्ति, निररता, सरलता, और विश्वास के, इनके एक-एक गुण के सम्बन्ध में हनुरारी अध्याय लिखे जा चुके हैं, निर्बल हो कर अधीन हो कर जीना भी कोई जीना है क्या? शत्रु अथवा बाधा बड़ा अथवा छोटा नहीं होता, वह तो केवल व्यक्ति अथवा घटना होती है, और उस पर आत्म विश्वास द्वारा विजय प्राप्त की जा सकती है और जो श्री हनुमान का साधक है उसके भीतर तो अत्यन्तिवाल की आत्म शक्ति छलकती रहती है, उसे जान है कि मेरे पीढ़ के पीछे प्रबल पराक्रम देव श्री हनुमान बजरंग बली खड़े हैं फिर मुझे कोहे की चिन्ता।

जन-जन में श्री हनुमान जी के प्रति एक वीरता, गौरव का भाव भरा हुआ है और इनके स्थान-स्थान पर मंदिर बने हुए हैं, आप कभी श्री हनुमान जी की मूर्ति के सामने जा कर खड़े होकर और उनके नेत्रों की ओर देखें तो सोधा आपके मन में बल पराक्रम का श्रेष्ठ भाव ही आयेगा, निर्बलता हवा में छिलीन हो जाएगी, हनुमान साधना के सम्बन्ध में प्रमुख ग्रन्थ है-हनुमदुपासना, पैशाच्यमास्यम-स्नोत्र, कुलुमानली, श्री मद्रामपवनात्मच, चतुर्थदश रहस्यम, श्री हनुमान बालक, हनुमत सतक, मास्ति स्तोत्रम ये तो हिन्दी और संस्कृत में प्रमुख ग्रन्थ हैं, इसके अलावा मराठी, गुजराती, बंगला, उडिया, तेलगु, कश्मीरी, मलयालम तथा अंग्रेजी में भी विशेष ग्रन्थ है।

सरल कृपाल, सिद्ध देव श्री हनुमान की साधना के कुछ विशेष नियम हैं, जिनकी परिपालना अत्यन्त आवश्यक



है, अन्यथा रुद्र हनुमान सर्वनाश ही कर देते हैं, साधक लोग इन सब बातों की ओर विशेष ध्यान दें।

१. हनुमान साधना के दिन के प्रत्येक कार्य में शुद्धता होना आवश्यक है, जो भी प्रसाद नैवेद्य अर्पित कर वह शुद्ध थी का बना होना चाहिए।

२. कुप्रे के जल से स्नान कर पूजा करना श्रेष्ठ माना गया है।

३. हनुमान मूर्ति को तिल के तेल में मिले हुए सिंचूर का लेपन करना चाहिए।

४. श्री हनुमान को केवल केसर के साथ विषा हुआ लाल चन्दन लगाना चाहिए।

५. पुष्पों में केवल लाल पीले और बड़े फूल अपर्ण, कमल, मेन्दा, सूर्य मुखी, के फूलों को ही अर्पित करना चाहिए।

६. सात्विक कार्यों हेतु स्नान माला तथा तामसी पराक्रमी कार्यों हेतु मंगा माला का प्रयोग करें।

७. श्री हनुमान, सेवा पूजा के प्रत्यक्ष उदाहरण हैं, जन साधक द्वारा सेवा करके फल प्राप्ति की इच्छा रखनी चाहिए, पूजा में पूर्ण श्रद्धा और सेवा भाव होना चाहिए।

वक्तव्य कर्त्तव्य हनुमान साधना

जिस प्रकार आप नित्य प्रति अपना नित्य कर्म करते हैं, उसी प्रकार हनुमान जो की साधना तो प्रत्येक साधक को नित्य ही करनी चाहिए, संकट के समय तो हर कोई देवता की शब्द करता है, लेकिन वास्तविक घस्ति तो शुभ और अशुभ दोनों समय में पूर्ण श्रद्धा से की गई साधना से ही है।

मंगलवार पवन पुत्र श्री हनुमान का दिन है, इस दिन साधक साधना के ऊपर दिये गये सभी नियमों का पालन करते हुए विशेष अनुष्ठान अवश्य सम्पवकर्त्ता, उसके अतिरिक्त

८. नैवेद्य में प्रातः पूजन में गुड़, नारियल का गोला, और लड्डू मध्यान्ह में गुड़, थी और नैहू की रोटी का चूरसा अथवा मोटा रोटी तथा रात्रि में आम, अमरुद अथवा बला का नैवेद्य अर्पित करना चाहिए।

९. हनुमान साधना में भी में भीगी हुई एक अथवा पांच बतियों का ही दीपक जलाना चाहिए, यह बात महत्वपूर्ण है।

१०. हनुमान साधना के दिवस साधक ब्रह्मचर्य ब्रत का पूर्ण रूप से जवाह्य पालन करें, और जो नैवेद्य श्री हनुमान को अर्पित हो, उसी को ग्रहण करना चाहिए।

११. हनुमान साधना में मंत्र जप बोल कर अर्थात् जावाज के साथ किया जाता है और श्री हनुमान की मूर्ति के समक्ष नेत्रों की ओर देखते हुए मंत्र जप सम्पन्न करें।

१२. अनिष्ट की इच्छा से श्री हनुमान देव का अनुष्ठान करना जल्दत है, रुक्मिणी, रुक्मिणि की भावना से ही कार्य करना चाहिए।

१३. हनुमान साधना में दो प्रकार की मालाओं का प्रयोग किया जाता है, सात्विक कार्यों हेतु स्नान माला तथा तामसी पराक्रमी कार्यों हेतु मंगा माला का प्रयोग करें।

शनिवार को भी हनुमान पूजा का विधान है।

ये दोनों दिवस कुछ विशेष संकल्पों के दिवस हैं, मंगलवार व शनिवार के दिन प्रत्येक साथक अपने जीवन में परिवर्तन के लिए अपनी आत्म शक्ति, आत्म विश्वास, बल वीरी, बुद्धि, हेतु विशेष संकल्प लेकर नवी जीवन की ओर प्रवृत्त करें क्योंकि ज्ञाधना में श्री हनुमान का आशीर्वाद और शक्ति है।

श्री हनुमान साधना में जो श्याम किया जाता है, उसका विशेष महत्व है, वर्तमान समय में कामना के अनुकूल स्वरूप को सकारा राधना ही थेह है, जैसा श्याम करे वैसी ही मूर्ति अपने मानस में स्थिर करे और ऐसा आशयास करें कि नेत्र बन्द कर लेने पर ही वही स्वरूप दिखाइ पड़े।

श्री हनुमान द्यान

उद्यन्मातृणकोटिप्रकटसचिवानं चालवीरगसनस्यं।
मौजीयलेपदीलासनसचिवशिखाशोभित कुण्डलकम्॥
भक्तानामिष्टदं त प्रणतमुनिजनं वेदनावप्रमोद।
ध्यायेदुनित्यं विद्येय लक्षणमुलपति गोष्ठी भूत्वारिण॥

उद्यन्मातृणकोटि प्रकट सचिवानं चालवीरगसनस्यं।
मौजीयलेपदीलासन सचिव शिखा शोभित कुण्डलकम्॥
भक्तानामिष्टदं त प्रणतमुनिजनं वेदनावप्रमोद।
ध्यायेदुनित्यं विद्येय लक्षणमुलपति गोष्ठी भूत्वारिण॥

उद्यन्मातृणकोटि प्रकट सचिवानं चालवीरगसनस्यं।
मौजीयलेपदीलासन सचिव शिखा शोभित कुण्डलकम्॥
भक्तानामिष्टदं त प्रणतमुनिजनं वेदनावप्रमोद।
ध्यायेदुनित्यं विद्येय लक्षणमुलपति गोष्ठी भूत्वारिण॥

उद्यन्मातृणकोटि प्रकट सचिवानं चालवीरगसनस्यं।
मौजीयलेपदीलासन सचिव शिखा शोभित कुण्डलकम्॥
भक्तानामिष्टदं त प्रणतमुनिजनं वेदनावप्रमोद।
ध्यायेदुनित्यं विद्येय लक्षणमुलपति गोष्ठी भूत्वारिण॥

उद्यन्मातृणकोटि प्रकट सचिवानं चालवीरगसनस्यं।
मौजीयलेपदीलासन सचिव शिखा शोभित कुण्डलकम्॥
भक्तानामिष्टदं त प्रणतमुनिजनं वेदनावप्रमोद।
ध्यायेदुनित्यं विद्येय लक्षणमुलपति गोष्ठी भूत्वारिण॥

उद्यन्मातृणकोटि प्रकट सचिवानं चालवीरगसनस्यं।
मौजीयलेपदीलासन सचिव शिखा शोभित कुण्डलकम्॥
भक्तानामिष्टदं त प्रणतमुनिजनं वेदनावप्रमोद।
ध्यायेदुनित्यं विद्येय लक्षणमुलपति गोष्ठी भूत्वारिण॥

हनुमान साधना में अलग-अलग कार्यों की स्वरूप पूर्ति हेतु, बल प्राप्ति हेतु, अलग-अलग मंत्र, सामग्री एवं जप अनुष्ठान का विधान है।

पूजन सामग्री

श्री हनुमान साधना में षोडशोपचार पूजा का ही उल्लेख नाया है, इस पूजा में शुद्ध कुण्ड का जल, दूध, दही, धी, मधु और चीरी का पंचमूल, तिल के तेल में मिला सिन्दूर, रक्त चन्दन, लाल गुण्ड, जनेऊ, सुपारी, नैवेद्य में गुड, नारियल का गोला, पांच बत्ती का दीप, अष्टगन्ध आवश्यक है।



साधना सामग्री

हनुमान साधना में अपने पूजा स्थान में एक आला (ताक) निश्चयित कर दें, उस स्थान पर हनुमान चित्र, सामग्री के अतिरिक्त केवल राम रीता का चित्र अथवा मूर्ति रख सकते हैं अन्य कोई चित्र या मूर्ति रखना वर्जित है।

इस साधना में सात सामग्रियों का पूरा विधान है प्रत्येक सामग्री एक विशेष कार्य हेतु यिन्हीं होती है और उसकी पूजा समर्पण उसी कार्य को ध्यान में रखते हुए करें।

अमित विक्रमाय हनुमत यन्त्र- पूर्ण कल्याण एवं सर्वोन्नति हेतु
तीन मधुरूपेण सदाश- सकल्प यिन्हि हेतु
गोपद गुटिका- बल प्राप्ति हेतु
बलादिकम वंड- शत्रु बाधा निवारण हेतु

बालति भूज फल-
बालति भूग माला तथा
लद्धाक्ष माला
हनुमान मूर्दिका-
हनुमान चित्र-

अनंग जटिकि, वीरं जटि भेतु
कार्यं उनुसारं जप तंतु

रक्षा भेतु धारण करने के लिए
वीरं मुद्रा में स्थित गहावली

विद्यान

हनुमान साधना के लिए प्राप्त: साधक स्नान कर शुद्ध नाल वस्त्र धारण कर स्वयं उत्तर दिशा की ओर मुह कर बैठें, तथा अपने सामने हनुमान जी की मूर्ति तथा चित्र स्थापित करें, यक्षिणीमिमुख हनुमान साधना का ही विद्यान है, भाग्यने पूजा स्नान पर गोबर तथा मिठी मिला कर उसे तीप दें अथवा चीकों बना कर पूरी चीकों पर सिन्दूर छिड़क वे और इन पर आपने सामने हनुमान चित्र के ऊपर सभी सामग्री कम से तिल की सात ढीं पर रख दें तत्पश्चात् पूजन कार्य प्रारंभ करें, सबसे पहले हाथ में जल ले कर संकल्प करें कि मैं अमुक (अपना नाम), अनुक पृथि (पिता जा नाम), अनुक कार्य भेतु यह अनुधान समर्पण कर रहा हूँ, श्री हनुमान मुद्रा पर पूर्ण कृष्ण करें।

अब साधक शुद्ध ध्यान कर वीर मुद्रा में बैठ कर नीपक जलाएं और फिर हनुमान मूर्ति पर हनुमान गंड पर नया नवोंज की पंचमूल से किर शुद्ध जल से स्नान कराकर तेल मिले सिन्दूर का लेपन करें, वह लेपन कर लाल पुष्प चढाएं, वरत्र का न्यारह बार जप कर श्री हनुमान देव का आह्वान करें तथा निवेद्य अर्पित करें, साधक वत रखें और निषण से कार्य करें।

अलग अलग कार्यों हेतु अलग-अलग मंत्र का विधान है इसे शुद्ध रूप से कम से कम चांच माला का जप अवश्य करें आगे यह अनुभूत मंत्र विद्ये जा रहे हैं, सर्वप्रथम तो साधक एक माला बीज मंत्र का जप करें।

हनुमान बीज मंत्र

॥ॐ हुं हुं हसीं हस्फों हुं हुं हनुमते नमः॥

अब अपने कार्य के अनुसार मंत्र अनुच्छान करें-

१. कार्य सिद्धि के लिए

ॐ नमो भगवते सर्व ग्रहान भूतभविष्यवत्सानान् दृष्ट्य सर्वापस्थान् छिन्दि छिन्दि भिन्दि भिन्दि सर्व काल दृष्ट्युद्दिनुच्छाटयोच्छाटय परखलान् श्रीभय श्रीभय मम सर्व कायर्णि साधय साधय। ॐ नमो हनुमते ॐ हां हीं हु, फट।

वेहि अं शिव सिद्धि, अं हां अं हीं अं हु अं हें अं हीं अं हु, स्वाहा॥

२. सर्व विद्युत विवारण के लिए

ॐ नमो हनुमते परकृतयन्त्रपराहेकारभूतजप्रेत पिशाच परदृष्टिसर्वविद्यमाननेहत विवालवोशभवान् निवारय निवारय वध लुण्ठ लुण्ठ पञ्च पञ्च विलूच विलूच किलि किलि सर्वकुपंत्राणि दृष्ट्याचं ॐ हीं हीं हु फट स्वाहा।

३. शत्रु संकट निवारण के लिए

॥ॐ पूर्व कपिमुखाय पचमुखद्वन्मते दंदं दं दं दं सकलशत्रुसारणाय स्वाहा॥

४. प्रेत लापा विवारण के लिए

॥ॐ विशिष्यमुखाय पचमुख हनुमते करालवदनाय नरसिंहाय ॐ हां हीं हु हीं हु: सकलभूतप्रेतसमनाय स्वाहा॥

५. महामारी, अमोगल, ग्रह दोष एवं भूत प्रेतादि नाश के लिए

॥ॐ ऐ श्री हां हीं हु हीं हु: ॐ नमो भगवते महाबलपराक्रमाय भूतप्रेतपिशाचवद्यग्रासम शाकिनी डाकिनी योक्षणी पृतनामारी महाभारी राक्षस भैरव वेताल ग्रह राक्षसादिकान क्षणेन हन हन भंजय भंजय मारय मारय शिश्रय शहा-माङ्गल्यवरस्त्रावतार ॐ हं फट स्वाहा। ॐ नमो भगवते हनुमदाख्याय रुद्राय सर्वतुष्टजनमुख समस्तभूत कुरु कुरु स्वाहा। ॐ हां हीं हु हं ठं ठं ठं फट स्वाहा।

इन मंत्रों में जो शनि है, उह से साधक श्री हनुमान अनुष्ठान सम्पन्न कर ही प्रत्यक्ष रूप से अनुभव कर नाकरा है, विधान देखा है कि विनामी संस्कार में मंत्र जप बलं उसका दम्पते हिस्से मंत्र का हवन अवश्य करें।

अनुष्ठान पूर्ण होने पर साधक मुद्रिक को धारण कर लें, मधुमत्तेण लद्धाक्ष किमी हनुमान मन्त्रे में अर्पित कर दें अन्य साधयो अपने पूजा स्थान में रखे रहें।

श्री शनि जी कि सबसे प्रबल देव माने जाये हैं, और यवि किसी को शनि पत्तोती ही, और शनि बाधा होनी वह साधक शनिवार के दिन श्री हनुमान मूर्ति पर तेल चढाएं और हनुमान मंत्र अनुष्ठान करें तो यह साधारण पूर्ण रूप से दूर हो जाती है, ये सभी मंत्र स्वतः अनुमान मिल भवते हैं, आशा है, साधक गण इनमें अवश्य लाभ प्राप्त करें।

साधना रामदी-न्यौडावर-४३९/-

हनुमन्त्र चमत्कारानुषान

श्री शंकराचार्य हनुमान साधना के अनेकों ज्ञाना आजे जाते हैं, उन्होंने हनुमन्त्र चमत्कारानुषान पढ़ाति की रखना की, इस महावृत्ति में साधना के सम्बन्ध में विशेष विवरण इत्यादि विद्या हुआ है, यूल रूप से बीस मंत्र प्रथाएँ हैं।

हन बीस मंत्रों में से पाठकों हेतु सात मुरुद्य भंत्र विद्ये जा रहे हैं, भंगलवार के विज अपनी बाधा के अनुसार, अपने कार्य के अनुसार हनुमान प्रूजन कर एक भंगलवार से दूसरे भंगलवार तक रव्यारह हजार मंत्र का जप करना है, इस अनुषाल हेतु भंत्र सिद्ध पाण प्रतिष्ठा द्युक्ष 'हनुमान गुटिका' लाल कपड़े में खांध कर काले ओर से अपने गले में धारण कर हनुमान वित्र के आगे अनुषाल सम्पन्न करना है, पाठक गण भंत्र को क्षयान से देखेंगे तो अंत्र में ही सम्बन्धित कार्य विवरण है-

**ॐ नमो हनुमते रुद्रावताराय विश्वरूपाय अमित-विक्रमाय प्रकटपराक्रमाय प्रहावलाय
सूर्य- कोटिसमप्रभाय रामदूताय स्वाहा॥**

**ॐ नमो हनुमते रुद्रावताराय सर्वशत्रुसंहारणाय सर्वरोगहराय सर्ववशीकरणाय
रामदूताय स्वाहा॥**

**ॐ नमो हनुमते रुद्रावताराय शक्तजननमनः कल्पना-कल्पद्रुपाय दुष्टमनोरथस्तम्भनाय
प्रशंजन-प्राप्तियाय महाबलपराक्रमाय महाविपत्तिनिवारणाय पुत्रपौत्रधन-धान्यादि
विविधसम्पत्प्रदाय राम दूताय स्वाहा॥**

**ॐ नमो हनुमते रुद्रावताराय वज्रदेहाय वज्रनखाय वज्रसुखाय वज्ररोप्णे वज्रनेत्राय
वज्रदन्ताय वज्रकराय वज्रभक्ताय रामदूताय स्वाहा॥**

**ॐ नमो हनुमते रुद्रावताराय परयंत्रमन्त्र-तन्त्रभ्राटकनाशकाय सर्वजवरच्छेकाय
सर्वव्याधिनिक नतकाय सर्वभयप्रशमनाय सर्वदुष्ट मुखस्तम्भनाय सर्व
कार्यसिद्धिप्रदाय रामदूताय स्वाहा॥**

**ॐ नमो हनुमते रुद्रावताराय देवदानवयक्षराक्षस-भूत-प्रेत-पिशाच-डाकिनी-दुष्ट
बन्धनाय रामदूताय स्वाहा॥**

**ॐ नमो हनुमते रुद्रावताराय पंचवदनाय पश्चिममुखे गरुडाय सकलविघ्न
निवारणाय रामदूताय स्वाहा॥**

दुर्खों का बोझ

बात अबूत पुरानी है पृथ्वी पर चारों ओर से संकट ही संकट आ गया, लोग आपस में लड़ने लगे तथा पृथ्वी पर दुःख की स्थितियाँ अत्यधिक बढ़ गईं। थोड़े समय तक तो यह विचार कर के शान्त रहे कि शायद ये स्थितियाँ सुधर जाएंगी। लेकिन स्थिति सुधरते नहीं देखकर कछु तथाकथित ज्ञानवान और समझदार व्यक्तियों ने विचार किया कि अब समय आ गया है कि अपनी बात और अपने दुख भगवान के सामने स्पष्ट रूप से रख दी जाए। और उनसे हीं दुर्खों के निवारण का उपाय पूछा जाए।

जैसा कि पृथ्वी पर रिवाज है उन्होंने एक गुलूम रेली रूप में बनाया तथा नारे लगाते हुए स्वर्ग में पहुंचे।

उनके नारों की आवाज सुनकर भगवान ने उन्हें बुलाया और पूछा कि इननी लम्बी यात्रा करने का उद्देश्य क्या है? मनुष्यों ने विल्लाचिल्ला कर अपनी समस्याओं के बारे में कहा। और यह भी बताया कि यदि इन समस्याओं का समाधान नहीं हुआ तो पृथ्वी पर अफरा-तफरी मच जाएगी।

भगवान ने कहा क्या आपने अपने-अपने दुर्खों का बोझा लेकर आए हैं, उस बोझे को योड़े दिन के लिए

मेरे पास छोड़ दो, सारे व्यक्ति प्रसन्न हो गए। और अपने हुर्खों का बोझा वही पटक दिया और भगवान ने कहा कि कुछ दिन बाद वापस आना मैं सबका बोझ थोड़ा-थोड़ा हल्का कर दू़़ा। क्योंकि संसार में जीना है तो थोड़े बहुत दुःख तो रहेंगे ही। सारे व्यक्ति प्रसन्न हो गये और जब कछु दिनों बाद वापस भगवान के पास लौटे तो भगवान ने कहा कि पास वाले कमरे में दुर्खों के बोझ बण्डल पढ़े हैं। इनमें जो गङ्गा नुस्खे सबसे हल्का लगे उसे ले कर चले जाओ।

खुशी-खुशी हर व्यक्ति उस कमरे में गया और उसने एक एक गङ्गा उठा लिया।

आश्चर्यकी बात यह है कि प्रत्येक व्यक्ति ने दुर्खों का बड़ी गङ्गा उठाया जो गङ्गा वह छोड़ गया था। इससे यह बत सिद्ध होती है कि सुख और दुःख एक मानसिक स्थिति है। दुर्खों का बोझा जब भारी अनुभव करते हैं तो ज्यादा अनुभव होता है। और जब उसे हल्का अनुभव करते हैं तो उसे दुःख कम मालूम होते हैं तथा समस्याओं के समाधान मिल जाते हैं।



सिद्ध महालक्ष्मी साधना

सिद्ध महालक्ष्मी की साधना तुङ्ब दरिद्रव नाश हेतु और उके हुए कायों की सिद्धि हेतु सम्पूज्ण की जाती है, देवी के इस स्वरूप के सम्बंध में लिखा है कि केवल वस्त्र धारण करने वाली शुभमया चतुर्भुजा सिद्ध लक्ष्मी कमल, कलश, बेल और शोण धारण किये हुए, बेल उच्चति प्रतीक है, शंख विनय प्रतीक, कमल धन प्रतीक, कलश पीड़ा का निवारण प्रतीक है।

सिद्ध महालक्ष्मी वी. साधना साधक को किसी भी बुधवार को प्रातः प्रारम्भ कर १३ दिन तक निरन्तर सम्पूज्ण करनी चाहिए।

विनियोग

ॐ अस्य श्रीसिद्धि महालक्ष्मी मंत्रस्य हिंगायगर्भवापि; अग्नेषु छन्दः श्रीमहाकाली महालक्ष्मी महासरस्यती वेवता: श्री बीजे ही शक्ति: बली कीलकं मम सर्वबलेशार्पीडापरिहारार्थं सर्वतुङ्गदरिद्रव नाशनार्थं सर्वकार्यसिद्ध्यरथं च श्रीसिद्धलक्ष्मी मंत्रजये विनियोगः।

इस प्रकार स्वरूप लेकर ताम्र गत्र में अथवा धानी में सिद्ध महालक्ष्मी गंत्र स्थापित कर गत्र को धी, दृश्य, नया जल से धो कर सर्वच्छ वस्त्र से पौष्टि कर स्वरितेक बना कर मध्य में एक पूर्ण लक्ष्म कर निम्न आसन मंत्र से आसन देकर चर शक्ति चक्र स्थापित करें फिर ग्यारह बनियों का दीपक लगाएं, लाघक १३ दीपक अलग-अलग भी जला सकते हैं।

आसन मंत्र

॥३३ सिद्ध महालक्ष्मी पद्मरीढाय नमः॥

पूर्व की ओर गुह कर बैठें, सामने केवल यंत्र व चक्र ही स्थापित होने चाहिए तथा लक्ष्मी नस्त्रीर अथवा चित्र रखें, शास्त्रोत्त कथन है कि केवल शक्तिकर वा नैवेद्य ही महालक्ष्मी को अदिन करना चाहिए और अब इस सिद्ध महालक्ष्मी देवी का मंत्र ३०८ चर यह जप करना चाहिए, यह केवल स्फटिक गाला से ही सम्पन्न करें।

सिद्ध महालक्ष्मी मंत्र

॥३४ श्री ही कलीं श्री सिद्धमहालक्ष्मये नमः॥

इसी प्रकार यह विधान १३ दिन तक निरन्तर मंत्र अनुशासन सम्पन्न कर ग्यारह भोजन कराएं और संभव हो तो मंत्र जप का दशांश हड्डन करें।

नीसा कि विनियोग में लिखा है, सिद्ध महालक्ष्मी साधना में सर्व क्लेश पीड़ा का परिहार्य होता है, तुङ्ग दरिद्रव का नाश होकर साधक के कार्य सिद्ध होते हैं, इसमें कोई भूशय नहीं है, इस मंत्र को तो साधक निष्प्र प्रति जप करें तो और भी अधिक उत्तम है।

साधना सामग्री-पौङ्कावर-३००/-



भय ही मृत्यु का कारण है

एक गांव में एक व्यक्ति रहता था और गांव के बाहर उसका खेत था वह अपने खेतों में फसल बोना, हल चलाना, मेहनत करता और उसे अपनी मेहनत फल भी मिलता था। खेत में उसके दो मित्र थे, एक मित्र था चूहा और दूसरा मित्र था एक सांप दोनों उसके खेत की रखवाली करते और किसान उन्हें खाने के लिए दे देता था तीनों प्राणी सुख से रहने थे।

एक दिन ऐसा हुआ कि हल चलाने हुए किसान का पैर सांप पर पड़ गया और जैसे की सांप की आदत होती है उसने उसे काट छाया क्योंकि हर जीवन अपनी प्रकृति के अनुसार कार्य करता है। सांप प्रकृति काटने की होती है। अतः उसने यह किया कर दी संयोगबश उसी समय चूहा भी वहाँ उपस्थित था। सांप नो जल्दी से अहरण हो गया और किसान ने नीचे झुककर अपने घाव को देखा और उसी समय वह चूहा भी नजर आया किसान ने यह विचार किया कि और किसी ने नहीं चूहे ने ही काटा है तथा याक की ओर से भूल गया और अपना काम करने लगा।

थोड़े दिन बाद ऐसी घटना पुनः हुई इस बार वास्तव में चूहे ने किसान को काटा और तत्काल एक बिल्ल में छुप गया संयोगबश सांप उस समय वहाँ से गुजर रहा था यह देखकर किसान ने यही विचार किया कि उसे सांप में

काटा है और वह तत्काल बेहोश हो गया तथा बेहोशी में ही मृत्यु हो गई।

इन तीनों ही स्थितियों में यह बात स्पष्ट होती है कि जब भय मनुष्य पर द्यावी हो जाता है तो वह अपनी बुद्धि से विचार नहीं कर सकता और उसका अन्त हो जाता है।

भय में ही मनुष्य को मारने की शक्ति है और किसी अन्य जीवन में मनुष्य को मारने की या पराजित करने की शक्ति नहीं है।

जो व्यक्ति भय रहित जीवन जीना सीख जाता है उसे संसार की डब्बर की चिन्ताएँ नहीं सतातीं, आज कल हार्ट अटैक इत्यादि बीमारियों का घड़ना मनुष्य में भय भाव बहु जाने के कारण ही है। व्यापार में कार्य में परेशानी इत्यादि का भार अपने हड्डी पर ले लेते हैं तथा हर समय एक अलात आशंका से गृस्थ रहने हैं।

जबकि मनुष्य जीवन में यह होना चाहिए कि जीसी परिस्थिति जाए उसके अनुसार खेड़ भाल कर विचार बरे और अपने स्वयं के निर्णय के अनुसार ही याजना बनाए जो कार्य अच्छे तरीके से संभाल सकते हैं वही कार्य करें तो अलात आशंका, दूर, भय इत्यादि व्यक्ति से परे रहते हैं और वही तो व्यक्ति को जीवन में निल-निल कर मारते हैं जिनके रहने मनुष्य जीवन के प्रत्येक द्वारों का आनन्द नहीं उठा सकता है।

त्वरिता शक्ति साधना

सांस्कृतिक युद्ध, प्रेम, औन्दृश्य, वशीकरण शक्ति

सांस्कृतिक सुख भी अनायस प्राप्त नहीं हो जाते हैं, उसके लिए भी एक साधना का बल, और सिद्धि आवश्यक है, सुख प्राप्त करना और उन सुखों को भोगना भी उतना ही महत्वपूर्ण है, वशीकरण, स्त्री सुख, गृहस्थ अनुकूलता, सुन्दर पत्नी की प्राप्ति हेतु, प्रेम में सफलता हेतु त्वरिता साधना सबसे महत्वपूर्ण साधना कही गई है। त्वरिता शक्ति स्वरूप में देवी का ध्यान ग्रिया रूप में जो घोड़ा वर्षीय, हाथी में पाश, अंकुर, वरद और अमय मुद्रा धारण किये हुए हैं जो ऊपर पत्तों के आसन पर निवास करती है, नाम आभूषणों से सज्जित और गुण हुए गुला फल का धार धारण किए हुए हैं, वशीकरण शक्ति, मोहिनी शक्ति, अनंग शक्ति प्रयोग करने वाली है, उस प्रेरणी देवी की साधना तत्त्वाण कल प्रदर्शिती है।

यह साधना किसी भी शुक्रवार को प्रारंभ कर अगले आठ दिन नित्य रत्नि को सम्पन्न करना है, साथक संकल्प ले कर साधना प्रारंभ करें प्रतिदिन वह संकल्प अवश्य बोधराएं, इस साधना में केवल दो सामग्री त्वरिता यंत्र तथा त्वरिता सपर्या, को अपने सामने एक बाजीट घर पीला, वस्त्र बिछाकर स्थापित करना चाहिए, यंत्र के सामने तांबे का बना दुआ सर्प अवश्य स्थापित करें और केवल केसर से पूजन करें अपने पूजा स्थान में सुगन्धित पुष्प रखें, उनी आसन पर बैठ कर शरीर पर हत लगाइं।

इस साधना में चार दिशाओं में चार मध्यूर पंख स्थापित कर ऊपर आसन पर बैठ कर अपने हाथ में जल ले कर संकल्प लें तथा इन का टीका यंत्र पर लगाएं, सुगन्धित धूप, अगरबती, पूरे समय लंगी रहनी चाहिए और स्फटिक मोला से पांच गाला में जप अवश्य सम्पन्न करें।

मंत्र

॥ उँ ही हु स्त्रेच्छे क्षः स्त्री हूं क्षे ही फट ॥

यह मंत्र अगले शुक्रवार तक बराबर जारी रहना चाहिए, इस साधना में तीसरे वीथे दिन साधक को एक अद्वितीय सुगन्धि का अनुभव अपने पूजा स्थान में होता है और देवी त्वरिता अपने सुन्दरतम स्वरूप में साधक के सामने आकर उसे वर प्रदान करती है, पूजा में नित्य नये सुगन्धित पुष्प बढ़ाएं तथा देवी के सम्मुख केवल खीर का प्रसाद (नवेद्य) अर्पित करें तथा साधना के पश्चात् इसे ग्रहण करें। इस साधना में प्रयुक्त यंत्र व सपर्या को साधक पीले कपड़े में बांध कर अपनी जेन में अवश्य रखें, प्रेम वशीकरण और अनंग शक्ति में उसे अवश्य ही सफलता प्राप्त होती है।

साधना सामग्री- नौछावर- ३००/-

शिष्य शान्ति

- ★ जो व्यक्ति असली शिष्य बनना चाहता है उसको सेवा भाव से परिपूर्ण होना चाहिए।
- ★ उसके मन में मानवीय मूल्या पूर्णरूप से विद्यमान हो। उसमें असीम धैर्य दोना चाहिए ताकि वह गुरु द्वारा ली गई परिक्षाओं में पूरा उत्तर दें।
- ★ अगर शिष्य योद्धा कहता है और बहुत समय लीतले पर भी गुरु डरासे इक भी शब्द ल कहे और ल ही उसे गायबाओं का द्वाल प्रदाता करें और फिर भी शिष्य अपनी सेवा वा भवता में किसी प्रकार की व्याख्या आते देतो तो गायबाला बाहिए वह शिष्य बलते के लायक है।
- ★ अब तुम्ह कोई ऐसा कार्य है जो कि उसके बत्त की बात नहीं है लेकिन फिर भी वह पूरे मन से उसमें जुट जाता है तो उमड़ना चाहिए उसमें गुरु के प्रति आरथा है।
- ★ परिवर्तन की भावना शिष्य का गूल बुन है। वह केवल प्रत्येक न करें, अपितु पहली जब से कार्य संपन्न को जो गुरु ते तो सम्पादा है।
- ★ कई बार शिष्य गुरु के समझा कोई इच्छा प्रकट करे और वह फलीभूत न ही या फलीभूत होने में अधिक समय लग रहा ही और फिर भी शिष्य के मन में कोई विपरित विचार न आए तो समझें की शिष्य पूर्णतः समर्पित है।
- ★ शिष्य को आगे बढ़कर गुरु का कार्य संपन्न करना चाहिए और गुरु की विश्वास दिलाना चाहिए कि वह ही इस कार्य के लिए सर्वथा योग्य है।
- ★ शिष्य के जीवन में पैर्य और विश्वास का सबसे अधिक महत्व है। समय उसके लिए कोई महत्वपूर्ण नहीं। उसे चाहिए कि वह आवश्यकता पड़े तो पूरा जीवन गुरु वरणों में समर्पित कर दे।
- ★ गुरु के प्रति शिष्य की आस्था पूर्णतः बलवान हो। किसी भी स्थिति में, किसी भी समय उसकी आस्था में कमी न आने पर।
- ★ जीवन में पुक बार ही गुरु का घवन होता है जो शिष्य बार-बार गुरु बदलता है वह निष्टृप्त है और उसे अयोन्य ही कहा जा सकता है।

शुरूवाती

- गुरु शिष्यों में भेद लहीं करता, शिष्य हो या शिष्या हो वे गुरु के लिए बराबर हैं।
- मैं तुम्हें पहचानता हूं, तम्हारे शरीर को पहचानता हूं, तुम्हारे प्राणों को पहचानता हूं, तुम्हारी चेतना को पहचानता हूं। इसीलिए मैं जानता हूं कि साधना मार्ग पर कौन भी साधना तुम्हारे लिए बोध्य है।
- यदि मैं तुम्हारा हाथ पकड़ूँगा तभी तुम पूछता तक पहुंच पाओगे नहीं तो तुम भटक जाओगे, बीच रास्ते में ही जार्ज बदल दोगे। इसलिए मुझे तुम्हारा हाथ पकड़ कर रखना पड़ेगा और तुम खाहो भी तो उजे छुपा नहीं सकते।
- हो सकता है इस संसार के माया जाल में तुम पंखा जाओगे मगर फँसने के बावजूद भी तुम्हारे ओर मेरे प्राणों के संबंध रहेंगे। उसकी तुम भूल नहीं सकोगे क्योंकि हर क्षण, हर द्यनि में तुम्हें मेदा ही दर्शक परिवार्द्ध देगा। जब तुम दर्पण में उपने चेहरे को देखोगे तो उसमें भी तुम्हें मेदा ही प्रतिक्षिप्त दिखाई देगा।



तोकर
लोकर
क्लिया
तुम्हें व
सके।

चालन
रहा है
एर खा
सकती

एक न
लकन
हिमाल
झी नहीं

पची
तुम्ह

■ मैं तुम्हें जीवन का वह गरस्ता दिखाने आया हूँ जहाँ
ठोकर पर सारी बुलिया की लगा जाता है, जहाँ सलार को
ठोकर मारकर अपने आपको पूर्णता की ओर अग्रसर करने की
क्रिया होती है। यह दीजहीन शिष्य बनने की क्रिया नहीं है।
तुम्हे तो एक ऐसा विस्फोट करजा है कि जीवन अद्वितीय बन
सके।

■ मैं उस प्रकार का गुरु नहीं हूँ कि तुम्हें उपदेश देकर
चाहता हूँ। मैं तो तुम्हें सही रसने पर अग्रसर करने की क्रिया कर
रहा हूँ; तुम वहीं भी चाहते हो तो भी। मैं तुम्हें घसीट कर उस शर्जन
पर जड़ा करनगा ही जिस पर अग्रसर होने पर पूर्णता प्राप्त हो
सकती है;

■ मैं हजारों सालों में पहुँची बार एक नवीन तेजना दे रहा हूँ
एक नवीन ज्ञान दे रहा हूँ, नवीन भावना दे रहा हूँ कि इस बार तुम्हें
रुकना नहीं है, मोह में नहीं पड़ना है इस बार महाह से टकराना है
दिमालध से उकाना है। इस बार मैं तुम्हें उस घटिया रास्ते पर बढ़ने
की नहीं दृग क्षमोक्ति मैं तुम्हारे पूर्ण रास्ते पर शुभ तर रहा हूँ।

■ तुम्हारा मेरा संबंध इस जीवन का नहीं है पूरे
पच्चीस जन्मों का संबंध है, और पिछले पच्चीस जन्मों से
तुम्हारी बागडोर मैंने उपने हाथ में पकड़ सकी है।

भगवान कहां रहते हैं?

जब भगवान ने सृष्टि की रचना के तो उन्हें यह सृष्टि स्वर्ग से भी सुन्दर लगी और उन्होंने यह निश्चय किया कि मैं पृथ्वी पर ही रहूँगा लेकिन कुछ दिन पृथ्वी पर रहने के बाद भगवान के सामने कई समस्याएँ आ गईं। वे एक क्षण के लिए भी सो नहीं सकते थे। क्योंकि हर समय कोई सकेगे। न कोई व्यक्ति अपनी समस्या लेकर आ जाता था और भगवान उनकी समस्याओं का समाधान करते-करते परेशान हो गए। मनुष्यों ने भगवान को शान्ति से नहीं रहने दिया। विशेष बात यह थी कि अपनी समस्याओं के अलावा लोग भगवान को सुझाव और सलाह भी देते थे कि किस प्रकार संसार को श्रेष्ठ बनाया जा सकता है। आपको यह करना चाहिए, अन्ततः भगवान शान्त नहीं रह सके और उन्होंने विचार किया कि मैं यहां से चला जाता हूँ जिससे मुझे शान्ति प्राप्त हो।

इस सम्बन्ध में भगवान ने लोगों के विचार पूछे। देवताओं से पूछा कि मैं कहां जाकर क्युँ नाऊंजिससे कि लोग मुझे खोज नहीं सकें और मैं शान्ति से रह सकूँ। कई लोगों ने कई प्रकार के सुझाव दिये।

एक व्यक्ति ने कहा कि आप हिमालय शिखर पर स्थित माउंट एवरेस्ट पर जाकर विराजमान हो जाओ। वहां कोई नहीं पहुँच सकेगा और आप शान्ति से रह सकेंगे।

इस पर दूसरे ने कहा कि हिलेरी और तेनद्विंग जैसे लोग माउंट एवरेस्ट पर पहुँच जाएंगे और रास्ता बना लेंगे। धीरे धीरे दूसरे लोग भी उसी रास्ते से चलते हुए एवरेस्ट पहुँच जाएंगे। इससे वहां आप एकान्त में नहीं रह सकेंगे।

एक व्यक्ति ने सलाह दी कि आप चांद अथवा किसी शह पर चले जाएं। वहां कोई नहीं पहुँच सकता, इस पर दूसरे व्यक्ति ने कहा कि आने वाले समय में अमेरिका और रूस के यान चांद और अन्य ग्रहों पर भी पहुँच जाएंगे वहां भी आप अकेले नहीं रह सकते।

भगवान समझ नहीं पा रहे थे कि क्या करें और कहां जाकर रहें जिससे वे अपनी योग निद्रा का आनन्द ले सकें।

इसी समय एक सलाहकार आया और उसने भगवान के कान में

कुछ कहा यह भुनकर भगवान अनन्त प्रसन्न

हुए और कहा कि वहां मुझे कोई नहीं खोज सकेगा। उस व्यक्ति ने कहा कि आप मनुष्य के हृदय के भीतर जाकर बैठ जाइए क्योंकि मनुष्य को आपको मदिर, मस्जिद, चर्च इत्यादि में तीर्थ स्थानों पर दृष्टिगत लेकिन खुब के भीतर नहीं जाकेगा।

वास्तव में भगवान और कहीं नहीं मनुष्य के हृदय में ही

निवास करते हैं और वहां दूढ़ने के बजाए मनुष्य जगह-जगह घूमता रहता है।



गुरु तत्वाभिवेक धारक वीडियो

हो

सद्गुरु की महानता है

गुरु अपने भाव से विचार से अनुभूति से बिद्या से शिष्य को सब कुछ प्रदान कर देते हैं, उसे पूरी तरह से शक्ति से समर्पित कर गुरु तत्व से अभिवेक कराते हैं जिससे उसके जन्म जन्मावतार के दोष दूर होकर वह परम तत्व की अनुभूति कर सके। परम तत्व से साक्षात्कार कर सके, इन्हीं सब रिक्तियों के सम्बन्ध में एक शिष्य का आत्मेत्ता, उसकी भावजा

श्री गुरुदेव के चरण कमलों को नमन करते हुए मैं पून्य श्री की महानता के सम्बन्ध में हानिरोग पृष्ठ लिख सकता हूं, मेरा उनसे सम्पर्क, दीक्षा, अनुभूतियां, उनका जान, उनकी महान कृपा इत्यादि सब कुछ तो अनोखा ही है। श्री गुरु जन्म से ही परमेश्वर से साक्षात्कार सम्प्रव है, श्री गुरु कृपा से जब तक द्यमारी अन्नारथक्षि लाश्वत नहीं होती, अन्तर का विद्या जान नेत्र नहीं खुलता तब तक बाह्य कष्ट मिट नहीं सकता। स्वर्ज में विस प्रकार राजा भी अपने आपको भिखारी समझ सकता है, उसी प्रकार भावधारण मनुष्य अज्ञान अवस्था में अपने आपको साधारण और दुखी अनुभव करता है।

अन्तर विकास के लिए, विवरण प्राप्ति के लिए, परम शिव पद पाने के लिए हमें मार्ग दर्शक की या पूर्ण सत्य के साता भद्रगुरु की अत्यन्त आवश्यकता है जैसे प्राण बिना जीवन सम्भव नहीं, उसी प्रकार गुरु बिना जान नहीं, शक्ति का विकास नहीं, अन्तर का जाश नहीं, तीसरे नेत्र का उदय नहीं। गुरु की आवश्यकता तो मित्र से, पत्र से, ब्रह्म से, पत्नी से भी अधिक है। गुरु की आवश्यकता धन-सम्पत्ति कल कारखानों कला और संगीत से भी अधिक है, गुरु की आवश्यकता तो आरोग्य और प्राण से भी ज्यादा है। गुरुदेव ही तो शिष्य के अन्तर शक्ति का विकास करते हैं, पून्य श्री

गुरु शिव भास्त्र में आकर अपनी शक्ति को शिव्य के भीतर प्रवाहित करते हैं, सर्व प्रथम उस शक्ति बीज का रोपण करते हैं और उसके बाद उस शक्ति दृष्टि को पूरी देह भन, प्राण में व्याप्त कर देते हैं। गुरु इस शक्ति दीक्षा प्राप्त करना अपने पूर्व जन्मों के दोष को दूर कर इस जीवन को पूर्ण आनन्दमय बनाना है निःसंसे जीवन के प्रत्येक क्षण में आहत्याद प्राप्त हो सके। शिव्य के रोप-रोप में जब गुरुत्व समाहित हो जाता है तो शिव्य प्रेम प्राप्त हो जाता है, उसे जीवन में जीवन शक्ति प्राप्त होती रहती है।

की महिमा तो रहन्यमय और विद्य है।

संसार में गुरु बहुत होते हैं, हर कोई अपना जन्म बनाता है, साधारण जनता ऐसे गुरुओं से थक गई है, जब कि ऐसा नहीं होना चाहिए।

गुरु वह है जो शिव्य की अन्तर शक्ति जगा कर उसे आनंद आनन्द में रमण करता है, जो शक्तिपात छारा अन्तर शक्ति की कुण्डलिनी जगाता है, योग की धिक्षा देता है, जान की भूली ढेता है, भक्ति का प्रेम देता है, कर्म में निष्कामता खिला देता है, वह परम गुरु शिव स्वरूप है। वे ही खदगुरुदेव शिव, राम, शक्ति, गणपति और माता-पिता हैं। गुरु के प्रसाद द्वारा नारायण स्वरूप बन कर आनन्दमग्न हो जाता है।

पूर्ण गुरुदेव की महिमा तो महान है जिसे साधारण लोग ने यादङा नहीं जा सकता है। गुरुदेव तो संसार के नियमों को तथा अद्युप के नियमों द्वारा को भली भांति समझते हैं अतः शिव्य को कभी भी गुरु के सामने संयाना बन कर परीक्षा लेने का प्रयत्न ही नहीं करना चाहिए। पूर्ण गुरुदेव तो अपने भूतों को घर बैठ ही विशेष अनुभूतियां करा देता है। कृष्ण मात्र ने जान दृष्टि करा देने हैं, पूर्ण श्री में ज्ञान योग, भक्ति योग और कर्म योग का पूर्ण समन्वय है, वे नद्यकश्मल योगी होने पर भी भड़ा सादे और साधारण मानव जैसे रहते हैं। वे पूर्ण वर्वज होने पर भी अनजाने जैसी लिंगिति में रहते हैं, उनके भीतर सिद्धियां सड़ज ही निवाप्त करती हैं, शिद्धियां न जानने पर भी अपने आप क्रियाशील हो जाती हैं,

उनके पाल सिद्धियां नृत्य करती हैं शक्तियों का निवास है, ऐसे शिद्ध योगियों के कारण ही तो पृथ्वी विद्यमान है।

पूर्ण गुरुदेव का गुरुत्व इतना पूर्ण है, कि उनका समरण करने से, यश गान करने से, आरती करने से और उनके विद की ओर देखने से ही शक्तिपात हो जाता है। जब तक सूर्य बन्द हैं, पूर्ण गुरुदेव का दर्शन बनातन नित्य बना ही रहेगा।

साधारण मनुष्य को तो जो भी व्यक्ति चमत्कार दिखाता है, वह उसे ही गुरु मान लेता है, और इस तरह उनका नेक गुरु बना लेता है, उसके अन्तर की क्षुधा शान्त नहीं होती, और जब अच्छा भग हो जाती है तो गुरुत्व को ही पाखण्ड समझने लगता है, ऐसा करने से वह सब्जे गुरु से दूर रह जाता है और उसकी अवहेलना करता है। पूर्ण श्री में जो गुरुत्व विद्यमान है वह सहन स्वरूप है।

पूर्ण गुरुदेव तो पूर्ण है, शिष्यों के निन्तक हैं शिष्यों की चिन्ताएं गुरुदेव की चिन्ता है, वे कठिन तपस्या बिना ही शिव्य को आत्म साक्षात्कार करा देते हैं, घर में ही दिमालय की शान्ति और एकान्तरा अनुभव करा देते हैं। श्रीगुरुदेव शिव्य को इस संसार में गृहस्थ में रहते हुए भी उसके साधारण से जीवन को भी विद्य जीवन बना देने हैं, ऐसे गुरु के बिना शिव्य मले ही किन्तु ही दीक्षाएं ले ले, पहाड़ जंगल इत्यादि में भटक जाएं और जब वह निरन्तर हो जाता है तब उपने भाष्य और कर्म के नाम से रोता चिल्लाता है। इस प्रकार वह चिन्ता ही चिन्ता में समाप्त हो जाता है।

जब गुरुदेव साक्षात्कार करते हैं तभी शिव्य को गुरु की महानता का ज्ञान होता है, पूर्ण गुरुदेव तो अपने शिष्यों को एक ऊंचे स्तर पर ले जाकर साथ स्वरूप बता कर शिवत्व का अनुभव कराते हैं। उसके जीवन को पूर्ण रूप ने बदल देते हैं, पीड़ा तथा दुःख से भरे जीवन को नया जीवन प्रदान करते हैं, उसे संसार में ही पूर्णत्व की प्राप्ति करा देते हैं। जिस प्रकार उल्लू दिन में नहीं देख सकता भीर कीआ रात्रि में नहीं देख सकता भवकि नेत्र उसके विद्यमान रहते हैं, वैसे ही साधारण मानव पूर्ण गुरुदेव का गुरु प्रसाद प्राप्ति बिना संसार को स्वर्गमय नहीं देख सकता, केवल दुःखमय और शोकमय ही देख सकता है।

पूर्ण गुरुदेव मन्त्र चैतन्यकारक, मंत्र द्रष्टा, शक्तिपात कुशल हैं, उनमें शक्ति संचार की विशेष सामर्थ्य है और सबसे महत्वपूर्ण बात तो पूर्ण श्री में 'पारमेश्वरी अनुगामिका

शक्ति का पूर्ण रूप से निवास है, पूज्य गुरुदेव अपने कृपा प्रसाद से बोगमाया महाकुण्डलिनी का जागरण कर अन्तर के सारे दोष समाप्त कर कृण्डलिनी चिति शक्ति को पूरे शरीर में संचालित कर देते हैं, इसीलिए शशीर मांसमय दिखने पर भी पूर्ण चित्तिमय होकर ही रहता है और इसी शक्ति विनास की आनन्द मस्ती में पूज्य गुरुदेव नित्य प्रेमानन्द में दूबे रहते हैं।

अब प्रश्न है कि शिष्य गुरु में क्या देखें? जो गुरु अपने शक्ति रूप में शिष्य में प्रविष्ट हो जाने हैं, उसके पापों को, दोषों को समाप्त कर देते हैं, ऐसे पूज्य गुरुदेव के प्रतिविन का अनुभव, उपकार, दया हो, उनके प्रति केसा व्यवहार हो, जो अन्तर के मल की जला कर योगाधिन में देढ़ को शुद्ध करन बना देते हैं, ऐसे गुरु के समान मित्र, प्रेमी, माता-पिता, देवता कीन हो सकता है, क्या इनकी महिमा शब्दों में गाँड़ जा सकती है?

मुझ आनन्द स्वामी के तो सब कुछ परम पिता देवता ध्यान धारणा समाधि आप ही एक मात्र निखिलेश्वरानन्द हो, प्यारे आनन्द हो, क्या मैं केवल आपकी आरती जा कर आपके उपकार को चुका सकता हूँ? नहीं! प्रसु गुरुदेव आप महान हैं, आपकी पूजा ही मेरे लिए सब कुछ है, मेरे भीतर बढ़ने वाला प्राण भाव है आपका दीक्षा मंत्र मेरे लिए सब कुछ है, ध्यान मंत्र है, यहाँ पूँछहुति है।

मेरे आपके दिये शब्द ही चैतन्य मन्त्र हैं, आप चित्तिमय परमगुरु मंत्र द्वारा, स्पृश्य द्वारा, दृष्टि द्वारा शिष्य में प्रवेश करते हैं, इसीलिए तो मेरे लिए गुरु सहवाल, गुरु सम्बन्ध, गुरु आश्रमवास, गुरु चरण स्पर्श, गुरु तीर्थावान, गुरु प्रसाद, गुरु सेवा, गुरु गुणगान, गुरु प्रेमोन्मत्त लिंगिति में श्रीमुख से बहने वाले चिति स्पन्दनों का सेवन, आप द्वारा पहने ओढ़े वस्त्रों का स्पर्श और आपके शरीर से निकलती हुई आशमवी किरणों मुझे पूर्ण सिद्धि प्राप्त करा देने में पूर्णत, समर्थ है। इनमें कोई आश्चर्य नहीं, आपकी महिमा तो महान ही महान है। दीक्षा काल में गुरु शक्ति ही शिष्य में प्रवेश करती है, यह बीज के रूप में शिष्य में प्रविष्ट होकर उसको नाता प्रकार की योग किया जानी को सम्भव करती है, जब शिष्य पूज्य गुरुदेव का स्मरण करते हैं, तन्मयता के भाव में ध्यान के लिए आसन पर बैठ कर शान्त भाव से गुरु मंत्र का पुरश्चरण करता है तब मंत्र रूप में गुरुदेव ही अन्तर कियाशील हो जाते हैं। उस समय शिष्य नाना प्रकार के आसन, दुकार,

नत्य, मंत्र धोष तथा मुद्राएं आदि करता है, आहर से कोई सामान्य व्यक्ति देखे तो उसे यह सब अति विचित्र और अव्युक्त लगता है, परंतु सच्चा शिष्य नहीं दरता, इन किया जाने से एक प्रकार का मस्ती और आनन्द की अनुभूति करता है। ये सभी कियाएं कुछ राम योग की, कुछ हठ योग की, कुछ मंत्र योग की और कुछ शक्ति योग की है।

दिन प्रति दिन शिष्य विनास गुरु भक्ति को ज्ञाता जाता है, उसी अनुपत्ति में गुरु को अपने भीतर प्रवेश कराता जाता है, जिनना गुरु में तन्मय होकर मिलता है, उत्तमी ही उच्च से उच्च कियाएं, अद्युत घमत्कार जैसे आसन, दूरदृष्टि, दूरश्वरण सहज ही प्राप्त हो जाते हैं।

जो शिष्य कभी अपने हृदय की मलौनता के कारण पूज्य गुरुदेव के व्यवहार राम-छेष और अन्य नोंगों को देखन लगते हैं तो यह याद रहे कि उनके भीतर की शक्ति प्रक्रिया उतनी ही मन्त्र हो जाती है। शिष्य को गुरु के आचरण की, गुण दोष की, व्याख्या करने का कोई अधिकार नहीं है।

पूज्य गुरुदेव का आचरण कभी-कभी मेरे प्रति बड़ा ही विचित्र हो जाता था, कई बार मैंने उनके छाथों भार खाइ, उनके चरणों का प्रसाद मिला, लंकिन इसमें भी कुछ करण था, पूज्य गुरुदेव का आचरण यिन्हें भवायोगी नैना आचरण रहता है, के साधारण जीवन में भी अनियाधारण रहते हैं, ऐसे महान गुरुदेव से हर कोई मांजता है और हर एक को कुछ न कुछ प्रदान करते रहते हैं।

मेरे प्रिय मित्रों, यह याद रखो कि प्रकृति में चाहे परिवर्तन हो जाए एक बार गुरु कृपा हुई तो वह व्यर्थ नहीं जाती, यह कृपा शिष्य के साथ जन्म जन्मान्तर रहती है, जो मन्त्र तुम्हें गुरु श्रीमुख से मिला है उसे पूर्ण श्रद्धा से परम सत्य निष्ठा से जप करो। मंत्र, गुरु शक्ति और तुम एक ही, इस बहत की कभी मर चूलो। मंत्र में पूज्य गुरुदेव मूर्तिमान बोकर आवास करते हैं। इसीलिए गुरु मंत्र को ग्रह से जाओ, स्नोह से ध्याओ, शक्ति तो विशुद्ध वेग से तम्भारे लिए कार्य करेजी ही करेगी। मेरे मित्रों! मुझे गवं करना गुरुदेव ने ही जिखाया, स्वाभिमान, साधना की शक्ति उन्होंने ही प्रदान की, मैं पूज्य गुरुदेव से उतना ही निकट हूँ जिनना गुरु आश्रम में बैठे शिष्य अद्यवा कहीं और स्थान में गुरु मंत्र का जप करता हुआ उनका शिष्य। आओ इम सब मिलकर प्रार्थना करें, हमारे इस जीवन के धन्य बना देने वाले पूज्य गुरुदेव को शत् शत् नमन करें।

सिरपत्र संस्कृत तत्त्वाभिषेक महाकीर्ता

प्रमोटर के नाम-

१. नाम-

पुरा पता-

२. नाम-

पुरा पता-

३. नाम-

पुरा पता-

४. नाम-

पुरा पता-

५. नाम-

पुरा पता-

उप यशस्वी साधक का नाम जिसने पात्र सदस्य बनाकर दीक्षा में भगवन्ने की पातला प्राप्ति की है।
नाम-
पुरा पता-

विशेष: जो साधक यतिका के पात्र नए सदस्य (जो आपके परिवार जन न हो) बनाएँगा, उसे ही यह 'निखिल शालि तत्त्वाभिषेक महाकीर्ता' उपहार सदस्य निश्चय की जायेगी। पात्र यित्रों के पूर्ण प्राप्तिक पते, जिन्हें आप पत्रिका सदस्य बनाना चाहते हैं, इस प्रपत्र में लिखकर जीधगुरु के पते पर भेज दें।
प्रपत्र के साथ संपत्ति $1250/- \times 280/(195+8\%) = 280 \times 1/1.195 = 235.7$ का बैंक ड्राफ्ट या मनो ऑर्डर की रसीद प्रपत्र के साथ दें या जिससे कि आपका द्यावन इस महत्वपूर्ण समारोह हेतु आरोपित किया जा सके।

सम्पर्क

मंत्र-तंत्र-यंत्र विज्ञान, डॉ. श्रीमाली माझ, हाईकोर्ट कॉलोनी, जोधपुर 342001, (राजस्थान)

फोन (Phone) - 0291-432209, 433623 टेलीफॉक्स (Telefax) - 0291-432010

सिद्धाश्रम, 306 कोहाट एन्कलेय पीतमपुरा, नई दिल्ली-34 फोन 011-7182248,

टेली फैक्स: 011-7196700

साधना में क्या आवश्यक

चीन के महान् संत लाओत्से के पाण्य वहाँ के राजा ने अपने पुत्र को जान प्राप्ति के लिए भेजा। राजकुमार ने वहाँ नाकर देखा कि लाओत्से एक बरगद के वृक्ष के नीचे बेटे कुछ ध्यान कर रहे हैं। राजकुमार योड़ी देह खड़ा रहा और उनके आंख खुलने का इनजर करने लगा। जब संत ने आंखें खोली तो राजकुमार ने प्रणाम करके उन्हें अपना परिचय दिया। संत ने कहा कि तुम एक राजपुत हो और तुम्हें राज्य कार्य सम्भालना है तुम यहाँ किस लिए आए हो? राजपुत ने कहा कि मेरे पिता ने आज्ञा दी है कि मैं

आपसे पूर्ण ज्ञान प्राप्त करूँ।

जिससे मैं राज्य कार्य भली-भांति चला सकूँ। प्रजा कि देखभाल कर सकूँ और अपने राज्य का विस्तार कर सकूँ।

इस पर संत ने कहा कि सबसे पहले तो इस पेड़ पर चढ़ो। बरगद का वह वृक्ष करीब ५०-६० फुट ऊँचा था। राजकुमार उन पर तीव्रता से चढ़ने लगा। जिस प्रकार से वह चढ़ रहा था, उसे देख कर संत समझ गए कि इसे चढ़ाई का ज्ञान नहीं है लेकिन संत कुछ बोले नहीं। जब राजकुमार वृक्ष की सबसे ऊँची योटी पर पहुँच गया तो संत ने कहा कि अब नीचे उतरो, और उस समय वह भी बोला कि सावधानी रखना, राजकुमार को बड़ा आश्चर्य हुआ कि जब मैं चढ़ रहा था तो संत ने सावधानी रखने के लिए नहीं बोला लेकिन अब जब मैं नीचे उतर रहा हूँ तो संत मुझे बार-बार सावधानी से उतरने का कह रहे हैं, यह कैसी शिक्षा है।

फिर भी वह आज्ञा मान कर नीचे उतरता गया। और जब नमीन से केवल १० फुट रह गया तो संत ने कहा कि एकदम सावधानी रखना और बिल्कुल धीर-धीरे उतरेना, लेकिन राजकुमार देखा कि अब नो जमीन १० फुट नीचा हो है वह एकदम कूद पड़ा और उसके पैर को चोट लग गई। उसने संत से प्रश्न किया कि जब मैं चढ़ रहा था तब आपने सावधान नहीं किया और जब मैं उतर रहा था आप मुझे बार-बार सावधान कर रहे थे। इसका क्या कारण है?

संत ने शांत भाव से उत्तर दिया कि जब तुम मेरे पास आए। और मैंने तुम्हें जो आज्ञा दी उसका तुमने पूर्ण रूप से पालन किया। लेकिन उत्तरते समय तुम्हें यह अभिमान हो गया था कि जब आसानी से चढ़ सकता हूँ तो उत्तर भी आसानी से सकता हूँ लेकिन मैंने तुम्हें सावधान रखने कि सलाह दी थी। तुमने उसका पालन नहीं किया, और इस कारण तुम्हें चोट लगी।

वास्तव में कोई भी कार्य को करते समय प्रथम स्थिति में जितनी अधिक एकाग्रता की आवश्यकता होती है उस से अधिक एकाग्रता की आवश्यकता कार्य के अंतिम पदाव में भी होती है, और जब वह एकाग्रता टूट जाती है तो कार्य पूर्ण नहीं हो पाता है। अतः कोई भी कार्य करते समय व्यक्ति का ध्यानचित्त पूर्ण रूप से एकाग्र होना आवश्यक है साधना करते समय भी प्रथम बार मंत्र जप करते समय जितनी एकाग्रता आवश्यक है उतनी ही एकाग्रता अंतिम मनके का मंत्र जप के समय भी आवश्यक है नभी साधना में सफलता प्राप्त हो सकती है।



परमात्मा साकार निराकार स्वरूप है

एक दिन एक शिष्य ने अपने गुरु से प्रश्न किया और यह जानने की इच्छा व्यक्त की कि आप मेरे गुरु हैं। स्वर्ग की कोई बार यात्रा कर चुके हैं। स्वर्ग के आपके अनुभव क्रम में हैं और वहाँ आपने क्या देखा है? उस ज्ञान को मुझे भी बताएं। नियम्ये में लाभ प्राप्त कर सकूँ। गुरु शिष्य की बात को ठालते रहे लेकिन शिष्य अपनी बात पर जिय करता रहा। आखिरकार एक दिन गुरु ने स्वर्ग के संबंध में अपना अनुभव वर्णन कर दी दिया।

गुरु ने कहा कि जब मैं वहाँ गया तो देखा कि एक दिन स्वर्ग के पथ पर बहुत बड़ा धार्मिक जलूस जा रहा है और उसके द्वीपों बीच एक सुन्दर सुसज्जित धोड़ पर नज़र आदमी बैठा है उसका चेहरा इतना अधिक आभासान था कि मैं उसके बारे में पूछने से अपने आपको रोक नहीं सका। मैंने नृत्य कर रहे एक व्यक्ति से पूछा कि ये महान व्यक्ति कौन हैं उस व्यक्ति ने आश्चर्य से मुझे देखते हुए उत्तर दिया कि इन्हे नहीं जानते ये महावान महावीर हैं।

श्रीदा आगे जाने पर मैंने एक और जलूस देखा, उसमें भी यही स्थिति थी लोग नृत्य कर रहे थे और धोड़ पर एक सुन्दर व्यक्ति बैठा था, अपने आप में पूर्ण शान्त था,

मैं देखते ही पहचान गया कि यह जिससे काढ़ा है।

आगे जाने पर एक और जलूस देखा जिसमें जलूस के मध्य में पेगन्बर मोहम्मद साहब थे।

उसी प्रकार आगे दूसरी जलूस में बूल की देखा और देखा कि हर रास्ते पर कोई जलूस जा रहा है उसमें महान व्यक्ति विश्वनाथ है।

अन्त में मैंने देखा कि एक अन्यन्त विशाल जलूस जा रहा है, लोगों की

संख्या भी अधिक थी, उसके मध्य

में चल रहा धोड़। भी विशेष

रूप में सज्जित था लेकिन

सबसे बड़ा आश्चर्य यह

था कि उस पर कोई

सवार नहीं था लेकिन

उसके बावजूद चारों

ओर लोग ज्यादा थे

उत्साह ज्यादा था, मैंने

आश्चर्य से पूछा कि

आप सब लोग नृत्य कर

रहे हैं लेकिन धोड़ पर तो

कोई बैठा ही नहीं है तो

किसके लिए यह नृत्य कर रहे

हैं? इस पर उस व्यक्ति ने कहा कि

इन्हे नहीं जानते यह निराकार परम पिता

परमात्मा है जो हर समय, हर स्थिति में रहते हैं और

इनके रूप रंग का कोई वर्णन नहीं कर सकता है।

वास्तव में परमात्मा एक ही है संसार में, समय-

समय पर उत्पन्न हुए महान व्यक्ति उस परमात्मा का

ही स्वरूप है।



स्वयं की शोष

एक छोटे से गांव में शंकर नाम का एक व्यक्ति रहता था। मां-बाप कुछ धन, दीनत होड़ कर गये थे और बचपन में ही उसकी शारीरी कर दी थी, मां बाप के देहावसान के बाद गांव वाले शंकर की पत्नी को घर ले आए। शंकर की पत्नी ने घर में लेवा कार्य बहुत अच्छी तरीके से किया और उसने देखा कि वाकी सब स्थिरों को परिकरने हेतु सुबह घर से बाहर निकलते हैं और जाम को घर आते हैं लेकिन अकर दिन भर घर ही पढ़ा रहता बार-बार कहने पर वह घर से निकलने लगा लेकिन

काम-धाम तो कुछ करना नहीं
यार दोस्तों के पास गपशप
में समय बिताकर वापस
आथों रात के बाद घर
आ जाता। पत्नी पूछती
क्या करकर लाए हों
तो शंकर से कोई
जवाब नहीं चाहता।
धीरे-धीरे शंकर के
घर के लगड़े और
आनन्दीपन की बात
पूरे गांव में फैल गई।
वह कुछ काम धाम नहीं
करता था। कुछ भी कमा कर
नहीं लाता था। इस कारण उसकी
पत्नी और परिवार वाले अत्यंत दुःखी

हो गए। उसकी पत्नी ने कई बार चेतावनी दी कि
यदि तुमने अपनी आवानी पर नियंत्रण नहीं किया तो तुम्हें
इसका भयंकर परिणाम भुगतना पड़ेगा लेकिन शंकर ने
कुछ भी नहीं सुना। शंकर ने सोचा कि पत्नियों की बक-
बक करने की आडत है, ऐसे ही बक-बक कर रही है
इसकी क्या परवाइ करनी पर जीवों की जब कोई आता है

आलमान पर चढ़ जाता है।

ऐसे ही एक दिन देर रात को जैसे ही शंकर घर में
घुसा उस समय उसकी पत्नी स्थावित्री का मारा आसान
पर चढ़ा हुआ था और वह एक चाकू लेकर तैयार खड़ा
थी, जैसे ही शंकर आया उसने चाकू से उसका नाक
काट दी, और नाक कट कर जमीन पर घिर पड़ी, शंकर
अत्यधिक पीड़ा से चिल्लाने लगा और बोला कि अब मैं
नाक के बगेर दुनिया में अपना मृदू कैसे छिखा जाए,
उसकी पत्नी ने उत्तर दिया कि अब यह

तुम्हारी समझ्या है मैंने बहुत सहन
कर लिया है और जब मेरी यह
गति सीमा से बाहर हो गई
है तो मैंने वह कदम उठाया
है।

शंकर के लाभने
बड़ी ही विचित्र स्थिति हो
गई क्योंकि उसे मालूम
था कि मैं जहाँ भी जाऊँगा
लोग मुझे नाक के बारे में
ही प्रश्न पूछेंगे। उसने
भी चाहा कि एक ही उपाय है
कि मैं यह शहर ही छोड़ कर
चला जाऊँ, दूसरे शहर में ना
तो लोग मुझे जानते हैं और न ही
ऐसी विचित्र स्थिति आएगी। लेकिन शंकर
की समझ्या का समाधान नहीं हुआ, जिस गांव में
भी जाता लोग उससे उसके नाक के बारे में ही पूछते हमसे
वह अत्यंत दुःखी हो जाया और विचार करने लगा कि इस
समझ्या का क्या नमाधारन किया जाए। एक विचार उसके
मन में आया और वह एक रात्रि को गांव छोड़ कर कई दिनों
की यात्रा कर एक दूरस्थ प्रदेश में पहुंच गया कई दिनों की
यात्रा के कारण उसकी दाढ़ी भी बढ़ गई थी वह उस गांव के

इस उत्तर में भाष्य, महात्मा, ज्ञानी अपने जीवन को जया लक्ष्य ऐसे हुए ब्रह्म शिरि के आत्म साक्षात्कार करने द्वारा साधना तपस्या एकान्तवास इत्यादि भी करते हैं और जब उन्हें आत्म ज्ञान हो जाता है तो उस ज्ञान को ज्ञ-ज्ञ में अंटने द्वारा तथा जनता में चेतना देने हेतु ध्यान का अनुष्ठान करते हैं। उन्हें पीछे यही भावना होती है कि संसार में एक आध्यात्मिक चेतना का विकास हो और मनुष्य को उन्हें भौतिक दुखों से मुक्ति प्राप्त हो, इसके हिए किसी विशेष प्रकार की वेशभूषा अथवा कोई विशेष उच्चना आवश्यक नहीं है। ज्ञान तो चैरुरे के तेज में ऊलक जाता है और धार्ताविक ज्ञान की गठन करने वाले व्यक्ति भी मिल जाते हैं। मन में छुड़ भावना होनी चाहिए और इसके साथ ही अपने आप की उद्देश ईश्वर का अनुचाहित ही मानना चाहिए तभी हृदय में स्थित उद्देश की प्राप्ति हो सकती है।

बाहर आये मूढ़ कर पश्चात्यान की मुद्रा में बैठ गया जिस प्रकार संत, साधु ध्यान लगाकर बैठते हैं, उन्हें देखने के लिए गांव के कई लोग आप और ध्यान मुद्रा में बिना नाक का साधु के बुकर लड़ा आशय हुआ। अस्तिरकार एक व्यक्ति ने हिमत करके पूछ ही लिया कि हमने आप जैसा विशेष संत नहीं देखा है और आपने अपनी नाक क्यों काट ली है?

इस पर शंकर ने शात भाव से उत्तर दिया कि मैंने ईश्वर को प्राप्त कर लिया है, और उसके लिए नाक एक दीवार था इस कारण मैंने नाक काट दी है अब मझे हर समय ईश्वर उठने होते रहते हैं।

यब व्यक्तियों को यह सुन कर बड़ा ही आशय हुआ तब उन्होंने गंकर से निवेदन किया कि आप परमज्ञानी संत हैं इसे उपना शिष्य बना लें जिससे हम भी ईश्वर दर्शन कर सकें और आप द्वारा प्राप्त ज्ञान से जीवन में आनन्द प्राप्त कर सकें।

इस पर शंकर शांत भाव उत्तर दिया कि ईश्वर प्राप्ति का केवल एक ही उपाय है कि तुम्हें अपनी नाक को काटना पड़े। जब तक यह बोच में है तब तक ईश्वर दर्शन सम्भव

हो नहीं है, सब व्यक्तियों को यह विचार बड़ा ही अनीव लगा लेकिन इस संसार में मुख्यों की भी तो कमी नहीं है उनमें से एक व्यक्ति जारे आया और बोला मैं ईश्वर दर्शन और ईश्वर कृपा तथा पूर्ण ज्ञान प्राप्त करना चाहता हूँ मुझे अवधर प्रवान करें।

शंकर जो अब स्वर्गीय शरणद हो गए थे, उस व्यक्ति को एक कान में ल गए तथा उसकी नाक काट दी, नाक कटते ही वह दर्द से चिल्लाया लेकिन उसके उपरत भी उसने कहा कि महाराज भगवान् कहा है इस पर शंकर ने कहा कि नाक काटो और भगवान् का कोई नाबंध नहीं है लेकिन अब तुम लोगों को यह जाकर बोलोगे कि तुमने भगवान् को नहीं देखा है तो लोग तुम पर डसेंगे और मूर्ख भी कहेंगे। जल्द उन्नत यहाँ है कि स्वर्बके सामने जाकर यही कहो कि मैंने ईश्वर दर्शन दे ईश्वर प्राप्ति कर ली है।

उस बेचारे ने आजा का पालन किया और सूद कि इन्जत बचाने के लिए गांव के भव लोगों को यहीं कहो कि उन्हें पूर्णत्व प्राप्त कर

लिया है।

धीरे-धीरे इस बात को बच्चों पर गांव में फैल गई और नाक कटाने वालों की लाझन लग गई हर नाक कटा हुआ व्यक्ति दूसरे व्यक्तियों को यहीं कहता कि उसने ईश्वर प्राप्ति कर ली है और सबसे लड़ी जान यह है कि सामान्य व्यक्ति जैसे ही किसी नाक कटे व्यक्ति को देखते उसे झुककर प्राणम करते, सेवा करते, अब, बरत देते और इस प्रकार यह एक पंथ रखा जान गया।

वास्तव में संग्राम में ज्यादातर व्यक्ति दूसरे व्यक्तियों की वेश भूषा आदि देख कर प्रभावित हो जाते हैं और उसी के अनुसार असत्य बोलने लगते हैं। जब कि वास्तव में ईश्वर प्राप्ति जीवन में सफलता आत्म ज्ञान द्वारा स्वयं के जान ग्राता ही संभव हो पाती है। अंधविश्वासी का पालन करने से ज्ञान प्राप्त नहीं हो सकता है। इसलिए जो भी देखते, सुने उसे स्वयं समझें और अपने ज्ञान के अनुसार अनुसरण करें।



अष्टभुजा काली शक्ति साधना

शक्ति, संकल्प, बाधा शान्ति साधना

शक्ति साधना के इस वर्णन में काली स्वरूप की साधना आवश्यक एवं महत्वपूर्ण है और उनमें भी सबैशेष स्वरूप अष्टभुजा काली का है, बाधाओं को शान्ति हेतु यांड वह कितनी ही विशेष कर्त्त्वों न हो, अष्टभुजा काली साधना शीघ्र फलदायी रहती है, अष्टभुजा देवी के आठ दशों में आठ शस्त्र-शंख, चक्र, गदा, कम्ब, गूमल, अङ्कुश, पाण और वड़ धारण किये हुए हैं।

काली की साधना जीवन में बाधाओं की पूर्ण शान्ति सहित दुष्ट ग्रहों के दुष्प्रभाव शान्ति, भूत-प्रेत दद्य बाधा शान्ति उत्तु करना आवश्यक कानी तो शक्ति की विकासन एवं न्यूट स्वरूप है।

इस साधना के नियम तीन पद्धतें की विशेष आवश्यकता रहती हैं।

१. अष्टभुजा काली यंत्र, २. उद्घेश्वरी चक्र, ३. आठ कपाल कोटि चक्र बीज।

उपरोक्त तीनों सामग्रियों का अनुसार प्रयोग करना है।

अपने सामग्रे लाल वस्त्र विद्या कर सब से पहले अष्टभुजा काली यंत्र रथापित करें, ध्यान रहे कि केवल सिन्हूर और काजन में ही पूजन जरूर है साधक को लाल वस्त्र धारण कर उत्तर दिशा को ओर मुंह कर आसन विद्या कर भावना नम्पत्त करनी चाहिए, साधना के पूरे समय तेल का दीपक जलने रहना चाहिए।

साधन में प्रयुक्त उद्घेश्वरी चक्र अपने हाथ में ले कर जो बाधा की शान्ति करनी हो, वह संकल्प लेना आवश्यक है, उसके पश्चात् दो भिन्नी के दीपक के बीच में हृष्ण चक्र की रस्त कर काले ऊंचे ने बाधा उना चाहिए और आठ दिशाओं में आठ कपाल कोटि चक्र बीज स्थापित करने चाहिए, विद्यान के अनुसार अष्टभुजा काली साधना में देवी का ध्यान करते हुए आठ माला मंत्र जप आवश्यक है, यह साधना कृष्ण पक्ष में रविवार को प्रारंभ की जा सकती है, पूर्ण साधना में २१ दिन में २१ हजार मंत्र जप आवश्यक है।

मंत्र

॥ ऐ हीं श्रीं कलीं अष्टभुजे कालिके ऐ हीं श्रीं कली॥

मंत्र जप की पूर्णना के पश्चात् उद्घेश्वरी चक्र दीपक सहित धर के बाहर भाड़ दे और उस पर भारी पाशर रख दे तथा जाठों कपाल कोटि चक्र बीज आठ दिशा में पैक दें, इस साधना द्वारा भारी में भारी बाधा की शान्ति शीघ्र ही प्राप्त हो जाती है।

साधना सामग्री-न्यौत्तिकर-२००/-



प्रसन्न लक्ष्मी साधना

यथा, धन, स्वर्ण प्राप्ति की साधना

देवी के महालक्ष्मी स्वरूप में प्रसन्न लक्ष्मी की बद्दना अवश्य करनी चाहिए, यह देवी स्वरूप विज्ञु की शक्ति है, और शीघ्र प्रसन्न ढो कर साधक को अतुल धन प्रदान करने वाली है।

वस्त्रवश्या रहस्य गुन्य जो कि भाष्कर राय द्वारा रचित है तथा शक्ति सिद्धान्त मंजरी गुन्य में लिखा है, कि एक से राजा केवल प्रसन्न लक्ष्मी साधना से ही तथा प्रसन्न लक्ष्मी कृपा से ही संभव है।

यह साधना केवल शब्दल प्रक्ष में ही चतुर्थी से पूर्णिमा तक सम्पन्न की जानी चाहिए, तथा देवी के स्वरूप में लिखा है कि प्रसन्न लक्ष्मी परमलक्ष्याणमयी, शुद्ध स्वर्ण की जामा वाली, तेज स्वरूपा सुनहरे वस्त्र धारण करने वाली, आभृताओं से सुशोभित, अपने हाथों में स्वर्ण छट, स्वर्ण कमल, निष्ठू तथा वर मुद्रा धारण किये हुए विज्ञु की शक्ति है और जो साधक यह साधना सम्पन्न करता है, उसके जीवन में प्रसन्न लक्ष्मी कृपा से धन की वर्षां सी होने लगती है।

इस साधना में तीन वस्तुएँ प्रधान हैं- १. स्वर्णकर्षण लक्ष्मी चक्र, २. प्रसन्न लक्ष्मी महावेच, ३. रत्नवल्प मुद्रिका, इन तीनों पदार्थों का अलग-अलग उपयोग है, जहां चूंब साधना का प्रश्नान तत्त्व है, वहां स्वर्णकर्षण चक्र कार्य सिद्धि का शक्ति तत्त्व है, और रत्नवल्प मुद्रिका अक्षस्मिक धन प्राप्ति की शक्ति तत्त्व प्रसन्न लक्ष्मी फल है।

इस साधना में चतुर्थी के दिन अपने पूजा स्थान में पीला वस्त्र विज्ञु कर, यह समझी स्थापित करें, साधक स्वयं भी पीले वस्त्र धारण करें तथा स्वर्ण आभृत धारण कर पूजा सम्पन्न करें, स्त्री साधिका सुनहरे साड़ी तथा अपने साथी आभृत धारण कर प्रसन्न लक्ष्मी साधना करें।

प्रसन्न लक्ष्मी साधना में देवी का पूजन केवल केसर, इव तथा सुगंधित पूष्पों से करें, साधक पूर्व की ओर मुङ्ड कर अपने सामने सामग्री की स्थापना कर तीन धी के दीपक अवश्य लगाएं।

इस साधना में चतुर्थी से पूर्णिमा पर्यन्त १२ दिन में सबा लाख मंत्र जप आवश्यक है।

मंत्र

॥ॐ ज्ञां श्री धनं महा धनं मे देवतावाधिपते ममान् प्रदापय स्वाहा श्री ज्ञां ॐ॥

प्रसन्न लक्ष्मी महावेच को मध्य में स्थापित कर बांधे और स्वर्णकर्षण लक्ष्मी चक्र तथा दार्ढी और रत्न कल्प मुद्रिका स्थापित करनी है, प्रत्येक के जागे एक-एक धी का दीपक जलाएं, मंत्र जपने समय दीपक बृशने नहीं चाहिए, प्रतिदिन नदे पुष्प लाएं तथा १२ दिन का अनुष्ठान पूर्ण होने पर लक्ष्मी चक्र को पीले कपडे में सिनाई कर गले अथवा बाह पर बांध दें, तथा रत्नकल्प मुद्रिका धारण कर लें। प्रसन्न लक्ष्मी कर्मयोगी साधक पर उसकी शक्ति से, उसकी साधना से शीघ्र प्रसन्न होकर प्रत्यक्ष दर्शन देकर वर स्थिति द्विष्ट फल प्रदान करती है।

साधना सामग्री-नीछावर-२४०/-



दुर्गा स्वरूप दीवारी का प्रकार

दुर्गा के स्वरूप दीवारी और शान्ति दोनों प्रकार के हैं, जहाँ तामसी कार्यों अथात् शब्द बाधा, भूत-प्रेत आदि दोष निवारण के लिए देवी के स्वरूप चण्डिका, काली, प्रत्यंगिणा इन्द्रादि की साधना की जाती है, वहीं विश्वनाथ प्रकार की कार्य सिद्धि, आर्थिक उन्नति हेतु माँ दुर्गा के शान्तिरी स्वरूप की साधना की जानी है, इसी प्रकार जीवन में शान्ति, मानसिल सुख, शुद्धता, परिवारिक उन्नति, कन्या विवाह, पुत्र-पीत्र प्राप्ति हेतु देवी के महागौरी स्वरूप की साधना की जाती है।

अथा शनि, दुर्गा शिव की शक्ति है, महागौरी दुर्गा साधना शिव की साधना के राथ सम्पह करनी चाहिए, और किसी भी सोमवार की साधना की जा सकती है, इस साधना में शिव पूजा हेतु बिल्ल पत्र आवश्यक है तथा महागौरी की साधना हेतु तीन व्यम्बक गौरी रुद्राक्ष, मंछ सिद्ध प्राण प्रतिष्ठा युक्त महागौरी दुर्गा यंत्र तथा रुद्राक्ष बीज माला आवश्यक है।

साधक अथवा साधिका अवैत वरत्र धारण करें, अपने सामने पूजा में प्रदोग आने वाला शिवलिङ जल से धोकर स्थापित करें उस पर (ॐ नमः शिवाय), मंत्र का उच्चारण करते हुए ज्यारह बिल्ल पत्र अर्पित करें तत्परतात महागौरी दुर्गा का ध्यान तथा माहान करते हुए महागौरी दुर्गा यंत्र स्थापित कर कुकुम, केसर अर्जीर, गुलाल, सुगन्ध अर्पित करें तथा महागौरी का ध्यान करते हुए अपने हाथ में जल ले कर नुख, शान्ति शेष वर प्राप्ति, पुत्र प्राप्ति, संतान विवाह, इन्द्रादि का जो भी संकल्प हो, वह बोल कर जल छीं पर छोड़ दें।

अब इककीस बार महागौरी के निम्न आहान मंत्र का उच्चारण करें-

आहान मंत्र

॥ ॐ सर्वमगलमांगलन्ये शिवे सर्वार्थसाधिके शरण्ये व्यम्बके गौरी नाशयणि नमोऽस्तुते ॥

अब इस मंत्र का इककीस बार जप करने के साथ ही महागौरी यंत्र को अपनेहोनो हाथों से एक व्यम्बक गौरी रुद्राक्ष दूध से धो कर अर्पित करें, महागौरी का ओर शिव का संतुक्त फलदायक यह रुद्राक्ष लेनों भीर से उका होता है, तथा महागौरी का भिट फल है, अब साधक देवी को एक कठोर में दृढ़ का भैश्य अर्पित करें तथा मंत्र सिद्ध प्राण प्रतिष्ठा युक्त मूर्ति रुद्राक्ष बीज माला से निम्न बीज मंत्र की पांच माला का जप उसी स्थान पर बैठ कर करें।

बीज मंत्र

॥ ॐ श्री हौं बलीं महागौरी विद्यहे शिवशक्ति धीमहि तत्रो देवी प्रचोदयात् ॥

इस सोमवार के दिन साधक साधिका ब्रह्म अवश्य रखें, ब्रेवल दूध अथवा फलाहार ग्रहण करें, किसी प्रकार का नामसी व्यवहार न करें, अगले दो सोमवार को इस प्रदोग को इसी स्वप में भग्नन करते हुए दूसरा तथा तीसरा व्यम्बक गौरी रुद्राक्ष अर्पित करें, तीन सोमवार के बाद तीनों व्यम्बक गौरी रुद्राक्ष को एक सफेद होरे में बाध्य कर धारण कर लें अथवा अपने अर्जीर के स्पर्श अवश्य कराएं। इस साधना द्वारा कुवारी कन्याओं को इन्द्रानुसारवर प्राप्ति होती है, निःर्गत स धर्मसिद्धों को संतान प्राप्ति होती है, कलह युक्त परिवार में शान्ति स्थापित होती है, महागौरी दुर्गा की शान्ति महिमा तो अपार है।

साधना साधगौरी-व्योमाधार-३३०/-



सब
गतवर्ष सि
सिंह योग
हिन्दूकर

तुला -

प्रतिकृ
अवश्यक
की रसायन
आपको प
प्रसन्नता क
लेकर चित
का समाप्त
२०००)
२१, २२
वृश्चिक
इस म
दो सकार
की सभा
वृद्धता से
हानि होन
स्थान प
आश्वासन
आपके ब
होंगा। इ
संपत्ति क
२३, २
धनु -

या स्वप
रहेगे, उ
अनुकूल
मास के
तथा इ
वाहन।
इस मास
कर सक
१८, १९
मंकर -
आ
जी तो
सफलता

वक्ष्यों की वापी

मेष -

नौकरी पेशा व्यक्तियों के लिए यह समय अलगें अनुकूल सिद्ध होगा तथा उन्हें आप वृद्धि पर ग्रन्तीशन का अवसर प्राप्त होगा। आपारी छोड़ अपर साफेद री करेंगे तो उनके लिए अधिक अनुकूल रहेगा। हम यह व्यय कुछ अधिक लाने की संभवता है, इसलिए व्यय पर नियंत्रण रखने का प्रयास करें। स्टडीबाजी में धन व्यय न करें, हावन उठानी पड़ सकती है। जीवन साथी के साथ सशर्त संबंध बने रहेंगे तथा परिवार में वातावरण उल्लासमय रहेगा। यात्रा करना भी आपके सवारक्ष्य के लिए अनुकूल नहीं। इस माह पूर्ण सफलता हेतु योग्यति साधना (जनवरी - २००१) संपत्ति करें। शुभ तिथियाँ - १, ५, ९, १६, १९, २१, २६, ३०, ३१

वृष्ट -

कार्य हित में कार्य की अधिकता के कारण मानसिक तनाव होगा। परंतु धैर्य से काम ले सका जाएं तो इस पर नियंत्रण रखें। सवारक्ष्य के प्रति भी इस माह जागरूक रहने की कावशक्ति है। प्रेम के क्षेत्र में सफलता प्राप्त होगी तथा यदि काप अविदृढ़ है तो वह समय विवाह के लिए अनुकूल एवं श्रेष्ठ है। घर में मांगलिक कार्य संपन्न होंगे। इस माह आप अवश्य ही बार साधना (मार्च - २००१) संपत्ति करें। अनुकूल तिथियाँ - ३, ६, ९, २०, २८, २२, २४, २७

मिथुन -

वोई नया कार्य का नई परियोजना आरंभ करने के लिए समय बहुत उच्छ्वस है। अन्य आप दूरी निष्ठा से जाने बढ़ेंगे तो नियन्त्रण भी यकलता आपको जात होगी। कार्य हेतु यात्रा भी करनो पड़ सकती है तथा ये यात्राएं भी अनुकूल ही सिद्ध होंगी। स्वास्थ्य पान एवं विडोल ध्वनि वे नहीं तो सवारक्ष्य पर प्रतिकूल प्रभाव पड़ सकता है। आप इस माह सीन्योर्स्मा साधना (जून - २००१) करें। अनुकूल तिथियाँ - १, ८, ११, १४, १९, २३, २६, २७

कक्ष -

इस माह आपको बहु आर्थिक लाभ होगा जहाँ आपका मन प्रसन्न रहेगा। आध्यात्मिक स्तर पर आप विशेष उत्तरता की ओर अग्रसर है तथा इसी ही आपका मनोरथ पूर्ण होगा। परंतु धैर्य न खोए रहें। आपनी साधनाओं में एकाधनता के साथ लगे रहें। काइ जैव समय से बता आ रहा तनाव समाप्त होगा। पुराने मित्रों तथा संबंधियों से बेटे हो सकती है। यह माह यात्राओं के लिए भी अच्छा सिद्ध होगा तथा इन यात्राओं से आपको अध्यात्मिक लाभ होगा। आप इस माह विश्वामित्र लक्ष्मी साधना (जूलाई - २००१) करें। शुभ तिथियाँ - २, ३, ९, १२, १३, १५, २०, २४, २८

सिंह -

बहुत जब समय से चला आ रहा लोई न्यायिक मामला समाप्त होगा जिससे कि आप राहत की सोसाइटी लेंगे तथा अपने के जीवन के बारे में बिना किसी तनाव के योजनाएं बना सकेंगे। परिवार की ओर से आपको पूर्ण योग्यता प्राप्त होगा। कुछ शत्रु बनेंगे लेकिन आपका कुछ बिगड़ नहीं पाएंगे। बाहर प्रयोग करते समय या यात्रा करने समय सावधान रहें। इस माह पूर्ण सफलता एवं अनुकूलता हेतु बोड्डा योगिनी साधना (अगस्त - २००१) करें। शुभ तिथियाँ - १, २, ८, १२, २०, २१, २२, २५, ३०

कन्या -

पिछले कुछ समय से रुली आ रही आर्थिक समस्या का समाधान इस माह अवश्य होगा। आपको आकाशिक धन लाभ हो सकता है। नौकरी पेशा व्यक्तियों वो आप में वृद्धि प्राप्त हो सकती हैं तथा व्यवसायिक व्यक्तियों को आशातीत लाभ हो सकता है। बाज़ार या जर्मीन जावदात के बेचने खरीदने के लिए यह समय अत्यंत ही अनुकूल रखें श्रेष्ठ है। प्रेम प्रसंगों को लकर बदलना होने की सभावना है यस सालके रहें। इस माह आप कमक्क प्रभा साधना (सिताम्बर - २००१) संपत्ति करें। अनुकूल तिथियाँ - ३, ६, ८, ११, १३, १५, १८, २५, २९, ३१

सर्वोर्थी, अमृत, दति पुष्प, हिंपूष्प, रिंदि योग

सर्वोर्थी सिंहि योग १, १५, और २७ जनवरी

सिंहि योग २, ३५, २६, २३, २९ जनवरी

हिंपूष्प कर योग ४ जनवरी, चंद्रपूष्प-१९ जनवरी

तुला -

परिष्कृत परिचयानयों में परेशन एवं तनाव होने की आवश्यकता नहीं। ऐसे रुद्धे तथा सूखबूझ से काम ले। शीर्ष की खलाह लेने की अपेक्षा आपकी समस्य से काम करे। शीघ्र ही आपको एक सुखद नमाचार प्राप्त होगा जिसमें कि आपकी प्रसन्नता के कोई सीमा नहीं रहेगी। माता पिता के स्वास्थ्य को लेकर चिंता ही सकर्न है। घंटन को नेकर चली आ रही समस्य का समाधान होगा। इस माह आप विष्णु साधना (नवम्बर-२०००) संपन्न करें। वेष्ट तिथियाँ - २, ३, ११, १७, २०, २३, २९

वृश्चिक -

इस माह आपके नामने कठु विद्युत परिचयानयों उत्पन्न हो सकती है। कार्य देख में या व्यवसाय में आपको धोखा लेने की संभावना है। अपने कोध पर दूर्जन: नियंत्रण रखें तथा दृढ़ता से उस परिचयति का सामना करें। व्यव्यव्याय या धन हानि होने का भी खतरा है, बपना धन, रूपया जैवर सुखित स्थान पर रखें। नाम में अंत में किसी सामाजिक या आध्यात्मिक आयोजन में भाग लेने का अवसर प्राप्त होगा। आपके सद्बोग के बारें किसी मित्र अथवा संबंधी का हित होगा। इस माह आप गृह प्राण धारण साधना (मार्च-२००१) संपन्न करें। शुभ तिथियाँ - १, ३, ५, १०, १२, १३, १६, २३, २५, २९

थनु -

वाता करते समय सावधान रहे, सामान चोरी हो सकता है या रूपया लिकल राकता है। पूरे माह आप अन्यथिक व्यञ्जन रहेंगे, परंतु आपको जनुष्ठित होगा क्योंकि परिचयान आपके अनुकूल होगा। वाट विवाद में न ही वडे तो अच्छा होगा। नाम के अंत में काफी नमय नमोरेशन तथा यात्रा में निकलेगा तथा इनी व्यञ्जनों के बावजूद एक सुखव अनुभव होगा। वाहन प्रयोग करते समय सावधान रहने की आवश्यकता है। इस माह आप ग्रहण गोचर साधना (नुलाई-२०००) संपन्न कर सकते हैं। विशेष अनुकूल तिथियाँ - १, ४, ६, १०, १३, १८, १९, २२, २४, २०

मकर -

आप फिछले काफ़। समय से अशक्त प्रयास कर रहे हैं तथा जी नोड परीथम कर रहे हैं, इसके बावजूद भी आपको ग्रन्तिकूल सफलता प्राप्त नहीं हो पर रही है। परंतु इस माह अवश्य साम्य

इस मास ज्योतिष के दृष्टि से

इस मास भारतीय ज्योतिष में ग्रन्तिकूल के परिचयान भागपा के अनुकूल होंगे, यहाँ दूसरी जगह के अवश्यक नियंत्रण करने के लिए उपलब्ध होंगे। इस्तु के इस प्रमुख गता का व्यास्त्य प्रतिकूल होगा जिसका प्रभाव पड़ेगा। नियंत्रण में चुक्के होनी तथा शेषर माफ़िया तक रहेगा।

आपका नाथ रहेगा। आप विना निराश हैं, किंतु कार्य में डर रहे, अवश्य ही इन दिनों में आपको सफलता प्राप्त होगी। मन प्रबन्ध रहेगा तथा पश्चिम में भी उल्लासपूर्ण वानवरण होगा। इन माह भैरव साधना (अप्रैल-२०००) करना बेपूर्क होगा। श्रेष्ठ तिथियाँ - २, ८, १०, १४, १३, २२, २४, २६, २७, २९, ३१

मीन -
कोई नया व्यवसाय अभी आरंभ नहीं करें तो हानि उठानी पड़ सकती है। नीकरी पेशा लागो को भी बाहिर कि कार्यालय में किसी विवाद में न पड़े, नहीं तो नीकरी तक चले जाने का खतरा है। कोई विवाद उत्पन्न हो भी जाए तो भव्यम से काम ले। किसी अवालनी नामने में भी कठिनाई नामने भी सकती है परन्तु धैरज से काम लेने तो फैसला आपके भी पक्ष में होगा। इस माह आप कीमारी साधना (मिसम्बर-२००१) संपन्न करें। शुभ तिथियाँ - ५, ६, १०, १३, १७, १८, २१, २६, २९, ३१

मध्य काष्ठके अनुकूल चल रहा है, इसका पूर्ण लाभ उठाएं, अशास्त्रीय सफलता आपको प्राप्त होगी। जो कार्य कर रहे हैं उसमें उत्तमि होगी साथ ही साथ नष्ट सुअवसर भी प्राप्त होंगे। अगर आप उन अवसरों का लाभ उठाते हैं तो शीघ्र बहुत अधिक प्रगति कर पाएंगे। एरिवार में मान्यताके आयोजनों से मन प्रसन्न रहेगा। माह के मध्य में कोई आस्तिक धन लाभ भी सकता है। स्वास्थ्य में अच्छा रहेगा तथा आध्यात्मिक क्षेत्र में उत्तमि बढ़ेगी। साधनाएं संपन्न करने और उनमें सफलता प्राप्त करने का अच्छा समय है। इस माह आप भाज्योदय साधना (नवम्बर-२००१) संपन्न करें। विशेष अनुकूल तिथियाँ - ४, ८, १३, १५, १८, २०, २३, २४, २९, ३०

इस मास के द्रव्य, पर्व एवं त्योहार

23 विसम्बर पौष कृष्ण पक्ष-४	सोमवार	गणेश चतुर्थी
30 विसम्बर पौष कृष्ण पक्ष-११	सोमवार	सहश्री एकावशी
14 जनवरी पौष शुक्ल पक्ष-११	मंगलवार	पूर्णिमा
14 जनवरी पौष शुक्ल पक्ष-११	मंगलवार	मकर राशनान्ती
17 जनवरी पौष शुक्ल पक्ष-१४	शुक्रवार	शाक्यभरी जन्मती
18 जनवरी पौष शुक्ल पक्ष-१५	गुरुवार	पौष पूर्णिमा

किसी
जल ही
जल जल
मुख रम
प्रत्येक वि
जनवरी

१. प्रा

२. मु

३. न

४. प्रा

५. उ

६. ज

७. नि

८. इ

९. र

१०.

११.

१२.

१३.

१४.

१५.

१६.

१७.

१८.

१९.

२०.

२१.

२२.

२३.

२४.

२५.

२६.

२७.

२८.

२९.

३०.

३१.

३२.

३३.

३४.

३५.

३६.

साशक, ताल कथा रामेश्वर सामाजिक के लिए साथ का वह लघु चट्ठा प्रस्तुत है, जो किसी भी व्यक्ति के निवास में उत्तमि का कारण होता है तथा जिन्हें जान कर आप स्वयं अपने लिए उत्तमि का गार्ज प्रशस्ति कर सकते हैं।

नीचे दी गई सारणी में समय को शेष छप ने प्रत्यत दिया गया है - नीचले के लिए आवश्यक जिसी भी तार के लिये, वह यह व्यापार से सम्बन्धित है, जौकरी है सम्बन्धित है, घर में शुग उत्सव से सम्बन्धित है अथवा अन्य किसी भी कार्य से सम्बन्धित है, आप इस शेषता रामेश्वर का उत्साह कर सकते हैं और सकलता का प्रतिशत ११-१२ आपके खाली में भी कहा हो जाएगा।

बहु नुकूर्त का लम्बा प्रत्य: ४.२४ ले ८.०० बजे तक ही रहता है।

वार / दिनांक	श्रेष्ठ समय
शिवार (दिसम्बर 22-23) (जनवरी 5-12)	दिन ०७.३६ से १२.२४-२.४६ से ४.२४ से ४.३० तक रात्रि ०७.३६ से ०९.१२ ११.३६ से २.०० तक
शोमवार (दिसम्बर 23-30) (जनवरी 6-13)	दिन ०६.०० से ०९.१२ तक ०९.१२ से १०.४८ तक ०१.१२ से ०३.३६ से ०६.०० तक रात्रि ०८.२४ से ११.३६ तक ०२ से ०३.३६ तक
मंगलवार (दिसम्बर 24-31) (जनवरी 7-14)	दिन ०६.०० से ०७.३६ तक १०.०० से १०.४८ तक १२.२४ से ०२.४८ तक रात्रि ०८.२४ से ११.३६ तक ०२.००-०३.३६ तक
बुधवार (दिसम्बर 25) (जनवरी 1-8-15)	दिन ०६.४८ से ०६.२४ तक ०८.२४ से ११.३६ तक रात्रि ०६.४८ से १०.४८ तक ०२.०० से ०४.२४ तक
गुरुवार (दिसम्बर 26) (जनवरी 2-9-16)	दिन ०६.०० से ०६.४८ तक १०.४८ से १२.२४ तक ०३.०० से ०५.१२ तक ०५.१२ से ०६.०० तक रात्रि १०.०० से १२.२४ तक
शुक्रवार (दिसम्बर 20-27) (जनवरी 3-10-17)	दिन ०९.१२ से १०.३० तक १२.०० से १२.२४ तक ०२.०० से ०४.२४ तक ०४.२४ से ०६.०० तक ०८.२४ से १०.४८ तक ०१.१२ से ०२.०० तक
शनिवार (दिसम्बर 21-28) (जनवरी 4-11-18)	दिन १०.४८ से २.०० तक ०६.१२ से ०६.०० तक ०८.२४ से १०.४८ तक १२.२४ से ०२.४८ तक ४.२४ से ०६.०० तक



यह भूमि न ही क्षणिति ही है वह कहा है

किसी भी लोगों द्वारा ग्राम करने से पूर्व प्रधान अधिकरि के मान में लोक-सत्त्वग भी बदल जाती है कि वह जब लोकों का नहीं लोकता प्रवास होता तो वह उपरोक्त वह ही जापनी पाता नहीं दिन का प्रधान किस प्रकार से होता है दिन की उपरोक्त वह यह तथा की लोकता की जापनी हो जाती है। प्रधान अधिकरि की शुभ रुपी उपरोक्त अपने जीवन में लोकता बदलता है जिनसे उपरोक्त प्रधान के उपरोक्त अपने जीवन में लोकता बदलता है जो प्रधानकिति गृहीत होकर सकलित है जिन्हें यह प्रधान के विवर प्रधानकिति-अपनीति गृहीत होकर सकलित है जिन्हें यह प्रधान के विवर प्रधानकिति-अपनीति गृहीत होकर सकलित है।

जनयती

१. प्रातः बाल स्थान के पश्चात जगायति को दूर्वा अर्पित करते हुए पांच बार ॐ गं जगायत्री नमः का जप करें।
२. गुरु गीता का पाठ करें। चिन सफलता पूर्ण रहेगा।
३. मनोकामना गुटिका (न्यौछावर - ६०/-) का प्रातः पूजन कर, पूरे दिन अपनी जैव में रखें। मनोकामना सिद्ध होगा।
४. प्रातः काल आठ बार ॐ अं भैरवाय अनिष्ट निवारणाय स्वाहा मंत्र का जप करें। अनिष्ट टलेगा।
५. उगते सूर्य की ॐ ही सूर्य नारायणाथ ही ॐ मंत्र का ११ बार जप करते हुए नल अपैत करें।
६. शिव मुद्रिका (न्यौछावर - ३००/-) धारण करें। सफलता का मार्ग प्रशस्त होगा।
७. प्रातः ९ बार हनुगान बाण का पाठ करने से सकंत यज्ञ ब्राधाएं समाप्त होती।
८. आज श्री सूक्त का पांच बार पाठ करें। धन लाभ होगा।
९. २१ माला गुरु मंत्र का जप करने से आज आध्यात्मिक धैतना में वृद्धि होगी।
१०. दुर्गा रक्षा गुटिका (न्यौछावर - ६०/-) लकड़ी, कुंकुम, लाल उच्च से पूजन करें, फिर पांशुवार के सदस्यों के मस्तक पर स्पर्श कर किसी देवी के मंदिर में चढ़ा दें।
११. आज किसी काले कुतने को रोटी खिलाएं।
१२. सूर्य मणि (न्यौछावर - ६०/-) की पूजा स्थान में स्थापित करें। शाम को नदी या तानाब्र में प्रवाहित कर दें। सफलता का गारं खुलेगा।
१३. प्रातः काल दैनिक पूजा के बाद जिव आरती संपूर्ण करें।
१४. ॐ नमो हरि मर्कट मर्कटाय स्वाहा का हनुमान जी के चित्र को चूथें कि भोग लगाते हुए १८ बार जप करें।
१५. घर ने बाहर जाने से पहले अपने इष्ट का स्मरण करें।
१६. प्रातः काल २१ बार ॐ गुरु देवाय विद्यमह द्वर स्वाहा धीमाहि, तजो गुरु प्रबोदयत का जप करें।
१७. आज गुड़ तथा चने का बान बरें। अभीष्ट पूर्ण होगा।
१८. प्रातः काल बिस्तर से उठने ही पहले गुरु का स्मरण करें। दिन अच्छा बनेगा।
१९. ॐ धृष्णि सूर्य आदित्याय मंत्र का जप करते हुए सूर्य देव को जन अर्पित करें।
२०. पारद विवलिंग पर तीन बिन्दु वत्र चढ़ाने हुए अपने कोई मनोकामना बोनें। उपर्युक्त पूर्ण होगी।
२१. आज गुरु का जन्म डियस के रूप में निश्चिलेश्वरानन्द स्तनवन का पठ करें। सारे दिन गुरु स्मरण करें तथा गुरु सेवा का संकल्प ले।
२२. प्रातः लक्ष्मी के चित्र के आगे थी का श्रीपक लगाकर ॐ श्री श्री कली श्री सिद्धलेश्वर्य नमः मंत्र का ३० बार जप करें। धन लाभ होगा।
२३. जीवन रक्षा गुटिका (न्यौछावर - ६०/-) संक्षिप्त पूजन कर उसे दाएं बाल पर बोध लें। पांच दिन पश्चात नल में प्रवाहित कर दें।
२४. लाल गुलाब के पूष्प भगवति जगदंबा को अर्पित करें।
२५. शनि मुद्रिका (न्यौछावर - १२०/-) धारण करें। बाधाएं समाप्त होगी।
२६. प्रातः प्राणायम एवं रूर्ध्नन्दरकार संपत्त करें। दिन शान्तिपूर्ण व्यतीत होगा।
२७. ३० नमः शिवाय ही मंत्र का ५१ बार जप करें। दिन शुभ रहेगा।
२८. हनुमान जी के विग्रह या चित्र पर कुंकुम चढ़ाएं।
२९. यक्तुष्टाय हुं मंत्र का १६ बार जप करते हुए भगवान श्री गणेश को लहड़ू के भोग लगाएं।
३०. गुरुदेव को पीले पूष्प अर्पित करें तथा ५ मला अनिश्चित गुरु मंत्र का जप करें।
३१. ॐ धक्षाय कुवेश्वराय स्वाहा मंत्र का १ बार जप करें। धन हानि से ब्रह्मात्र होगा।

ट्वारकीय के श्रेष्ठ दूष

- नित्यप्रति सूर्योदय से पूर्व सोकर उठें। रात्रि में अधिक देर तक जागें नहीं।
- सुबह-शाम टहलना लाभदायक है। नियमित रूप से टहलने से सम्पूर्ण शरीर की मांसपेशियां सक्रिय हो जाती हैं, रक्तसंचार बढ़ता है, शरीर में चुस्ती-फूटी आती है, धमनियों में रक्त के थकके नहीं बनते। हृदय रोग, मधुमेह और ब्लडप्रेशर में लाभ पहुंचता है।
- नित्य योगासन-प्राणायाम करने से रोग नहीं होते और दीर्घायुष्यकी प्राप्ति होती है।
- तेज रोशनी आंखों को नुकसान पहुंचाती है।
- स्नान करते समय पहले सिर पर जल डालना चाहिए, उसके बाद अन्य अंगों पर। जल न तो अति शीतल हो और न बहुत गर्म। स्नान के बाद किसी मोटे तौलिये से अच्छी तरह रगड़ कर शरीर पोंछना चाहिए।
- स्वाद के लिए नहीं, स्वस्थ रहने के लिए भोजन करना चाहिए।
- भोजन के बाद दांतों को अच्छी तरह साफ करें, अन्यथा अक्षकणों के लगे रहने से उनमें सड़न पैदा होगी।
- हलका और जल्दी पचे, ऐसा ही भोजन करना चाहिए। सड़ी-गली या बासी चीजें खाने से रोग होता है। खूब गरम-गरम खाने से दांत तथा पाचन-शक्ति दोनों की हानि होती है। जरूरत से अधिक खाने से अजीर्ण होता है और यही अनेक रोगों की जड़ है।
- हमेशा शान्त और प्रसन्न रहें। कम बोलने की आदत डालें। जितना जरूरी हो उतना ही बोलें।
- नित्य मुख धोने के समय ताजे ठंडे पानी से आंखों में छीटिं लगायें। इससे आंखें स्वस्थ रहती हैं।
- हफ्ते-दस दिन के अन्तर पर कानों में तेल की कुछ बूंदें डालनी चाहिए।
- श्वास सदा नाक से और सहज ढंग से लें। मुँह से श्वास न लें, इससे आयु कम होती है। दूसरों के गुणों को अपनाएं।
- सुबह उठते ही आधा सेर से एक सेर तक ठंडा पानी पीना चाहिए। यदि पानी तांबे के बरतन में रखा हुआ हो तो अधिक लाभप्रद होगा।

- कपड़ाछान किये नमक में कटुआ तेल मिलाकर दांत और मसूड़ों को राङड़ कर साफ़ करना चाहिए। इससे दांत मजबूत होते हैं और पायरिया से भी मुक्ति मिल सकती है।
- मैद की बनी हुई और तली हुई चीजों से परहेज करना चाहिए।
- हर समय प्राथा और पेट ठंडा रथा पैर गरम रखना चाहिए।
- शांति का भोजन सोने से तीन घंटे पहले करना चाहिए। भोजन के एक घंटा बाद फल या दूध लें।
- भोजन के प्रारंभ में और अन्त में अथिक मात्र में जल न पियें। बीच में दो-तीन घृट पानी पी लेना चाहिए।
- शयन करने समय सिर उत्तर या पश्चिम में रख कर नहीं सोना चाहिए। धूप में सोना हो तो सिर सूर्य की ओर करके सोयें और धूप में बैठना हो तो ऐसे बैठें कि पीठ पर धूप पడ़े।
- कपड़ा, बिस्तर, कंधी, ब्रश, तौलिया, जूता-चप्पल आदि वस्तुएं परिवार के हर व्यक्ति की अलग-अलग होनी चाहिए। दूसरे की वस्तु उपयोग में न लाएं।
- दिन और रात में कुल मिलाकर कम-से कम तीन लीटर पानी पीना चाहिए। इससे शरीर की अशुद्धि मूँफ ने, हारा बार निकल जाती है तथा रक्तचाप आदि पर नियंत्रण रहता है।
- ग्रौढ़ावस्था शुरू होते ही चावल, नमक, धी, तेल, आलू और तली-भुनी चीजें खाना कम कर देना चाहिए।
- केला, दूध, दही और मट्ठा एक साथ नहीं खाना चाहिए।
- दूध के साथ इन वस्तुओं का ग्रयोग हानिकारक होता है- नमक, खड्डा फल, दही, तेल मूली और तोरई।
- दूध के साथ इन पदार्थों का सेवन किया जा सकता है- आंवला, मिसी, चीनी, परवल, अदरक, सेंधा नमक।
- कांसे और पीतल के बर्तन में धी रखने से विषतुल्य हो जाता है।
- शहद और धी समान मात्रा में सेवन करना अत्यन्त हानिकारक होता है।
- पढ़ना-लिखना आदि आंखों के हारा होने वाला कार्य लगातार कापफी देर तक न करें। बीच-बीच में नेत्र बंद करके उन पर ऊंगलियाँ फेरें और दूर की किसी वस्तु पर नजर जमाएं।
- देर रात देर रात तक नागना या सुबह देर तक सोते रहना आंखों और स्वास्थ्य के लिए हित कर नहीं है।
- तम्बाकू, शराब, चरस, अफीम, गांजा आदि जहर से भी खतरनाक हैं। नशीले पदार्थों के सेवन से धन और स्वास्थ्य दोनों से हाथ धोना पड़ता है।
- भोजन करने के बाद लघु शंका अवश्य करनी चाहिए। इससे गुर्दे स्वस्थ रहते हैं।
- सुबह उठते ही यह प्रतिज्ञा करनी चाहिए कि आज दिन भार न तो किसी की निन्दा करूँगा और न ही क्रोध करके किसी को भला-बुरा कहूँगा।

प्रयोग
करें -
यह
शब्द
में आ
ठकीक
एक ते
पर सि
भिन्न
भंग
॥

जप
या दु
नीवन
व वी
गाड
निश्च
है।

महं
ह
का
चोह
ल्या
नौव
लि
स्त्री
प्रति
अ
उस
नी
उन
के

जीवान खारदा



ओ तो किसी भी रोग के शमन हेतु आज चिकित्सा विज्ञान के पास अद्भुत इलाज है, परंतु मंत्रों के भाव्यम से चिकित्सा के पीछे धारणा यह है कि सभी रोगों का उदभय सम्बन्ध के नजर से ही होता है। मन पर पर्याप्त ग्राहण को यदि गंत्र द्वारा नियंत्रित कर लिया जाए, तो योग स्थायी रूप से शांत हो जाते हैं।

१. क्षुरी बीमों उवं भ्रातिष्ठ अम्बुड्डी बीमों बांधं बांधं हनुमन्त वीर। सहदेव की अवधा, अर्जुन का बाण। रावण रण को धाम ले, नहीं तो हनुमन्त की आण। शब्द सोचा, पिण्ड कांचा, पूर्ण मंत्र ईश्वरो वाचा॥

प्रयोग : स्त्रियों कई प्रकार के गुन्न रोगों से पीड़ित रहती हैं या जर्म सम्बन्धी कई दोषों से ग्रस्त रहती हैं, और शमवश या अन्य कारणों से श्रेष्ठ चिकित्सा से वंचित रह जाती है, फलतः कई प्रकार की शारीरिक व्याधियाँ हो जाती हैं। जर्म से सम्बन्धित प्रायः हर विकार एवं दोष के लिए आज चिकित्सा विज्ञान के पास सहज उपाय है, परन्तु इनका साम्राज्य मंत्रों के माध्यम से भी इलाज किया जा सकता है।

किसी भी प्रकार के द्वीप रोग की निवृत्ति के लिए यह प्रयोग शुक्रवार के प्रातः करें। यह ७ शुक्रवार का प्रयोग है, जो शुक्रवार को ही सम्पन्न करना चाहिए। इसके लिए रोगी स्त्री अपने मस्तक पर सिन्दूर से तिलक करे, घंडात स्पृह से गुल पूजन कर गुरुदेव से रोग निवृत्ति की प्रार्थना करे, फिर एक पात्र में अदरक का एक टुकड़ा रखकर उसके नाथ 'कामाख्या मुद्रिका' को एक लाल मीली से बोध दें। फिर 'कामाख्या माला' से निम्न मंत्र (जो कि सावर मंत्र है) की ३ माला मंत्र जाप ८ दिन तक जाप करें।

मंत्र

॥ कै नमो कामरु कामाख्या देवी। जल बांधं, जलवाई बांधं, बांध दूं जल के तीर। पांचों दृढ़ कलुआ

बांधं, बांधं हनुमन्त वीर। सहदेव की अवधा, अर्जुन का बाण। रावण रण को धाम ले, नहीं तो हनुमन्त की आण। शब्द सोचा, पिण्ड कांचा, पूर्ण मंत्र ईश्वरो वाचा॥

नित्य मंत्र जप के बाद अदरक के टुकड़े को घर से बाहर कहीं फेंक दें। रोज नया अदरक का टुकड़ा प्रयोग में लें। आठ दिन के बाद मुद्रिका को बाएं हाथ की किसी ऊंगली में धारण कर लें तथा माला को जल में विसर्जित कर दें। भविष्य में कोई तकलीफ होने पर एक अदरक का टुकड़ा हाथ में लेकर उपरोक्त मंत्र का बिना माला के १०८ बार उच्चारण कर लें और अदरक को घर के बाहर फेंक दें, पीड़ा समाप्त होगी।

साधना सामग्री प्रक्रिया - २४०/-

२. मूठ प्रयोग के मुक्ति हेतु

हर व्यक्ति का कोई शत्रु होता है, या उसके बिजनेस में तरक्की देखकर उससे जलने लगते हैं और जलन की वजह से कुछ लांबीक-प्रयोग करना देते हैं जिससे वह परेशान रहता है और उसके घर में भी आमदनी कम रहती है और क्लेश का वातावरण बना रहता है, यदि किसी ने घर या व्यापार पर मूठ प्रयोग कर दिया हो अथवा घर में कलह और तनाव है या प्रवर्तन करने पर भी व्यापार में उन्नति नहीं हो रही है, तो समझ जाना चाहिए कि जरूर किसी ने घर या व्यापार पर मूठ-

प्रयोग करा रखा है। इसके लिए प्रयोग अवश्य ही है, क्योंकि पूर्ण रूप से सफल व्यक्ति ही जीवन का करे -

यह प्रयोग रविवार के दिन आरम्भ करना चाहिए। रात्रि को स्नान कर स्वच्छ वस्त्र पहन कर पूजा स्थान में आसन के ऊपर एक थाली रखें थाली में 'काली हकीक माला' को स्थापित करें तथा माला के बीच में एक तेल का दीपक लगा दें। माला के प्रत्येक मनके पर मिन्दूर का तिलक करें, फिर निम्न मंत्र का ३५ मिनट तक बिना माला के नप करें।

मंत्र

॥ॐ रं रं तंत्र बाधा निवारण यं यं ॐ फट ॥

नप समाप्त पर मन में प्रार्थना करें, कि हमारे घर में या दुकान में जो मृठ प्रयोग है, वह दूर हो और मेरा जीवन अनुकूल रहे। फिर रात को १० बजे उस माला व दीपक के किसी चौराहे पर रख दें कहीं जगीन में गाड़ कर गड्ढ को बंद कर दें। इस प्रकार करने से मिश्रण ही किसी भी प्रकार का मृठ प्रयोग दूर हो जाता है।

साधना सामग्री पैकेट - १५०/-

३. इस प्रयोग के द्वारा आपको सफलता नहीं मिले ऐसा कंभव नहीं

हर व्यक्ति निज कार्य को भी शुरू करता है, उस कार्य में सफलता ही उक्तका एकमात्र लक्ष्य होता है, चाहे वह छोटे से छोटा कार्य या कैसा भी कार्य हो। व्यापारी के लिए अपने व्यापार में उन्नति और श्रेष्ठता, नीकरी करने वालों के लिये पदोन्नति, विद्यार्थियों के लिए अच्छे अंकों से प्रशंसा श्रेणी से पास होना, हर क्षेत्र में सबसे आगे रहना आदि। लेकिन इस प्रतिद्वन्द्विता के युग में उपने लक्ष्य को प्राप्त करना अपने हर कार्य की सफलता पर उसे लगता है कि उसके जीवन का एक नया अध्याय आरम्भ हो रहा है। जीवन में जितनी आध्यात्मिक सफलता जरूरी है, उतनी ही भौतिक सफलता भी आवश्यक है और जीवन के प्रत्येक क्षेत्र में सफल होना ही वास्तविक सफलता

है, क्योंकि पूर्ण रूप से सफल व्यक्ति ही जीवन का सही तरीके से जी सकता है।

इस प्रयोग के माध्यम से आप सफल हो सकते हैं, क्योंकि जो व्यक्ति इस प्रयोग को सम्पूर्ण कर लेता है उसके जीवन में असफलता रह ही नहीं सकती है।

प्रातः काल स्नान कर स्वच्छ वस्त्र पहनकर अपने पूजा कक्ष में किसी पात्र में विशिष्ट सिद्धि प्रदायक 'लघु नारियल' को स्थापित कर उसका कुकुम, अक्षत से पूजन कर तथा दीपक लगाकर उस कार्य को बोले, जिसमें सफलता प्राप्त करनी है, फिर निम्न मंत्र का ३२ मिनट तक जाप करें।

मंत्र

॥ॐ हौ ठः ठः हौ ॐ ॥

यह ग्वारह दिन का प्रयोग है, ग्वारह दिन के बाव लघु नारियल को नदी में प्रवाहित कर दें।

साधना सामग्री पैकेट - ६०/-

४. दूर डैठे व्यक्ति के बाबे में जाज करते हैं इस प्रयोग के

आप अपने घर में कार्य करते हैं, कि अचानक एक क्षण आपको अनुभव होता है, कि भैरव पर या रिशेदार के यहाँ पर कुछ धटित हो रहा हो रहा है, जिससे वह दुःखी है या उसका अचानक एकमेंद्र हो गया है। ऐसी घटनाओं का पूर्णुभास आपको ही सकता है यदि यह प्रयोग सम्पूर्ण कर लेता है।

किसी पाव में 'विरोधन गुटिका' को स्थापित कर उसका दूजन कर उसके समान ३१ दिन तक नित्य ३५ मिनट तक निम्न मंत्र का नप करें।

मंत्र

॥ॐ हं हंसः अप्रतिच्छेहं हं हं ॐ नमः ॥

प्रयोग समाप्ति के बाद गुटिका का मंदिर में चढ़ा दें और जब किसी स्वनन को देखना हो, तो 'अबर मंत्र' का नप करके आख्ये बंद कर उस व्यक्ति विशेष पर ध्यान केन्द्रित करें, तो आप जान सकेंगे उसके बारे में।

साधना सामग्री पैकेट - १०/-

देह साधे सब सधे निर्बल देह सब जाहिं

५६ त्रिभुवन-परमा विजय

क्या आपका शरीर आपके नियंत्रण में है?

खबर स्था शरीर का क्या ताप्चर्च है? शरीर और मन का क्या सम्बन्ध है? क्या साधान के प्राप्ति से देह को पूर्ण खबर स्था बनाया जा सकता है? क्या देह का संचालन साधक अपने स्वयं के नियंत्रण में रख सकता है? रोगों की उत्पत्ति क्यों होती है? क्या इस पर विजय प्राप्त की जा सकती है?

देह अशर्त शरीर को ईश्वर का सबसे बड़ा दान माना गया है, इसकी सभी क्रियाएं अपने आपमें पूर्ण और निरन्तर चलती रहती हैं, यह एक ऐसी भूमिका है, जो सभी क्रियाओं का संचालन स्वयं करती है, अपने भीतर और बाहर भी दृट-फट का निर्माण स्वयं करती है, आशुनिक चिकित्सा विद्यान इनना अधिक उत्तम हो जाने के बावजूद इस शरीर के सभी रहस्यों को नहीं समझ पाया है, इस देह का निर्माण करना तो बहुत बड़ा बात है आज तक मानव हृदय के जैरा घम्म (मोटर) नहीं बनी है जो कि बिना स्के ५०-८० साल तक निरन्तर चलती रहे, अधृत भै अच्छी यांत्रिक मोटर भी २-३ दिन से ज्यादा निरन्तर नहीं चल सकती, हृदय का यह

निरन्तर घड़कना वास्तव में अप्रचर्च ही है, आप विश्राम करते हैं, नींद लेते हैं, लेकिन देह के सभी भीतरी अंग अपना कार्य नुचाल रूप से निरन्तर करते रहते हैं, उनकी सभी क्रियाएं चलती रहती हैं, क्या यह सब कुछ एक चमत्कार नहीं है?

मानव शरीर की रिप्यूरिंग अपने आप होती है, यदि कहीं घाव हो जाए तो तत्काल विशेष शारीरिक प्रक्रियाएं शुरू हो जाती हैं, और घाव के स्थान पर नये उचक बनने लग जाते हैं, प्रत्यक्ष अंग अपने अपने काम करते रहते हैं, और सभी अंगों में एक विशेष सम्बन्ध रहता है मानो कोइ संगीत उज रहा है, योगा के तार एक लय में मधुर ध्वनि

उपलब्ध
का सूचना
के लिए
चहिए
दूसरे
किया
देह

१०३
यह न
उपका
अद्वान
काम
करता
स्वाम
नव
के भौ
स्थान
क्षेत्र
दुआ
इसका
स्वतंत्र

महिताष्क तभी पूर्ण लप से तीव्र हो कर
अपनी शक्ति को तरंगें उत्पन्न कर
सकता है, जब उसी यह निविद्यलता बहे
कि शक्तिव के कभी अंत कही क्या मैं
अपनी अति में लयबद्ध लप में कार्य कर
हूँ, और यह महिताष्क की तरंगे कल
कुछ करले में समर्थ हैं, और हकी किया
को द्यात, एकाशमा कहते हैं, इस द्यात
में महिताष्क व्यक्ति है, आपके मन,
आपके लप पूर्ण करने में महिताष्क के
आश्टाम के उक्त व्याधा तत्त्व की ओर
प्रवाहित हैं तो जान लीजिए कि शिद्धि
आपको प्राप्त हो कर ही बहेगी।

उत्पन्न कर रहे हैं और जहा यह एक भी तार दृष्टा तो संगीत का युर (स्वर, नव) बिगड़ जाता है, इश्वर की ऐसी रचना के लिए हमें प्रतिदिन परमपिता परमात्मा को धन्यवाद देना चाहिए क्योंकि वह सबसे बड़ा वर्गान है, जिसके लिए आप दूसरे पर आक्रित नहीं हैं और इस देव के द्वाया तो न्या नहीं किया जा सकता है? इसकी शक्ति तो अपरम्परा है।

वेणु और महिताष्क

इस शरीर का नियंत्रण कन्न है मुही भर आकार का १०५ ग्राम का महिताष्क, जिसकी संरचना तो निराली ही है, यह तो अपने पीठ पर इतने अधिक रहस्यों को समेटे हुए है कि उसकी गणना करना जटिल है, शरीर के प्रत्येक ऊँग का ध्यान रखना उसे सही रूप से रखना, क्या किसको कितना काम करना है, वह सब महिताष्क से नियंत्रण से होता है, कोट चुमता है उंगली हटा लो, वह प्रक्रिया इसी तीव्र तथा स्नामाविक स्वप्न से होती है, कि लगता है तत्काल हो रही है, नब कि इसपूरी किया में कई संवेशों का आदान-प्रदान शरीर के पीठ पर ही भ्राता हो जाता है इसीलिए महिताष्क को शिव स्थान कहा जाता है और यह कुण्डलिनी चक्र का सहस्रार क्षेत्र है, परा नाड़ीका तंत्र गुरु से लगा कर रखनु में होता हुआ महिताष्क तक स्थित है, शरीर के अन्य भागों में तो इसकी सामान्य शाखाएँ हैं, इसी कारण कुण्डलिनी शक्ति के रानों चक्र इस श्रेष्ठ में स्थित हैं।

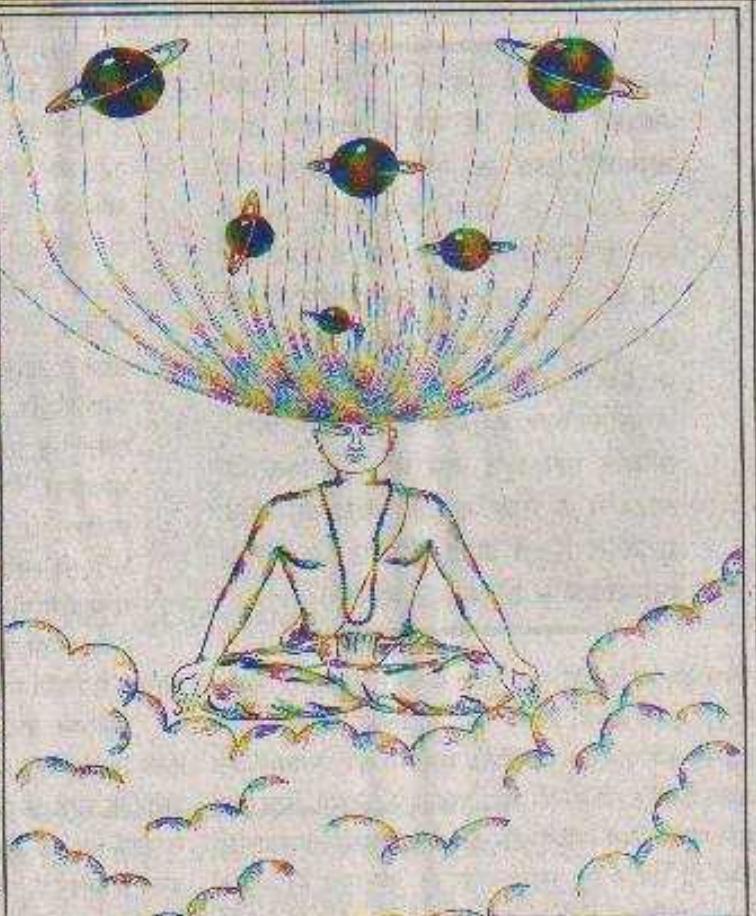
अब आप स्वयं अपने बारे में विचार करें कि क्या

अपका महिताष्क और आपके शरीर में समन्वय है, जब एक काटा चुमने ने इनी अधिक पीड़ा हो सकती है कि महिताष्क उस समय और कोई प्रश्न खोचता ही नहीं, और ऐसे में यदि तेह रोग ग्रस्त हो तो क्या महिताष्क अपने कार्य पूर्ण रूप से कर सकता है? क्यापि नहीं, आज के युग में हर कोई किसी न किसी बीमारी से ग्रस्त है, किसी को पेट के गैस की तब्दीली है, तो कोई जीढ़ों के दर्द से परेशान है। किसी को इर समय जुराम रहता है, तो कोई हृदय की बीमारी से, तो कोई शारीरिक कमजोरी से ग्रस्त है, शोड़ी पीड़ा होते ही माझे हैं छावटों के पास और बवाइयों ढारा करते हैं शरीर पर अत्याचार, एक व्याधि को दबाने के लिए दूसरी नई व्याधिकों को अपने शरीर आमंत्रण देते हैं, ऐसे बीमार शरीर से लाधना में पकागला कैसे संभव है? वो बाटे लाधना में पालथी मार कर बैठ नहीं सकते हैं पदासन में बैठना तो दूर की बात और साधक कहते हैं कि युझे लाधना में सिद्धि नहीं मिल रही है।

महिताष्क तभी पूर्ण रूप से तीव्र हो कर अपनी शक्ति से तरंगे उत्पन्न कर सकता है, जब उसे यह निविद्यन्ता रहे कि शरीर के सभी अंग यही स्वप्न में अपनी जनि में लयबद्ध रूप में कार्य कर रहे हैं, और यह महिताष्क की तरंगे सब कुछ करने में समर्थ हैं, और इसी क्रिया को ध्यान, एकाशमा कहते हैं, इस ध्यान में महिताष्क व्यक्ति है, आपके मन, आपके लप पूर्ण रूप से महिताष्क के माध्यम से उस साधना तत्त्व की ओर प्रवाहित है तो जान लीजिए कि शिद्धि आपको प्राप्त हो कर ही रहेगी।

पूर्व गुरुदेव बहते हैं कि जब में प्रबचन करता हूँ तो शिष्यों का, साधकों का निरीक्षण भी करता रहता हूँ और ऐसता हूँ कि कोई साधक पालथी मार कर बैठा है तो कोई घुटने मोड़ कर, कोई इधर-उधर देखता है तो कोई अपना सिर खुलाता है, एक ही आसन पर एक ही मुद्रा में अपने महिताष्क को केन्द्रित कर बैठने वालों की संख्या तो शायद कुछ ही होगी, ऐसा क्यों होता है? इसका कारण उनके तन और मन-महिताष्क में समन्वय नहीं है, दोनों एक ही शारा में नहीं बहते और जब तक यह नहीं होता तब तक मन और जप शब्द ही रहेंगे, तरंगे नहीं बनेंगी, चेतना शक्ति नहीं बनेंगी। जब कि अनुष्ठान का, साधना का भूल उद्देश्य ही मंत्र को बाधा बना कर साधना के लक्ष्य छारा शिद्धि का भेदन करना है। अपनी देह पर गर्व करना सीखो

परमात्मा का सबस्त्रेषु वरदान देह की रक्षा करना है, इसे सुन्दर ढंग से संवार कर रखना व्यक्ति का कर्तव्य है जिस सुन्दर स्वरूप रूप से परमात्मा ने हमें यह देह प्रदान की है, उसी सुन्दर स्वरूप स्वप्न से हम देह को ३०-८० साल तक पूर्ण रूप से स्वरूप रख कर पुनः परमात्मा को अपेक्षा करें तो यह जीवन की सबसे बड़ी साधना होगी, जबकि हमें यह है कि परमात्मा के सुन्दर वरदान को डम सब रोग घुस्त कर एक सहा-गला ढाँचा मृत्यु के समझ परमात्मा को अपेक्षा करते हैं, यह परमात्मा का अप्रमाण है, जीवन में केवल भोग ही सब कुछ नहीं है इसमें योग भी आवश्यक है, जिस प्रकार मन्त्र में पूर्ण शूला से देवता की, भगवान की पूजा करते हैं, उसी प्रकार इस देह की पूजा भी योग द्वारा आवश्यक है, इस देह में तो सभी रूप देवताओं-ब्रह्मा, विष्णु, शिव का स्थान है और इस देह पूजा की प्रथानाम के कारण ही हमारे ऋषियों ने योग प्राणायाम को विशेष महत्व दिया है, योग साधना द्वारा अपने शरीर पर नियंत्रण रखा जा सकता है।



इरीर पूर्णतः रूप से स्वरूप रह सकता है, सारे रोग दूर हो सकते हैं, वृत्तित वृत्तिया शान्त हो सकती है, इसके लिए प्रधायम तो करना ही पड़ेगा, खाथ, पांव को तो हिलाना ही पड़ेगा, कुछ नियमों को पालन करना पड़ेगा, ऐसा नहीं है कि साध्यकाल के कार्य प्राप्त, कर रहे हैं और प्राप्त, के कर्म दोपहर को, प्रातिदिन जल्दी उठ कर अभ्यास प्रारंभ करें, एक दिन, दो दिन, और पन्द्रह दिन बाँतते-बाँतते आपको स्वयं को ऐसा लगेगा कि कुछ विशेष परिवर्तन हो रहा है, एकाशस, प्रसवना बहु रहा है, उसना ही आहार ले जितना शरीर के लिए आवश्यक है और जब शरीर आहार की इच्छा करे तब आहार लें। घटी के झन्सार मोजन न करें अथवा भोजन के स्वादिष्ट, स्वरूपित होने के कारण भोजन न करें, शरीर के लिए सब कियाएं आवश्यक हैं और इनमें नींद का भी विशेष महत्व है, मोते समय परमात्मा तो धन्यवाद दें कि मुझे एक और सुन्दर दिन उपहार में दिया, जिसके लिए मेरा कोई प्रश्न नहीं था, उस समय चिन्ताएं परमात्मा को सींप कर

जायन करें।

योग प्राणायाम और शरीर

आजकल व्यायाम भी मशीनों द्वारा सम्पन्न किया जाता है, शरीर को सुदृढ़ बनाने के लिए विशेष व्यायाम सम्पन्न करते हैं, लेकिन इस प्रकार के व्यायाम से शरीर तत्कालिक रूप से स्वरूप, सुदृढ़ बन तो जाता है, परं जैसे ही व्यायाम को छोड़ा, कि वापिस इरीर में मोटापा, शुलशुलापन वायु विकार, अनिद्रा आदि वाक्षरण प्राप्त हो जाती है, इसके विपरीत योग और प्राणायाम न केवल शारीरिक विकास करते हैं अपितु इससे गान्धिक विकास भी पूर्ण रूप से होता है, प्राणायाम और दोगासन द्वारा शरीर के स्थ-साथ नलिनीक को भी सक्रिय किया जाता है, जिससे चिन वृत्तियों में शुद्धता आती है, इरीर में, चेहरे पर एक तेज उपन्न होता है, मन की ज्ञानयता के विकास से प्राण-दृष्टि का संचय होता है व्यायाम केवल शरीर को कड़ा और बड़ा बनाते हैं गान्धिक शान्ति के लिए प्राणायाम तथा योगानन से बहु कर कोई उपाय नहीं

है, साधक के लिए तो आवश्यक है कि वह अपने भीतर एक छुता का ऐसा विकास करे कि अपनी साधना को बिना रोक-लेकर सम्पद ले सके।

यह भारत का दुर्भाग्य है कि योगासन, प्राणायाम का प्रारंभ यहाँ से हुआ लेकिन आज भारतीय ही व्यायाम, प्राणायाम, योग सबसे कम करते हैं, और इसका प्रभाव यह है कि हमारे देश में भी जवानों में बढ़े डिखने वाले लोगों की घटनाएँ हैं, योग और प्राणायाम के लिए ६ कर्म विशेष रूप से आवश्यक हैं और ये ६ कर्म शारीर शुद्धि, गान्धर्षिक एकाग्रता, रोग नाश के प्रधान स्वरूप हैं, ये कर्म हैं- १.थोटी, २.वस्त्री, ३.नेति, ४.गृहकरणी, ५.गौती, ६.त्रटक इसके साथ ही प्राणायाम की तीन प्रक्रियाएँ १.पूरुष २.कुम्हक, ३.रेचक हैं, इन क्रियाओं द्वारा साधक अपनी साधना में उच्चतम स्थिति प्राप्त कर सकता है, इसके अतिरिक्त योग साधना में मुझे और बन्ध का भी विशेष महत्व है, इस सन्दर्भ में अगो विस्तार भय से पूरा विवरण नहीं दिया जा रहा है।

देह सिद्धि - परम सिद्धि साधना

देह सिद्धि के लिए सबसे पहले आवश्यक है कि शरीर के रोगों की नियन्त्रिति हो, उन्हें रोग और सिद्धि एक दूसरे के बिना है, जिसके शरीर में रोग है तब वह गारिक द्वे अथवा मानसिक, लग्नु हो अथवा दोन्हें, उसे सिद्धि नहीं मिल सकती, और जिसे सिद्धि पास है उसके पास रोग फलक नहीं सकता, जिस प्रकार शम्भु में सब कुछ मरण हो जाता है, उसी प्रकार योग-साधना, सिद्धि द्वारा यमस्त रोग भय्य हो जाते हैं।

रोग निवारण हेतु महामृग्युन्य साधना की प्रमुखता को भी छोड़ी, मूनियों नथा वीरियों ने एक मन चे स्वीकार किया है, इस विशिष्ट नाधना में नींव नेत्र वाले भगवान ऋष्मवक शिव की उपासना की जाती है कि ये मुझे इस प्रकार का ऐष्ट पुष्ट शरीर हे कि मैं मृत्यु बन्धन में मुक्त हो जाऊँ।

यह साधना किसी भी सेमवार को प्रारंभ की जा सकती है, शिव मन्दिर में अथवा अपने घर में। इसका इस पूर्ण विशिष्ट-विधान सहित सम्पन्न करना चाहिए, यदि कोई व्यक्ति इतना अधिक रोगी है कि वह स्वयं पूर्ण विधान सम्पन्न नहीं कर सकता, तो उसके नाम का स्कल्प लेकर दूसरा व्यक्ति साधना सम्पन्न कर सकता है।

अपने हाथ जल लेकर निम्न संकल्प करें-

संकल्प

ॐ मम आत्मन- श्रुति स्मृतिपूरणोक्तफल प्राप्त्यर्थ ।
मम (अमृक) यज्ञमानस्य वा शरीरेऽमुकपीडा निराशदारा

सत्त्वः आश्रोग्य प्राप्त्यर्थं श्रीमहामृत्युजय देवता प्रीत्यर्थं (अमृक) सत्त्वा परिमितं श्रीमहा मृत्युजयमन्त्रजपं अहं करिष्ये ॥

इस साधना में अपने सामने साधक एक लाल वस्त्र जिठा कर 'महामृत्युजय भेद्य यंत्र' स्थापित करे और दोनों ओर प्रक्षिप्ती व चक्रिती स्थापित करें, सामने गुणल की धू वै रुद्रयामल तंत्र में लिखा है, कि भगवान मृत्युजय के प्रसाद से सभी प्रकार का भय रुक हो जाता है।

साधक भूम जला कर सामने गुड़ का प्रसाद (निवेद) अर्पित कर, 'ऋद्धाश बीज माला' ये निम्न मंत्र का जप करें-

यह ऋद्धाश बीज माला ऋषाज्य और सिद्ध माला होती है। शिव सम्बन्धी साधनाएँ स्वाधा जाला से करते हैं, लेकिन महामृत्युजय साधना तो केवल ऋद्धाश बीजों की माला से भी सम्पन्न करनी चाहिए।

महामृत्युजय मंत्र

ॐ ह्रीं ज् सः, ॐ भूर्भुवः स्वः ॐ ऋष्मवक यजामां सुगन्धिं पुष्टिवर्धनम् । उर्वारुकमिव बन्धनान्मृत्योमृत्युजयमृतान् । स्वः भूवः भूः । सः जूं ह्रीं ॐ ॥

यह मंत्र सम्पुटित मंत्र है, पूर्ण सिद्धि विधानमें तो सब लाल मंत्र जप कर उल्लेख है, प्रयत्न से भयोन्न रोग की शान्ति भी इस विश्वान से अवश्य ही प्राप्त हो जाती है।

किसी अन्य के लिए प्रथोण जरते समय एक शुद्ध नाड़े के पात्र में जल भर कर रामने रखना चाहिए और मग्न जप कर प्रतिदिन यह जल गोली को मिलाना चाहिए।

उपरोक्त साधना तो रोग शान्ति की महत्वपूर्ण याधना है, इसके अतिरिक्त शरीर में चेहरे पर तेज उत्पन्न करने के लिए कुछ अन्य साधनाएँ भी आवश्यक हैं, सूर्य साधना साधक को तेजस्वी बनाती है, और सूर्य का मूल शाधक ओकार उपासना है, नायकी साधना भी सूर्य की ही साधना है, प्रतिदिन सूर्योदय से पहले उठ कर अपना नित्य कर्म पूजन कर सूर्य नमस्कार अवश्य करना चाहिए तथा सूर्य गायत्री मंत्र का जप सूर्य की जल चढ़ते समय अवश्य करना चाहिए। यह मंत्र निम्न है-

सूर्य गायत्री मंत्र

ॐ पास्कराय विद्धाहे, विवाकराय भीमहि तत्रो
सूर्यः प्रचोदयात् ।

सूर्य की ओर मुह कर यह मावना व्यन्त कर्मी चाहिए जि सम्पूर्ण सूर्य का प्रभाव मेरे शरीर पर पढ़ रहा है, सूर्य का तेज किरणों द्वारा मेरे भीतर प्रवाहित हो रहा है, इस प्रकार की भावना कर एक माला सूर्य गायत्री का जप अवश्य करना चाहिए।

साधना सामग्री न्यौछावर-४५०/-



पतली रसंभान साधन

आङ्गरे अदृश्य अक्षीकी क्षक्ति को
वक्ता में कर्के और बाधा कमाप्त कर्के
भूत वर्तमान भविष्य की ओर दाक
बना दीजिए किकी भी कानु को

साधन का नामय है अपने भीतर सिद्धि, शक्ति उत्पन्न करना, जब बाहरी बाधाएं कम हो जाती हैं अथवा पूर्ण स्वय से दूर हो जाती हैं, तभी तो व्यक्ति अपनी उत्तमता कर सकता है, अपनी शक्ति का सही उपयोग कर साधारण स्थिति से ब्रह्मता की ओर बढ़ सकता है।

बाधाएं निम्नवरण दे कर नहीं आती हैं, बाधाएं तो उक्स्पात सामने उठ जाती हैं, यदि शब्द प्रबल हो जाए तो किस समय हनि पहुंचा दें इसका अनुमान लगाना कठिन है, नीबन हर समय शंका कुशंका से गस्त रहता है, जीबन साधारण बन कर रह जाता है, इसी लिये तो साधन की जाती है जिससे शक्ति का उद्भव हो सके, शक्ति के मार्ग में

किसी प्रकार की बाधा, उसके प्रवाह को रोक जाती है, और जब यह शक्ति प्रवाह रुक जाता है तो साधक को भीतर ही भीतर नष्ट करने लगता है, इसलिए हर स्थिति में बाधाओं का निराकरण आवश्यक है और जब ये बाधाएं आपकी जानकारी में हों, अधोंत आपको मालम हो कि अमुक व्यक्ति अथवा व्यक्तियों का रागूह आपके विरुद्ध कार्य कर रहा है, आप अपने मार्ग पर बढ़ रहे हैं, लेकिन इस रुग्ण में तो किसी को भी दूसरों की उत्ति सुहाली नहीं है, और वे आपके विरुद्ध घटयेव करते हैं, कई बार तो आप तिनहें अपना मित्र तथा शुभचिन्नाक समझते हैं, वे ही आपको हनि पहुंचाने में सक्षम आगे रहते हैं।



जीवन में अक्षर धोखे होते रहते हैं, लेकिन यदि आप को मालूम है कि अमुक आपका शत्रु है, तो फिर उसका उपाय क्यों नहीं किया जाए, शत्रु की शक्ति को ही क्यों न इतना क्षीण बना दिया जाए, कि वह आपके विरुद्ध कार्य ही न कर सके, यही तो साधना है, सिद्धि का मार्ग है, साधना सिद्धि का सातपर्य यह नहीं है, कि आप घर की छत पर बैठ गये और अप्पण वर्षा होने लगे, साधना का तो तात्पर्य है कि आपके कार्य के मार्ग में कठिनाई नहीं हो, आत्म शक्ति, इच्छा शक्ति, कार्य शक्ति, तीव्रतम रूप से जाप्त हो, जो कार्य करे, वह सहज पूरा हो जाए और आपको अपना लक्ष्य पिल जाए।

अद्भुत तांत्रिक वाताली साधना

वाताली साधना शिव साधना का एक प्रमुख भाग है,

आदिदेव शिव की यह विशेष शक्ति-शत्रु हन्ता, मारण, विद्वेषण, स्तन्मन की शक्ति है, जब शत्रु अत्यन्त प्रबल हो जाए और सामान्य प्रबल से वश में न आए, तो तंत्र शास्त्र की इस प्रमुख साधना का प्रयोग करना चाहिए।

इस साधना का प्रयोग निम्न कार्यों के लिए भी किया जा सकता है-

- जब व्यापार में निरंतर हानि हो रही हो और कार्य बहुत प्रयाप करने पर भी पूरे नहीं हो रहे हों।

- जब राज्य बाधाएं बढ़ने लगें और किसी भी प्रकार का कार्य हर दृष्टि से रुक जाए, यह बाधा किसी भी प्रकार की हो सकती है।

जब आपके अधिकारी आपके अनुकूल न हों, और आपको नेतृत्व करने का प्रयाप करते ही रहें।

- जब किसी कार्य द्वारा मान द्वानि, अपवाह की आशंका हो।

- किसी मुकदमे में हार की संभावना हो, और मुकदमा निपट ही नहीं रहा हो।

- जब मानसिक आशान्ति बढ़ जाए और आगे बढ़ने का यह मार्ग न मिले।

- जब शत्रु प्रत्यक्ष, अप्रत्यक्ष रूप से हानि पहुंचने लगें।

- घर पर किसी प्रकार का तांचिक प्रयोग आपके विरुद्ध किये जाने लगें, और घर में हर समय कलड़, रोग का वातावरण रहने लगे।

- घर पर मून-प्रेत पिशाच का उर हो, अदृश्य आत्माएं अपना प्रकोप दिखाने लगे।

इन सब विपरीत स्थितियों के निराकरण हेतु वाताली साधना ऐसी नीति, अचूक, शक्ति प्रदायक, तुरंत फल प्रदायक साधना है, जो प्रबल से प्रबल शत्रु को भी आपके वश में कर देती है।

साधना क्या करते?

यह साधन मूल सूप से तो कृष्ण पद्म में ही साधन की जानी है, तथा यह रात्रि साधन है, मरीज़म रामव कृष्ण पक्ष की अमावस्या की रात्रि है, साधना के सामय किसी प्रकार का विष्टन न हो, आप अपने पूर्ण मनोधोग से पाल प्राप्ति की, शक्ति प्राप्ति की इच्छा के साथ ही साधना सम्पूर्ण हो, साधना में शाकना का भी स्थान प्रबल है, दृढ़ शाकना, दृढ़ इच्छा शक्ति हीनी ही चाहिए।

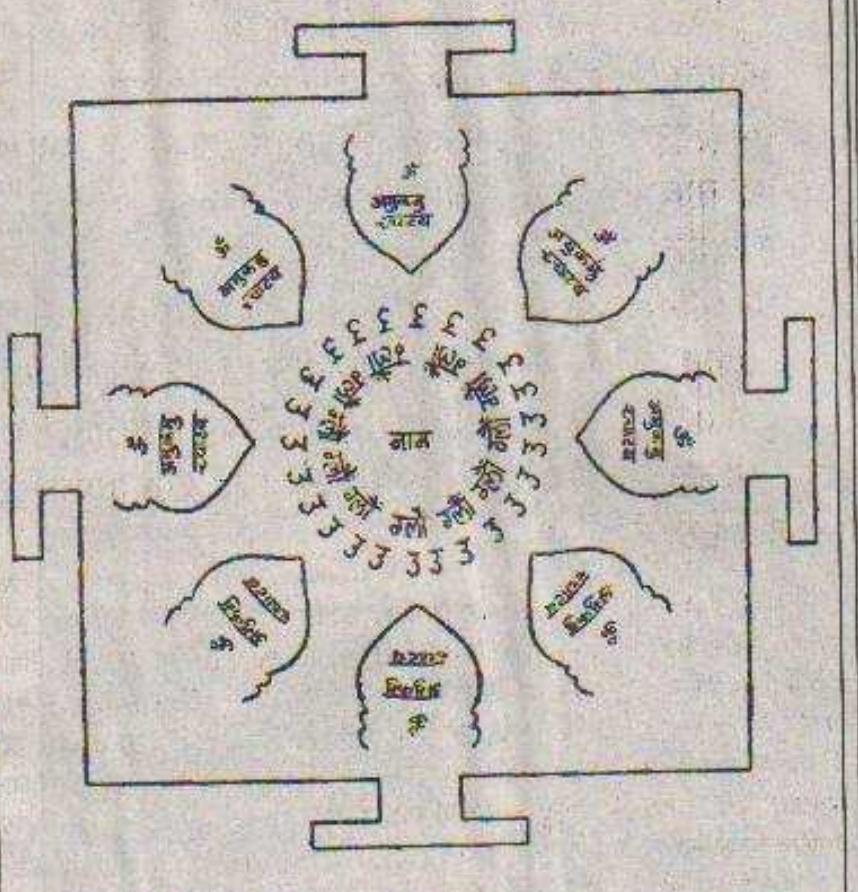
साधना प्रयोग

इस साधना हेतु कुछ विशेष कार्यों की आवश्यकता है, उसी अनुरूप कार्य होना चाहिए, साधना काल में जी वसन्तुएँ आवश्यक हैं, उन वसन्तों को व्यवस्था पहले सीधे लेना चाहिए, साधना काल में बीच में उठना एक प्रकार से साधना में विष्ट है।

एक समय में एक विशेष कागजा, इच्छा पृति, अथवा एक विशेष कार्य हेतु ही साधना सम्पूर्ण करनी चाहिए, साधना प्रारंभ करने से पहले जो कार्य पूर्ण करना चाहते हैं, उस कार्य का ग्रन्थालय अवश्यक नहीं चाहिए, विनाभिन्न लकड़ी की पूर्नि का एक साठ प्रयास करने से एक ५० लक्ष्य पूरा नहीं होना, यह बहुत दूसरा बहुत रुक्षनी चाहिए। साधना सामग्री इस साधना हेतु आवश्यक सामग्री में - धो, दूध, ताम पात्र में जल, रस चन्दन, अमरबनी, केसर, चन्दन, मुगमिठ पुष्प के अतिरिक्त ताम पत्र पर अंकित प्राण प्रणिषादुकूल 'वाताली पूजन यंत्र' तथा 'वाताली स्तंभन यंत्र' आवश्यक हैं।

वाताली साधना प्रयोग

इमावस्या की रात्रि का प्रथम प्रहर के इच्छात् अवाद् १० बजे के बाद स्नान वर शुद्ध वन्न धारण कर उसी आसन पर स्थान ग्रहण करें, एक थाली में उच्ची सामग्री आसे पास



जब दें।

सर्व प्रथम अपने सामग्री लकड़ी के पीछे पर लाल वस्त्र लिलाकर पी का दीपक जला कर गुल पूजन कर, साधना की मानसिक आज्ञा प्राप्त कर, अपने इष्ट देव का पूजन करे तथा शिव का पूजन प्रारंभ करें, तब यह कार्य पूर्ण हो जाए तो अपने मन को स्थिर कर साधना की ओर झुक्सर हो।

सर्वप्रथम अपने सामग्री वाताली पूजन यंत्र और जल से अच्छी तरह नेप कर उसके उपरान्त दूध और जल की धारा में धोकर स्वच्छ जल से पीछे कर पीठ के मध्य में चावलों की ढेरी अना कर उस पर पुष्प की एक पंखुड़ी रखें उसके पश्चात निम्न यंत्र बोलते हुए देव को उस मंत्रुडी पर स्थापित करें।

ॐ मलो वातालि कैलाशाचल मध्य स्थितितये नमः

तत्पूर्वत्त यत्र पर रक्त चन्दन, तल्दी, अगर, केसर,

चढाएं।

साधना का तो तात्पर्य है कि आपके कार्य के मार्ग में कठिनाई नहीं हो, ज्ञात्म शर्कि, इच्छा शक्ति, कार्य शक्ति, तीव्रतम् रूप से जप्त हो, जो कार्य करें, वह सहज प्रा हो जाए और आपको अपना लक्ष्य मिल जाए। शिव द्वारा संचित कई साधनाएं जीवन में बाधाओं का हरण करने की सार्थक साधनाएं हैं इसी लिए वार्ताली साधना में काली के अतिरिक्त भैरव, गणेश और शिव का पूजन भी अदृश्य किया जाता है जिससे वह सभी देव सहयोग देकर साधना में सहायक हो सकें और जीवन बाधा रहित हो जाए। साधना में सफलता का यही अभिप्राय है कि आने वाली बाधाओं की आपको पूर्ण जानकारी हो जाए तथा इस पर भी कोई बाधा आ जाती है तो स्वयं उसला निराकरण करने में समर्थ हो सकें।

अब वार्ताली देवी का ध्यान करें- रक्तवर्णीय, विनीती, सिंह पर स्थित, शकुओं में प्रबल भय देने वाली, साधक के हृदय में स्थित होने वाली, मुण्ड माला धारण किये हुए वार्ताली देवी का मैं ध्यान करता हूँ, मेरी कामना पूर्ण करें।

इसके पश्चात् क्रमानुसार सामने नीं पीठ शोलीयो- जया, विजया, जिना, अपराजिता, नित्या, विलायिती, लोक्ती, अधोरी तथा मंगला की स्थापना पूजा करें।

अब स्तंभन नंब्रेशी याधना देनु एक कागज पर कलम से चित्र में विद्या हुआ वार्ताली स्तंभन यंत्र बना कर उपने दायीं ओर नर्खे और उसके आगे तेल का दीपक जलाएं, इसके बाद सिंहूर द्वारा मूजन करें तथा अपने दोनों हाथों में पूष्ट लेकर चढ़ाए तथा दाय में जन ले कर सकल्प अर अपनी जी विशेष उच्छु छो वह नीर से बोल कर जल को धूमि पर छाड़ दें। अब दीपक को अपने हाथ में ले कर वार्ताली पूजन यंत्र के सामने आरती के रूप में धुमाते हुए निम्न निरिति वार्ताली मंत्र को गदरह बार बोलें।

वार्ताली मंत्र

॥ ॐ क्रीं क्रीं वार्ताली क्रीं क्रीं फट् ॥

इसके पश्चात् सामने दाव में रखे हुए जल को धोड़ चरणमूर्त स्तु में स्वयं उड़ान लें।

वार्ताली स्तंभन यंत्र की गणेश नदा क्षेत्रपाल, ऐरव पूजन के पञ्चात गणेश के सामने प्रसाद रखें, ऐरव के भी सामने प्रसाद रखें तथा हाथ धोकर वार्ताली देवी का ध्यान

करते हुए वार्ताली स्तंभन यंत्र का जप करें।

वार्ताली कार्य सिद्धि मंत्र

॥ ॐ क्रीं वाराश्व वार्ताली नमः ॥

इस मंत्र की स्पार्श भाला जप उरी स्थान पर बेट ल करना है। कामना पूर्ति हेतु पूज्य, तिल, तथा सुरा अप्रिय बरनी चाहिए।

इस नाधना में कुछ विशेष वार्ते हैं- शत्रु स्तंभन कर्त्तव्य हेतु मंत्र 'हरिद्वा माला' से करना चाहिए।

धूम कार्य हेतु 'स्फटिक माला' व गंत्र 'स्फटिक माला' से मंत्र जप करना चाहिए।

किसी कार्य की विजय सिद्धि हेतु 'हहाश माला' व गंत्र जप करना चाहिए।

पूजन समाप्त होने पर मुन, ऊमण, गुरु, गिरव गणेश, ऐरव, वार्ताली का ध्यान कर अपना स्थान छोड़ना चाहिए।

वार्ताली स्तंभन यंत्र लिखा होना चाहिए, इस कागज को एक भिट्ठी के पात्र में गुणगल, तिल, सरस्सो तथा पूज्य डाल कर जल देने से प्रबल से प्रबल बाधा का भी नाश हो जाता है।

पूजन के पश्चात् वार्ताली यंत्र को अपने पूजा स्थान में एक ओर स्थापित कर दें तथा नव भी किसी प्रकार की शत्रु बाधा, अध्यवा कोड़ अन्य बाधा आय तो उमावरव्य को पूजन अवश्य बरना चाहिए।

साधना सामग्री- ३५०/-

श्री सरस्वती-स्तोत्रम्

ज्ञान ही जीवन का सबसे बड़ा धन है जो ज्ञान और बुद्धि की अधिष्ठात्री सरस्वती की बन्दना करता है उसे जीवन में सब प्रकार की सफलताओं का मार्ग प्राप्त हो जाता है।

हों हों हृष्टेक-बीजे शशि-रुचि-कमला-कल्प-विस्पष्ट-शोभे,
भव्ये भव्यानुकूले कुमति - वन - दवे - विश्व - वन्द्यांशि - पद्रे !
पद्मे पद्मोपविष्टे प्रणत - जन - मनो - मोद - सम्पादयित्रि,
प्रोत्पत्तुष्टाङ्गान-कूटे हरि-निज-दयिते देवि संसार-सारे ॥१॥

ऐं ऐं ऐं इष्ट-मन्त्रे कमल - भव - मुखाभीज - भूति-स्वरूपे,
रुपारूप - प्रकाशे सकल - जुण - मद्ये लिङ्गुणे लिर्विकारे !
न स्थूले नापि सूक्ष्मेऽप्यविदित-विष्वे नापि विज्ञात-तत्त्वे,
विश्वे विश्वान्तराते सुर-वर-नमिते लिष्कले लित्ये - शुद्धे ! ॥२॥

हों हों हों जाप-तुष्टे हिम-रुचि-मुकुटे वल्वकी-व्यञ्ज-हस्ते,
मातर्मातिर्मस्ते दह दह जडतां देहि बुद्धि प्रशरताम् !
विष्वे वेदान्त - गीते श्रुति - परि - पठिते मोक्षदे मुक्ति-मार्जे,
मार्गातीत - प्रभावे भव सम वरदा शारदे शुभ्र - हारे ! ॥३॥

धीर्थीर्थीर्थारणख्ये धृति - मति नुतिभिर्नामभिः कीर्तनीये,
नित्येऽनित्ये लिमित्ते मुनि - जग्न - नमिते नूतने वै पुराणे !
पुण्ये पुण्य - प्रवाहे हरि - हर - नमिते नित्य - शुद्धे सुवर्णे,
मात्रे मात्राद्दृ - तत्त्वे मति-मति-मतिदे माधव-प्रीति-दाने ॥४॥

धीं क्षीं धीं हीं सरसुपे दह दह दुरितं पुस्तक - व्यञ्ज - हस्ते,
 सन्तुष्टाकर-वित्ते स्मित-मुखि सुभगे सतम्भनि रतम्भ-विद्ये !
 मोहे मुञ्च - प्रवाहे कुरु मम कुमति - ध्वान्त - विश्वंस-मीडचे,
 गो गो वर्ण-भारती त्वं कवि-वृष-रसना - सिद्धिवा सिद्धु - विद्या॥५॥

स्तौमि त्वां त्वां च वन्दे भज मम रसनां मा कदाचित् त्यजेथा:,
 मा मे बुद्धिर्विरुद्धा भवतु न च मनो देवि! मे यातु पापम्।
 मा से दुःखं कदाचिद् विपदि च समयेऽप्यस्तु मे नाकुलत्वम्,
 शास्त्रे वादे कवित्वे प्रसरतु मम थीर्माऊस्तु कुण्ठा कदाचित् ॥६॥

इत्येते: श्लोक-मुख्यैः प्रति-विनमुषसि स्तौति यो भक्ति - नम्नो,
 वाणी वाचसप्तराष्यभिमत - विभवो वाक् - पटुमृष्ट-पङ्कः।
 स स्यादिष्टार्थ - लाभी सुतमिव सततं प्राप्ति तं सा च देवी,
 सौभाग्यं तस्य जेहे प्रसरति कविता विश्वमस्तं प्रवाप्ति ॥७॥

ब्रह्म-चारो ब्रती मौकी, ब्रयोदश्यां निरामिषः ।
 सारस्वतो नरः पठात् स स्यादिष्टार्थ-लाभ-वान्॥८॥

पक्ष-द्वयेऽपि यो भवत्या, ब्रयोदश्येक-विशतिम् ।
 अविच्छेदं पठेद् धीमाक्, ध्यात्वा देवीं सरस्वतीम् ॥९॥

शुक्लाम्बर-धरां देवीं, शुक्लाम्बरण-भूषिताम् ।
 वाञ्छितं फलमाप्नोति, स लोके जात्र संशयः ॥१०॥

इति ब्रह्मा स्वयं प्राह, सरस्वत्याः स्तवं शुभम् ।
 प्रयत्नेन पठेन्नित्यं, सोऽमृतत्वं च गच्छति॥ ११॥

अर्थ

हे देवि! 'ही हो' उपापका हृदय-प्रिय बीज है। आप चन्द्र-कला के समान उज्ज्वल वर्णवाली हैं। यद्य-भूषणों जै आप शोभावसान हैं। आप कल्याण-मरी हैं, महल-मरी हैं। कुबुद्धि-रूपी कामना के सिए आप दावाना ल के समान हैं। सारा संसार आपके चरण-कमलों की वल्लना करता है। हे कमल! आप कमल के आसन पर बैठकर विज्ञ लोगों के मन को आलंकित करती हैं। लोगों के अङ्गान-समूह को भस्म कर दें। आप विष्णु की यत्नी हैं, आप ही संसार की सार हैं ॥१॥

'ऐं ऐं ऐं' उपापका प्रिय मन्त्र है। आप बहाके तुल्य-कमल की शोभा हैं। आप कभी रूप में, तो कभी अख्लप में प्रकाश पाती हैं। उपाप निजुर्ण होकर भी समस्त गुण-मरी हैं। आप निर्विकारा हैं। आप तत् स्थूल हैं और न सूक्ष्म। उपापका विषय अर्थात् तत्त्व जानने में कोई समर्थ नहीं है। आप विश्व-रूपिणी होती हुई भी विश्व के प्रथा में विद्यमान रहती हैं। उपाप निष्कला और नित्य-शुद्धा हैं। समस्त श्रेष्ठ देवता आपकी वन्दना करते हैं ॥२॥

'ही हो हो' मन्त्र के जय से आप प्रसङ्ग होती हैं। आपके समस्तक पर बर्फ के समान उज्ज्वल मुकुट है। आपने हाथ में चीणा लिए। आप उसमें मञ्ज हैं। हे माँ! आप मेरी जड़ता को सर्वथा भस्म कर दें। उपापको प्रणाम। आप मुझे श्रेष्ठ शुद्धि प्रदात करें। उपाप मुर्ति-दर्शिनी हैं। आप ही सोक का मार्ज बताती हैं। उपापका प्रभाव जानने का मर्ज बड़ा कठिन है। हे उज्ज्वल हार-धारिणी शारवे! आप मुझे वर प्रदात करें ॥३॥

आप सभी प्रकार की शुद्धि-रूपिणी हैं। आप ही का नाम थारणा है। धृति, मति, स्तुति और नाम-कीर्तन द्वारा उपापका ही गुण-गाल किया जाता है। आप नित्यान हैं। आप सभी कल्याणों की कारण हैं। मुनि लोग उपापको राहा प्रणाम करते हैं। आप नवीन होकर भी पुरातन हैं। उपाप पुण्य-मरी हैं, आपसे ही पुण्य प्रवाहित होता है। विष्णु और शङ्कर उपापकी वन्दना करते हैं। आप नित्य गवित्रा हैं। आपका वर्ण उज्ज्वल है। आप मात्रा-रूपिणी हैं और आप ही अर्द्ध-मात्रा-स्वरूप हैं। आप संसार को तत्त्व-ज्ञान-दायिनी हैं। माधव को आप प्रीति दाना करतो हैं ॥४॥

हे माँ! आप 'ही हो ही हो' - मन्त्र - रूपरूपिणी हैं। आप समस्त पाप को सर्वथा भस्म कर दें। हे सौभाग्य - दति! उपापके मुख - मण्डल पर सबा मुरकान रहती हैं, अपाके मन में निरन्तर सन्तोष रहता है। आप हाथ में पुस्तक सिए उसमें तीज रहती हैं। मोह के ऊपर उपापका पूर्ण प्रभाव है। मेरे मोह-रूपी अन्धकार को आप दूर करें। आप 'जो'-रूपिणी हैं, 'जो'-रूपिणी हैं और 'शक्ति' रूपिणी पूजनीया भारती हैं। आप श्रेष्ठ कवियों की जिहा को सिद्धि प्रदान करती हैं। आप सिद्ध-विद्या हैं। मैं आपकी स्तुति करता हूं। मेरी जिहा में निवास करें, कभी उसका त्याग न करें ॥५॥

हे देवि! मेरी शुद्धि कभी विपरित मार्ज पर न जाए, मेरा मन कभी पाप के प्रति आकृष्ट न हो। मुझे कभी बुँध न हो। विपत्ति काल में भी मुझे व्याकुलता न हो। शास्त्र में, तर्क - वित्तके में और काल्य-रचना में मेरी शुद्धि उपारे रहे, कभी वह कुण्ठित न हो ॥६॥

जो व्यक्ति प्रति-दिन भक्ति - पूर्वक वन्दना करता हुआ इन कुछ उत्तम लोकों से प्राप्तः - काल सरस्यती की स्तुति करता है, उसका पाप-रूपी कीचड़ धूल जाता है। वह वाणी-विवर्ध हो जाता है और बहुस्पति भी उसके शुद्धि - वेभव की प्रशंसा करते हैं। वह अपनी अभीष्ट कामना को प्राप्त करता है और याज-देवी पुत्र के समान उसकी रक्षा करती है। विश्व में उसके सौभाग्य का विस्तार होता है और उसकी कवित्य-शक्ति में जो भी विष्व होते हैं, वे दूर हो जाते हैं ॥७॥

जो ब्रह्मवर्य-पूर्वक शाकाहारी रहते हुए 'ब्रह्मोदर्शी' के दिन ब्रत करता है और मौज रहकर सरस्यती-स्त्रय पाठ करता है, वह अपने अभीष्ट को प्राप्त करता है ॥८॥

दोनों पक्षों को ब्रह्मवर्य के दिन जो उज्ज्वल वस्त्र एवं आभूषण - धारिणी सरस्यती का ध्वन कर त्यजातार इद्योल वाल इस स्त्री का पाठ करता है, वह इस लोक में अभीष्ट फल को प्राप्त करता है, इसमें सन्देह नहीं ॥९-१०॥

स्वर्य ब्रह्मा ने इस कल्याणकारी सरस्यती - रत्न को बताया है। प्रयत्न - पूर्वक नित्य इसका पाठ करे, तो असरत्य को प्राप्ति होती है ॥११॥

निः शुल्क उपहार

कक्षेक्षक यंत्र

सुरक्षा की भावना किसी भी व्यक्ति की अतिरिक्त आत्मविश्वास प्रदान कर देती है। यह आत्मविश्वास उसे जीवन के अनेक आयामों को स्पर्श करने में सहायक सिद्ध होता है। परन्तु जब वही व्यक्ति असुरक्षा की भावना के वशीभूत होता है तो वह स्वतंत्र निर्णय लेने में भी घबराता है। ऐसे में एक ही उपाय शेष रहता है जब वह किसी न किसी प्रकार से स्वयं को सुरक्षित अनुभव करें।

यह आपके हृदय में पूर्ण सुरक्षा का भाव प्रदान करने में समर्थ होगा, जो न केवल आपको केवल आपकी वरन् आपके पूरे परिवार के लिए अनुकूल सिद्ध होगा। इसे तीन माह तक अपने पूजा स्थान में स्थापित कर नित्य पूजन करें तीन साह के बाद इसे नदी में विसर्जित कर दें।

जीवन का सर्वश्रेष्ठ दान - 'ज्ञातदान'

ज्ञान दान को जीवन का सर्वश्रेष्ठ दान बताया गया है। २० पूर्व प्रकाशित पत्रिकाएं प्राप्त कर मंदिरों में, अस्पतालों में, समारोहों में, मंगल कार्यों में, बाह्यणों को, धार्मिक परिवारों को दान कर सकते हैं और इस प्रकार उनके जीवन को भी इस शेष ज्ञान के प्रकाश से आलोकित कर सकते हैं, जो अभी तक इससे बंधित हैं। इस क्रिया के माध्यम से अनेक मनुष्यों को माध्यनात्मक ज्ञान की शीतलता प्राप्त होगी और उनका जीवन एक शेष पथ पर आग्यसर हो सकेगा।

आप क्या करें?

आप छेत्र एक पट्ट (चंल) पोस्टकार्ड (क्रमांक ३) भेज दें, कि 'मैं अपने एक परिचित को पत्रिका का वर्षिक सदस्य बनाना चाहता हूँ एवं २० पूर्व पत्रिकाएं मंगाना चाहता हूँ। आप निःशुल्क नंत्र सिद्ध प्राण प्रतिष्ठित रक्षेश्वर यंत्र' ३५०/- (२० पूर्व प्रकाशित पत्रिकाओं का शुल्क ३००/- + डाक व्यय ५०/-) की वी. पी. पी. से भिजवा दें, वी. पी. पी. आप पर मोस्टरमैन को धन गाइ देकर छुड़ा लूंगा। वी. पी. पी. छूटने के बाद मुझे १० पत्रिकाएं रिस्टर्ड डाक फ्राय भेज दें एवं मेरे मित्र को एक वर्ष तक नविका भेजते रहें। आपका पत्र आपे पर हम ३००/- + डाक व्यय ५०/- = ३५०/- की वी. पी. पी. से 'मंत्र सिद्ध प्राण प्रतिष्ठित 'रक्षेश्वर यंत्र' भिजवा देंगे, जिससे कि आपको यह दुर्लभ उपहार नुरक्षित रूप से प्राप्त हो सके। आपको बीस पत्रिका भेजकर आपके मित्र को सदस्य बना दिया जायेगा।'

सम्पर्क -

अपना पत्र जोधपुर के पते पर भेजें।

मंत्र-तंत्र-यंत्र विज्ञान, डा. श्रीमाली मार्ग, हाईकोर्ट कॉलोनी, जोधपुर - 342001, (राजस्थान)

फोन - 0291 - 2432209, 2433623 टेलीफ़ोन - 0291 - 2432010

गुरुद्वारा प्रिल्लो

जिस भूमि पर सैकड़ों प्रयोग और असंख्य दीक्षाएं
सम्पन्न हो चुकी हैं, उस सिद्ध वैतन्य दिव्य भूमि

पर ये दिव्य साधनात्मक प्रयोग

साधन साधनों एवं विषयों के लिए यह योजना प्रारंभ हुई है। इसके अन्तर्गत विशेष विक्रमी पर दिल्ली 'सिद्ध आग्रा में पूज्य गुरुद्वारे' के विरेखन में वे साधनाएं कृत विधि-विधान के नाम सम्पन्न कराए जाना है, जो कि उस दिन शाम ६ बजे ८ बजे के बीच सम्पन्न होती है यदि अद्वा व विश्वास हों, तो उसी दिन से जाधनाओं में सिद्ध का अनुभव भी होने लगता है।

मुद्रवार 29-1-2003

महापोद्दशी प्रयोग

नौग्राह्य के द्वारा होते हैं उनके जो अपने गुरु के समस्त उपरिक्षेत्र होने का अवलम्बन प्राप्त कर लेते हैं और विशेष होते हैं वे विषय जो गुरुद्वारे से महाविद्या साधनाएं प्राप्त कर सके। घनु राशि का घन्दगा नथा बुध और शुक्र का भी उसी राशि में स्थित होना एक विशेष योग बनाता है और व्यरुत्वाणि विशेष साधन में भगवनी महानाड़ी के ही सर्वोच्च स्थमहाशैष्णी को साधना प्रसं छोड़ने के कारण निष्ठाय ही इतने संयोग एक साथ कम ही बटिन होते हैं। विलन्तर धन प्राप्ति अवश्य पूर्ण कायाकल्प या विश्व सम्पोद्दान ग्रन्थों की ग्राहण ये तो कुछ एक यदि के हवा साधन के पूर्ण स्थमें तो महापोद्दशी का साधना उस सम्पन्न बनता, भगवान् श्रीकृष्ण की भासि जोश कला युक्त होता है और सम्पूर्ण होगा इस विवर के प्रयोग में।

मुद्रवार 30-1-2003 नाभिवशना अप्सरा प्रत्यक्षीकरण प्रयोग

किंवद्ध प्रकार अन्य साधनाएं महत्वपूर्ण हैं, जिसे प्रकार साधक के जीवन में योन्तर्याम साधनाओं का भी विशेष महत्व है, वयोंकि किंवद्ध मनुष्य में सर नहीं है, प्रेम नहीं है वह किसी अन्य साधन में भी चुन नहीं हो सकता है। किंतु कौतने कठा भी है - 'मनुष्य नहीं तो कृष्ण है, वहसी विलासी रसधार नहीं'। अप्सरा साधना जड़ों देवताओं के लिए उचित मानी गई है, वही मनुष्य के लिये भी जलव्यत उन्नकूल माना गई है। उन्नद्वारार की १०८ अप्सराओं में नाभिवशना उपर्युक्त आप में ही विश्वीकृत, तरुणाई और मायकलन का ग्रावार अवलम्बन है। नृणाकला, संगीत एवं मधुर वर्ता में निपुण में वह अप्सरा अपने साधक को जीवन में इह प्रकार के भोज ग्रहण करती है, साधक के जीवन में धन की प्राप्ति इस साधन से नहीं हो दी जाती है। अपनी देवार्थि, रूप, द्वाय-भाव, इर्ष्याक्षोदय की शैली, सूर्खित प्रियता कुण्डर शीतों से नाभिवशना अपने साधक के वरबम ही पूर्ण कर देती है। नाभिवशना की साधना मूलतः शिव अज्ञा मित्र स्थपति में वर्षाकृति करने पर ही शोध सफल होती है।

मुद्रवार 31-1-2003 कर्तवीर्यानुन साधना

दक्षिण यात्रन में भगवान् शिव के पूर्व कार्तिकेय का प्रभाव पूर्ण पर वृद्धिग्राहक होता है। शिव के परम भक्त कार्तवीर्यानुन की साधना नभी निष्पत्त नहीं जाती। जीवन में उमंग, उत्पाद, तरण और शरीर की चाल ढाल व्यवहार में श्रेष्ठता प्राप्त करने की अपनी इच्छा है अथवा अपनी जापी से यदि किसी की भी प्रभावित करने की इच्छा है तो यह साधना अनुकूल है। यदि आप किसी उज्जात आशोका से साधा ही नहीं मन उत्तेजित है, और अनिष्ट से ग्रस्त है। इसके विवरण के लिये कार्तवीर्यानुन प्रयोग शुक्रवार इस विशेष योग में गुरु सानिद्धय में ३१.१.२००३ की सम्पन्न करना निष्ठा ही गोप्याद्यप्रद है। अपने परिवार के लिये अपने नन के लिये भी इस अवसर पर प्रयोग कर कार्तवीर्यानुन यंत्र भेट में चेकर उसे कृतार्थ किया जा सकता है।

इन तीनों विद्याओं पर साधना में भाग लेने वाले साधकों के लिए निम्न नियम मान्य होंगे

१. आप अपने किन्हीं दो विद्यों अथवा स्वत्रों के ('जो परिका के सदस्य नहीं हैं') में तब-यदि विज्ञान परिका का वार्षिक भवस्य बनाकर विल्लों गुरुद्वारा में स्वपत्र होने वाले किसी एक प्रयोग में भाग ले सकते हैं। परिका की सदस्यता का एक वर्षीय शूलक रुपये 240/- है, परन्तु उपरोक्त मात्रा रुपये 460/- हो जाती करना है। प्रयोग ये सम्बन्धित विशेष गत्र चित्र) प्राण प्रतिष्ठित सामग्री (गत्र गुटिका, आदि) आपका निःशुल्क प्रयोग की जाएगी।

२. यदि आप परिका भवस्य नहीं हैं, तो आप अथवा उपरोक्त मात्रा रुपये 460/- हो जाती करना है। प्रयोग ये सम्बन्धित विशेष गत्र चित्र) प्राण प्रतिष्ठित सामग्री (गत्र गुटिका, आदि) आपका निःशुल्क प्रयोग की जाएगी।

३. परिका सदस्य बनाकर आप किसी एक परिवार को जाए परम्परा की इस पावन साधनात्मक जान धारा से जाड़कर एक मुनीत एवं प्रवद्यारी कार्य करते हैं। यदि आपके प्रयोग से एक परिवार में अथवा कुछ प्राणियों में इवरीय विज्ञान, साधनात्मक छिट्ठन् आ पाता है, तो उह आपके जावन की सदस्यता का ली प्रतीक है। उपरोक्त प्रयोग ये निःशुल्क है और युक्त वृपा द्वारा ही वरदान स्वत्रय गाधक का प्राप्त होते हैं। प्रयोगों की न्यौडावर राशि की अध्य के त्रितीय में जहाँ तोल सकता है।

गुरुधाम में दीक्षा व साधना का महत्व

शास्त्रों में वर्णन आता है, कि मंत्रिक ने मने नप विद्या वाले तो अपि उत्तम होता है, उससे भी अधिक प्रमुख नहीं, और उपरोक्त मी अधिक प्रयोग में करें, तो और प्रयोग में ही, यदि विमात्य में विद्या वाले, तो और भी नई गुण देख लेता है। इस सबसे भी शेष होता है यांत्रि साधक गुरु चरणों में बैठकर साधना सम्पत्ति करें और तदे प्रस्तुत अपने आप्रम अर्जीत गुरुद्वारा में ही यह साधन प्राप्त करें, तो उपरोक्त ब्रह्म गौप्यात्मक और कुछ होता ही नहीं।

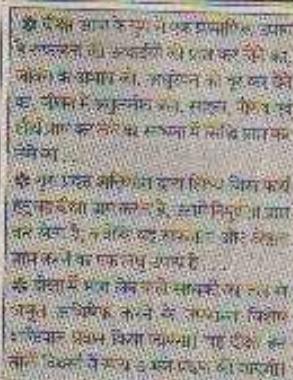
कुछ ऐसे स्थान होते हैं, जहाँ दिव्य विज्ञानी जा जाए मृत्यु नहीं है। जो सद्गुरु होते हैं, वे गुरुम् रूप से अथवा स्वत्रोर प्राप्तिवान अपने धम में अवस्थित होते हुए भल्लेक गतिविधि का नहीं। उन्होंने जी जहाँ है। उन्होंने यदि ये गुरुद्वारा में जहाँ वर वृक्ष से साधना, मन एवं दीक्षा प्राप्त करता है और युक्त चरणों का स्वर्ण भर उपर्युक्त नामनामी प्राप्ति करता है, तो उसके प्रयोग का से देवाण भी हीर्ष जहाँ है।

तीर्थ स्थान पुण्यादि हैं परं विद्या ग्रन्थों द्वारा दीक्षा के लिए सभी दीक्षाएँ से भी प्राप्त नीर्य गुरुधाम होता है। जिस धारा ने गुरुद्वारे के निवास स्थान रहा है, ऐसे विद्या स्थान पर गुरु चरणों में उपस्थित होकर गुरु दूष से मन प्राप्त करने की छला ही साधन में तब उपर्युक्त जाग्रत होते हैं। इसी तथ्य के ध्यान में रखते हुए साधकों के लामार्थ गुरुद्वारा जी अस्तित्व के बावजूद यी विल्लों गुरुधाम में ही तीन दीक्षाएँ में तीन विद्याओं के साधनात्मक प्रयोगों की श्रेष्ठता निर्धारित जी गई है।

योजना के बाबत उन दीक्षाओं के लिये - 29-30-31 जनकारी

किन्हीं पांच व्यक्तियों को वार्षिक सदस्य बनाकर उनका सदस्यता शूलक $240 \times 5 = \text{Rs. } 1200/-$ जमाकर के या उपरोक्त राशि का वैक दाफ्तर में भव तब-यदि विज्ञान के नाम से बनाकर सदस्यों के दाक परी किसिवाकर उपडार स्वरूप वे दीक्षा आप निःशुल्क प्राप्त कर सकते हैं।

यदि दीक्षा काटो जाए प्राप्त करता चाहे तो नियोगित विधियों के पूर्वी अपना काटो एवं पांच सदस्यों के सदस्यता शूलक की राशि का इकट्ठन में भव तंत्र योग्य विज्ञान के नाम से बनाकर विज्ञान कार्यालय के पाते पर बैठे अथवा पोटो पांच सदस्यों के नाम पाते एवं द्वारा दूषे उपरोक्त विधि से पूर्व ही प्राप्त से जाती राशि पर विलम्ब से विलम्ब पर दीक्षा याप्ति न हो सकती। यदि राशि मनीआदीर से भेजना चाहे तो फोटो



शक्तिपात्र युक्त दीक्षाएं

साधना सिद्धि दीक्षा

में, तब और यत्रों के इस विशाल समूह में अवगाहन करने का प्रयोगन सिद्ध हो होता है। यह सिद्ध किसी की शीघ्र नथा किसी को बहुत लंबिक प्रयास के बाद मिल पाती है, और निम्नों बहुत प्रयास के बाद भी नहीं मिलती वे साधनाओं को ध्वन नाल ही मान लेते हैं। परन्तु यह सत्य नहीं है, यदि किसी को मनिल नहीं मिलता तो इसका यह अथ नहीं है, कि मनिल है ही नहीं।

उपर अवश्य सत्य है, कि मनिल तक का रासना लम्बा हो सकता है और वहाँ तक पहुँचते पहुँचते व्यक्तिस निराश हो जाए, अथवा यह भी हो सकता है, कि उसे सही रासने का जान नहीं हो या फिर जो रासना मनिल तक नाला हो, वह किसी कारण छेद पड़ा हो। मनुष्य के मस्तिष्क नन्तुओं में स्वयं के ही विकारों के फलत, कई ऐसी गोचर्यां पढ़ जाती हैं, जो साधनाओं में सिद्ध मानों को बावस्तु कर देती हैं। इस दीक्षा द्वारा ऐसी गोचर्यां के खुलने की किया प्रारंभ हो जाती है और साधक की शीघ्र हो साधनाओं में सफलता अनुभूत होने लगती है।

Any moonless night

Jain Tantra Sadhana Jobless?

Tantra is not any ritual or process to be afraid of. Rather it is a system of trying Mantra Sadhanas in a proper way. And Tantra is not just popular and important in the Vedic system of Sadhanas. It is just as significant in Buddhism and Jainism.

If we study the Jain scriptures we shall find that the scholars have not just stressed on mental peace and purity of the soul but also on Tantra Sadhanas.

The Sadhana of Goddess Padmavati is basically a Jain Sadhana and it has been mentioned in several scriptures. Even the Vedic text *Mantra Maharnava* contains its description but it is most vividly explained in the Jain system of Sadhanas. In the night of Diwali every Jain Sadhak performs Sadhana of Goddess Padmavati. In fact it would not be wrong to state that the Jain society is so prosperous and wealthy because of the amazing effect of this very Sadhana.

The Jain Munis and scholars have said that Padmavati Sadhana is a wonderful Sadhana which every householder should try. And no matter to which sect, religion or caste one belongs one is equally eligible to gain from this Sadhana. The knowledge of Sadhanas is not limited to only one sect. Rather any person of any class or creed can benefit from it provided he does so with a pure heart and full devotion.

This Sadhana is primarily for gain of wealth. But presented here is a Padmavati Sadhana that

can be tried by the jobless in order to get a good job. Even those who wish for gains from the state side can try this Sadhana with amazing and quick results. In fact so powerful and unfailing is this ritual that no Sadhak who has ever tried it has ever failed to get the desired benefit.

In the night of Amavasya or a moonless night the Sadhak should have a bath and wear white clothes. Then he should sit on a white mat facing the East or the North. Before himself he should place a wooden seat covered with white cloth.

On it he should write the following Mantra with vermillion. On this inscription then he should place a *Padmavati Yantra* and offer rice grains, white flowers and vermillion on it. Then he should light a ghee lamp and thereafter with a *Sfatik rosary* (*rock crystal rosary*) he should chant 9 rounds of the following Mantra.

*Om Hreem Padme Raajyu Praapti Hreem
Kleem Kuru Kuru Namah*

The Sadhak should do this daily for twelve days at the same time starting from the night of Amavasya. In the morning of the thirteenth day he should go and drop the Yantra and rosary in a river or pond.

Within these twelve days or a month at the most he would get to hear some good news about some job or a chance to start some business of his own.

Sadhana Articles - 270/-

AWAKEN THE SIXTH SENSE!

This is an amazing ritual for activating every pore of the body so that these pores act like millions of eyes and ears through which one could receive even subtle messages and thus know about the thoughts of others, events occurring in far off places and even things that could happen in the future.

Different Sadhaks could have different experiences. Some might just get to view far off places that they have never seen or hear strange voices. Some might gain power of clairvoyance and others might gain power of clairaudience. Some might even start having indications of future events through subtle signs or dreams.

Although the experiences might differ but each Sadhak does get to gain something provided he tries the Sadhana with full devotion and concentration. During Sadhana period itself Sadhak starts becoming more conscious and aware and slowly his sixth sense becomes awakened.

This Sadhana should be started from a Thursday either in *Brahm Muhurat* (4 am to 6 am) or at night after 9 pm. It is best to try the Sadhana in isolation but in open air if possible. Otherwise try in an airy room. Have a bath and wear white clothes. For the Sadhana take a *Divya Cheitanya Gutika* and wear it in a red thread around the neck.

Take a blanket and fold it. Then sit on it in *Padmasan* or *Sukhasan* with the legs crossed. Then perform *Pranayam*. For this first close the right nostril and breathe in through the left nostril. Hold the breath in and then breathe out through the left nostril. Repeat five times. It should take one minute to complete one cycle

of inhalation and exhalation. Then close the left and breathe through the right five times. Lastly breathe in and out with both nostrils simultaneously again five times. The breathing should be deep and slow.

Then take the *Rom Koop Cheitanya Yantra* in the right hand and chant the Guru Mantra mentally for ten minutes. Then touch the Yantra to the eyes. Then still holding the Yantra in the right hand get up and stand on the toes with both hands stretched upwards and the eyes looking skywards. In this position chant the following Mantra for the next ten minutes.

*Om Kleem Kreem Ram Pratirom
Cheitanyam Kuru Jaagraya Jaagraya Kreem
Kleem Om Phat*

One does not need any rosary to count the Mantra chanting. After the Mantra chanting touch the Yantra to all parts of the body so that the divine energy in it can be transferred to each body pore. After this open the blanket and lie on it on the back and close the eyes concentrating on the third eye. In the beginning you might not see or experience anything. But with practice you shall be able to view various scenes of mountains, rivers and far off places. Slowly you shall be able to view events. Do this daily for 21 days. On the 22nd day drop the Yantra in a river or pond and keep wearing the Gutika.

This is a very secret Sadhana which should be tried with full faith and devotion in order to gain the maximum. The experiences become more intense if one continues practising with concentration on the third eye even later.

Sadhana Articles - 240+

WISH AWAY ALL YOU CAN!

Lord Shiva is creator of Tantra and through Tantra anything could be made possible provided one's intentions are pure and not directed towards harming anyone. One can get the knowledge of any Mantra or Yantra from a text but if there is some mistake in the procedure or Tantra then the benefits would not accrue or would accrue to a lesser degree. Hence it is best to get in the holy feet of the Guru and learn the right procedure from him. But for the householders it is not possible to observe rules very strictly. Hence a Sadguru has pity on them and devises or finds out for them very simple rituals which are as powerful and effective as Vedic Sadhanas.

Such a very easy and effective Sadhana is the *Vaanchhaa Kalplata Siddhi Sadhana* for fulfilment of all wishes. *Vaanchhaa* means wish and *Kalplata* means the divine wish tree *Kalp Vriksh* which fulfills all one's desires. According to Tantra texts - *Vaanchhaa Kalplata Sadhana* is a very rare practice from the world of Tantra in which there are no complex steps. Just by chanting its Mantra one's wishes are fulfilled. Trying the Sadhana once makes one wealthy, five times makes one ruler of the world and ten times makes one as powerful as Lord Shiva and Vishnu. And if one tries it hundred times one becomes respected world over.

Several texts speak of amazing power of this Mantra. One text states that if one chants this Mantra 108 times and goes to accomplish some task it surely gets complete. If one chants it 108×5 times then one can influence any officer or administrator to act in one's favour. If one places a garland of roses before oneself and chants the Mantra 108×5 times and then

sprinkles the petals all around the house then all evil powers are warded off.

One can start this Sadhana on any day such is its power. Early morning have a bath and wear clean clothes. Sit facing North. Cover a wooden seat with red cloth. On it place *Vaanchaa Kalplata Yantra*. Also place picture of the Guru. Light a ghee lamp. Then chant one round of Guru Mantra and pray to the Guru for success in the Sadhana. Then join both hands and chant thus.

Shreevidyaa Brahavidyaa Cha Vyaaptam Ye Sacharaacharam. Nirdwandwaa Nitya Santushtaa Nirmohaa Niroopaaadhikaa. Kaameshwarii Manobheeshi Kaameshwari Swaroopinnee. Namastenant Ropaayei Praseed Suprased Me

Then with a *Manokamma rosary* chant three rounds of the following Mantra.

Shreem Shreem Shreem Hreem Hreem Hreem Kleem Kleem Kleem Ayeim Ayeim Ayeim Souh Souh Souh Om Om Om Hreem Hreem Hreem Shreem Shreem Shreem Kam Kam Kam Aim Aim Aim Eem Eem Eem Lam Lam Lam Hreem Hreem Hreem Ham Ham Ham Sam Sam Sam Kam Kam Kam Ham Ham Ham Lam Lam Lam Hreem Hreem Hreem Sam Sam Sam Kam Kam Kam Lam Lam Lam Hreem Hreem Hreem Souh Souh Souh Ayeim Ayeim Ayeim Kleem Kleem Kleem Hreem Hreem Hreem Shreem Shreem Shreem Praseed Praseed Mam Mano Lepsitum Kuru Kuru

Do this daily for 16 days. This Mantra seems long but is very simple to chant. On 17th day drop Yantra in river or pond. If after this Sadhana one chants one round daily or on some special occasion for fulfilment of some wish then it sure is fulfilled.

Sadhana articles - 300/-

POWER OF LORD HANUMAN

No long procedures, no complex steps, no difficult Mantras – these are the features of Sabar Mantras which are in simple Hindi language. And yet they are so powerful and explosive that it seems unbelievable that such power could be packed in Mantras.

Sabar Sadhanas have been devised specially for household Sadhaks. And what more these Sadhanas cover every aspect of life. There are Sabar Sadhanas for riddance from poverty, problems, diseases, for success in business and job and many other.

The creator of Sabar Sadhanas is Lord Shiva and they were made most popular by the Nath Yogis specially by Guru Gorakhnath who saw the helplessness of the householders and their inability to perform tough Vedic rituals. Hence he presented them with very simple Sabar Sadhanas which truly are so uncomplex that one wonders if achieving the impossible was ever so simple.

One important aspect for which the Sabar Sadhanas prove as a panacea is problems of life. Problems could be in form of danger, fear, unfavourable circumstances or enemies. Sometimes these problems are so awkward and fearsome that one does not know what to do. The mind simply fails to find solutions to these problems. And many times even friends and family members start to behave worse than enemies. Then there seems to remain no way open and on all sides there appears to be darkness.

In such situations the following amazing Sabar Sadhana proves very effective. Through the power of its Mantra one can banish all problems, tensions, dangers and enmities forever.

This Sadhana should be tried on a **Tuesday** early in the morning between 5 am and 6am. Have a bath and wear fresh red clothes. Cover a wooden seat with a red cloth. Then in a copper plate place a *Bajrang Gutika*, which is energized and consecrated by special Bajrang (Lord Hanuman) Mantras. The Gutika must be placed on rice grains and Tulsi leaves in the copper plate.

Sit on a red worship mat facing North. Join both palms and pray to the Guru. Then light a mustard oil lamp and offer jaggery to Lord Hanuman. Then chant the following Mantra for one hour.

Asaran Asaran Baabaa Hanumaan Veer Hanumaan Veer Hanumaan, Aan Karo Yah Kaaraj Moro, Aan Haro Sab Peeraa Moro, Aan Haro Tum Indra Kaa Kotthaa, Aan Dharo Tum Braj Kaa Sotaa, Duhai Gorakhnaath Ki, Duhai Gorakhnaath Ki.

Next day give Bajrang Gutika along with some Tulsi leaves and gifts and money to some poor or leave in some unrequested place. Distribute the jaggery among family members. Give the rice grains to birds. Soon all problems and enmities shall disappear from your life & it shall become peaceful and full of happiness and joy.

Sadhana articles - 240/-

7-8 दिसम्बर-2002

शिविर स्थल : रेलवे इस्टिंश्युट, साउथ इस्टन रेलवे बी.एन.आर. गाडेनरिच कोलकाता-४३ (निकट भूतधात थाटा), खिदिरपुर

श्री भगतती महाकाली सिद्धि साधना शिविर

आयोजक : सिद्धाश्रम साधक परिवार
कोलकाता एवं बिहार



15 दिसम्बर-2002

शिविर स्थल : कमेटी टाउन हॉल-ऊला, हिमाचल

श्री छिन्नमस्ता साधना शिविर

आयोजक : श्री अमरजीत सिंह-01975-23022 ○ श्री सुनील शर्मा-01975-25377 ○ श्री रामेश बड़वाल-01975-27389 ○ श्री प्रदीप राणा-01975-25939 ○ श्री केशवरनाथ शर्मा, ○ श्री तीनलाल कलिया ○ श्री दिलबाज ठाकुर ○ श्री रमेश शर्मा ○ श्री केढी शर्मा-01905-35655 ○ श्री ओम प्रकाश शर्मा, नंगरोटा, सूर्यो-01893-65174 ○ श्री अर.एस. वर्धमार, अर्पणाला-01892-46003 ○ श्री शेळेन्ड, बिलासपुर-01978-44500 ○ श्री रामचंद्र रत्न, पुमारवी-01975-55283 ○ श्री सोहन लाल ○ श्री आर.ज्ञ. मिन्हास, पालमपुर-01894-38356

1 जनवरी-2003

निखिल शाक तत्त्वाभिषेक

महादीक्षा

शिविर स्थल : आराज्याम, गुजरात अपाटमेन्ट के पीछे गोन ४/३ गीतापुर, नई दिल्ली-३४ फोन : 7182248, 7029044-45

19 जनवरी-2003

भूतनेश्वरी साधना शिविर

शिविर स्थल : चैतन्य मानामृह धरना बगर रस्टन कलियानी रोड चिंचवड गंव, पुणे (महाराष्ट्र)

आयोजक - सिद्धाश्रम साधक परिवार
दिव्यरी चिंचवड शहर, पुणे (महाराष्ट्र)।
श्री वरंत पाठिल-020-4017401, 09823024516 ○ श्री सुरवंद कुल्ले-020-5534347 ○ श्री हरिचन्द्र कठम-मेठा मातारा-02378-85511 ○ श्री अशोक भाऊजन-मिर्जा-020-7640919 ○ श्री उत्तावत् कविम्कर-निखिल-020-7492031 ○ श्री बालसाहेब-चिखनी ○ श्री लक्ष्मण वालसल्लद-गुंवड (आईआरएस) 022-4160213 ○ श्री जनेश्वर झारपुड श्री रामु साठे ○ श्री दी शिल्पा शोके ○ श्री बाला खड्डेब नेगाल-चिखनी 09823183183775 ○ श्री विजय सत्यां श्री अक्तन पाठिल ○ श्री शिवाजी शिंगटे मेठा मातारा-02378-85212 ○ श्री अदिल खट्टवार मेठा मातारा-02378-85208 ○ श्री विलस पवार मेठा मातारा ○ श्री भागी यश जाधव-020-7479715 ○ श्री विजय नाघव-020-7456769 ○ विजय चोडके (अहमदनगर)-0241-429546 ○ श्री एकनाथ कवम (पोंचगणी)

25-26 जनवरी-2003

सर्वसिद्धि साधना शिविर

शिविर स्थल : बन्दन इस्टील्हाट (सेन्ट्रल रेलवे) माटुगा वर्कशॉप के पास, टी. एच. कट्टरिया मार्ग, माटुगा रोड (दूरी), एुबई-४०००५९

आयोजक : श्री गोपा सिंह-24309678, 24313992 ○ श्री चंद्र टवरमलानी-24929090 ○ श्री अशोक भाई-24313992 ○ श्री हरिचंकर पाटे-28856080 ○ श्री पवनाय राय-28886094 ○ श्री आल्पाप्रसाद-95250-2401999 ○ श्री किर्ती भाई-22094098 ○ श्री कृष्ण गोदा-28412860 ○ श्री तुलसी महो-22828072 ○ श्री बचनी-23413280 ○ श्री प्रह्लाद साबले-09820602313 ○ श्री जग्जी-24121325 ○ श्री संजय सिंह-95251-2346595 ○ श्री उमरिंद मिश्रा-23856080

रजिस्ट्रेशन नं. 85305/81
With Registrar Newspapers of India
Posting Date 23-24 every Month

A.H.W.

Postal No. RJ/WR/19/65/2002
License to Post without Pre Payment
License No. RJ/WR/PP94/2002



१०६ : अष्टमी १०२४ के लिए के लिए विषयालिक तिथि तिथि

पूज्य गुरुदर तिन निश्चिह दिवस पर सहकार विद्या
व दीक्षा प्रदान करें। इस्तेव संस्कृत विद्यालय दिवस
पर उत्तम का दीक्षा प्राप्त कर सकते हैं।
लेदारिज दिवस पर वह दीक्षारा प्रदान ११ बजे से १२ बजे के
मध्य तक ज्ञान ५ दर्ज में ७:३० बजे के मध्य लगभग वीं जारी

दिनांक
१०-११-१२ जनवरी
स्थान
मुमुक्षुम (जोधपुर)

दिनांक
२९-३०-३१ जनवरी
स्थान
सिरकाश्रम (दिल्ली)

प्रक - 12

तर्व - 29

मध्य-उत्तर विज्ञान का श्रीमान्मान आड्कोट कल्नोली, जोधपुर-342001 राज. फोन - 0291-2432209, 2433823, फॉक्स फोन - 0291-2492910
मध्य-उत्तर विज्ञान का श्रीमान्मान आड्कोट कल्नोली, नई घरलो-34, रोड, ०११-७१८२२४८, राजा फॉक्स-११-७४९६७९०



COLLECTION OF VARIOUS

- > HINDUISM SCRIPTURES
- > HINDU COMICS
- > AYURVEDA
- > MAGZINES

FIND ALL AT [HTTPS://DSC.GG/DHARMA](https://dsc.gg/dharma)

Made with
By

Avinash/Shashi

Icreator of
hinduism
server!

